आज का मौसम
25.0° अधिकतम तापमान
12.0° न्यूनतम तापमान
सूर्योदय 06.35
सूर्यास्त 05.19

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

बरेली

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण
लखनऊ बरेली कानपुर
मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष द्वादशी 04:47 उपरांत त्रयोदशी विक्रम संवत 2082

रविवार, 16 नवंबर 2025, वर्ष 6, अंक 357, पृष्ठ 14+4 मूल्य 6 रुपये

- कई सीट पर जीत-हार का अंतर 500 से भी कम, संदेश में 27 वोट का अंतर - 12

- अमेरिकी शुल्क के बाद जेम्स और आभूषणों का निर्यात 31 प्रतिशत घटा - 12

- पारदर्शी हो सुरक्षा परिषद के सहायक संगठन का काम - 13

- ईडन गार्डन्स में विकेटों के पतझड़ के बीच भारत का पलड़ा भारी - 14

उमर के करीबी 2 डॉक्टर समेत 3 हिरासत में लिए, अल फलाह विवि पर मामला दर्ज

दिल्ली विस्फोट

नई दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली पुलिस ने लाल किले के पास हुए विस्फोट के सिलसिले में हरियाणा के अल फलाह विश्वविद्यालय के दो डॉक्टरों समेत तीन लोगों को हिरासत में लिया है, जबकि यूजीसी और राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा ध्यान दिलाई गई अनियमितताओं को लेकर संस्थान के खिलाफ दो अलग-अलग प्राथमिकियां दर्ज की गई हैं। अपराध शाखा ने धोखाधड़ी और जालसाजी के आरोपों में दो प्राथमिकियां दर्ज की हैं।

पुलिस टीम ने शनिवार को विश्वविद्यालय के ओखला कार्यालय का दौरा किया और जांच के दायरे में आए लोगों से जुड़ी जानकारी हासिल की। पुलिस ने अल-फलाह विश्वविद्यालय के दो डॉक्टरों - मोहम्मद और मुस्तकीम - को भी हिरासत में लिया, जो सोमवार को लाल किले के पास हुए विस्फोट से संबद्ध हुंडई आई20 कार के चालक डॉ. उमर नबी को जानते थे। विशेष शाखा और एनआईए द्वारा शुक्रवार देर रात धौज, नूंह और आसपास के इलाकों में की गई समन्वित छापेमारी के दौरान इन संदिग्धों को हिरासत में लिया गया। सूत्रों ने बताया कि मोहम्मद और मुस्तकीम डॉ. मुजम्मिल गनई के संपर्क में थे, जिन्हें 'सफेदपोश आतंकी मॉड्यूल' की जांच के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया है। दोनों उमर के करीबी सहयोगी भी थे। विस्फोट वाले दिन एक डॉक्टर एम्स में इंटरव्यू देने के लिए दिल्ली में था। दिनेश उर्फ डब्बू नाम के एक अन्य व्यक्ति को भी बिना लाइसेंस के उर्वरक बेचने के आरोप में हिरासत में लिया गया है। आतंकी मॉड्यूल के सदस्यों ने विस्फोटक पदार्थ खरीदने के लिए 26 लाख रुपये इकट्ठा किए थे और उसमें से तीन लाख रुपये एनपीके उर्वरक खरीदने में खर्च किए, जिसका इस्तेमाल बम बनाने में होता है।

दिल्ली में लाल किले के पास छानबीन करती जांच एजेंसियां।

- दोनों डॉक्टर मोहम्मद और मुस्तकीम डॉ. मुजम्मिल गनई व उमर के संपर्क में थे
- आतंकियों को खाद बेचने वाले हरियाणा के नूंह का दिनेश उर्फ डब्बू गिरफ्तार

कानपुर के डॉ. आरिफ ने शाहीन-मुजम्मिल को 82 कॉल किए

कानपुर। जांच एजेंसियों ने जैसे ही आरिफ के डिजिटल उपकरणों को खंगाला, एक सप्ताह के भीतर हुई इनकी बातचीत का पूरा पैटर्न सामने आया। इस अवधि में, 39 वाइस कॉल, 43 व्हाट्सएप कॉल, 200 से अधिक संदेश, 23 डिलीटेड मैसेज कुल मिलाकर लगभग 82 कॉल और भारी मात्रा में चैटिंग के रिकॉर्ड मिले हैं। यह संख्या सामान्य संपर्क से काफी अलग है, जिस वजह से सुरक्षा एजेंसियों के शक ने और जोर पकड़ लिया है। फोरेंसिक विशेषज्ञों को डिलीटेड संदेश सफलतापूर्वक मिल गए हैं, जिनकी डिकोडिंग जारी है। सुरक्षा अधिकारियों का कहना है कि धमाके की डमी तैयार होने के बाद इनकी डिजिटल गतिविधियां असामान्य रूप से बढ़ गई थीं। यह वही समय था जब दिल्ली में विस्फोट की साजिश को अंतिम रूप दिया जा रहा था।

मस्जिद से रिकॉर्ड मांगा

जांचकर्ताओं ने आसफ अली रोड पर रामलीला मैदान के पास की एक मस्जिद से भी आगंतुकों के रिकॉर्ड मांगे हैं, जहां विस्फोट से कुछ घंटे पहले उमर सीसीटीवी फुटेज में देखा गया था। पुलिस सूत्रों ने बताया कि विस्फोट से पहले तीन घंटे तक सुनहरी मस्जिद पार्किंग क्षेत्र में रहने वाले प्रत्येक वाहन का एक विस्तृत रिकॉर्ड तैयार किया गया है। इस सूची में वाहन संख्या, समय और स्वामित्व का विवरण शामिल है।

अन्य कारों का पता लगाया

नई दिल्ली। लाल किले के निकट हुए विस्फोट से पहले की घटनाओं के सटीक क्रम का पता लगाने का प्रयास करते हुए जांचकर्ताओं ने उस पार्किंग क्षेत्र में प्रवेश करने वाले प्रत्येक वाहन की एक विस्तृत सूची तैयार की है, जहां विस्फोट में शामिल कार तीन घंटे तक खड़ी रही थी। पुलिस ने सुनहरी मस्जिद पार्किंग क्षेत्र में प्रवेश करने वाले प्रत्येक वाहन का विस्तृत विवरण तैयार किया है, जहां विस्फोट हुआ था।

जनता लगातार नकार रही है वादों की राजनीति : योगी

कहा- डबल इंजन सरकार जनजातीय सुरक्षा, सम्मान और सशक्तिकरण को समर्पित

- मुख्यमंत्री ने सोनभद्र में 548 करोड़ की 432 परियोजनाओं का लोकार्पण-शिलान्यास किया

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : सोनभद्र में जनजातीय गौरव दिवस के मंच से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बिहार विधानसभा चुनाव परिणामों के बहाने विपक्ष पर तीखा प्रहार किया। उन्होंने कहा कि जिन राजनीतिक दलों ने वर्षों तक सिर्फ वादे किए, जनता अब उन्हें एक-एक करके नकार रही है। देश की जनता ने स्पष्ट कर दिया है कि उसे स्थिर, जवाबदेह और परिणाम देने वाला शासन चाहिए, और यह भरोसा डबल इंजन सरकारों ने मजबूत किया है। वे शनिवार को सोनभद्र के चोपन में 548 करोड़ रुपये की 432 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास के बाद भारी जनसमूह को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि डबल इंजन सरकार की नीतियां जनजातीय समाज के दशकों पुराने भय और उपेक्षा को अवसर और अधिकार में बदल रही हैं। उन्होंने कहा कि बिहार की जनता ने लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेकर यह संदेश दिया है कि विकास ही प्राथमिकता है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश प्रगति के नए आयाम छू रहा है। उन्होंने कहा कि एनडीए को मिली प्रचंड जीत जनता के उस विश्वास की पुष्टि है, जो राष्ट्रहित और सुशासन की नीतियों के साथ खड़ा है। बिहार का जनादेश यह बताता है कि नई पीढ़ी अवसरों और प्रगति की राजनीति को आगे बढ़ा रही है। जाति, परिवारवाद और वादों की राजनीति अब अतीत बनती जा रही है।

आबा बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर कार्यक्रमों का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 'जनजातीय गौरव दिवस' पर जनजातीय समाज की सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन को सर्वोच्च प्राथमिकता बताया। कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में डबल इंजन सरकार जनजातीय समुदाय को मुख्यधारा के विकास का अग्रणी भागीदार बना रही है। उन्होंने विश्वास जताया कि बिरसा मुंडा का 'अबुआ देश–अबुआ राज' का संदेश आज के भारत में 'राष्ट्र प्रथम' की भावना के रूप में सशक्त रूप से विद्यमान है।

कार्यक्रम के दौरान समाज कल्याण राज्य मंत्री संजीव गोंड ने मुख्यमंत्री को जनजातीय समाज की पहचान 'तीर-धनुष', वाद्य यंत्र 'मांदर' और पारंपरिक टोपी भेंट की।

सोनभद्र में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का स्वागत करते जनजातीय समाज के लोग।

जनजातीय परिवारों को वनाधिकार पट्टे सौंपे

कार्यक्रम में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के वंशजों का सम्मान किया गया और 1,000 से अधिक जनजातीय परिवारों को वनाधिकार पट्टे सौंपे गए। इस अवसर पर 'धरती आबा बिरसा मुंडा' पुस्तक और सोनभद्र के पर्यटन पर आधारित पुस्तिका का विमोचन किया गया, जबकि 'मिशन शक्ति' के तहत महिला पुलिसकर्मियों को 25 स्कूटी भी प्रदान की गईं।

इस बार के रविवारीय संस्करण 'लोक दर्पण' में, वर्चुअल प्यार की चकाचौंध में उलझते किशोर व अन्य विषयों पर विशेष सामग्री दी जा रही है।

☞ www.amritvichar.com

श्रीनगर के थाने में विस्फोट में 9 की गई जान

श्रीनगर/नई दिल्ली, एजेंसी

- गृह मंत्रालय ने कहा- सैंपल की फॉरेंसिक जांच कराने की तैयारी के दौरान हुआ विस्फोट, 32 घायल

श्रीनगर के नौगाम पुलिस थाने में आकस्मिक विस्फोट होने से नौ लोगों की मौत हो गई और 32 अन्य लोग घायल हो गए हैं। वरिष्ठ अधिकारियों ने शनिवार को कहा कि यह आतंकवादी हमला नहीं था।

विस्फोट शुक्रवार रात 11 बजकर 20 मिनट के आसपास हुआ जब एक विशेष टीम एक 'सफेदपोश' आतंकवादी मॉड्यूल के संबंध में जारी जांच के सिलसिले में हरियाणा के फरीदाबाद से जब्त किए गए विस्फोटकों के एक बड़े और अस्थिर जखीरे से नमूने ले रही थी। जम्मू-कश्मीर डीजीपी नलिन प्रभात और गृह मंत्रालय के संयुक्त सचिव प्रशांत लोखंडे ने क्रमशः श्रीनगर और नई दिल्ली में मीडिया के समक्ष एक तरह के बयान में आतंकवादी हमले की अटकलों को खारिज किया और इस बात पर जोर दिया गया कि यह एक दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना थी। विस्फोट में एफएसएल टीम के तीन कर्मी, दो फोटोग्राफर, दो राजस्व अधिकारी (मजिस्ट्रेट टीम का हिस्सा), राज्य अन्वेषण अभिकरण (एसआईए) का एक अधिकारी और टीम से जुड़े एक दर्जी की मौत हो गई। कुल 32 लोग घायल हुए हैं - 27 पुलिसकर्मी, दो राजस्व अधिकारी और आस-पास के इलाकों के तीन नागरिक। उन्हें इलाज के लिए तुरंत स्थानीय अस्पतालों में ले जाया गया। प्रभात और लोखंडे दोनों ने स्पष्ट किया कि विस्फोट उस समय हुआ जब एफएसएल टीम फॉरेंसिक और रासायनिक जांच के लिए जब्त विस्फोटकों के एक बड़े जखीरे से नमूने लेने की निर्धारित प्रक्रिया में जुटी थीं।

खीरी में दो हादसों में 3 छात्राओं और 3 दोस्तों की मौत

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

- कैंटेनर ने स्कूटी सवार छात्राओं को रौंदा, कार ने बाइक सवार दोस्तों को मारी टक्कर
- 24 घंटे के भीतर हुए हादसे परिवारों में मचा कोहराम, एक अन्य हादसे में एक की गई जान

अमृत विचार: जिले में बीते 24 घंटे में हुए अलग-अलग हादसों में तीन छात्राओं और तीन दोस्तों समेत सात लोगों की मौत हो गई। हादसों में थाना भीरा क्षेत्र में कार की टक्कर से बाइक सवार तीन दोस्तों की कुचलकर मौत हो गई, जबकि गोला क्षेत्र में खुटार रोड पर गांव अहमदनगर के पास केन ग्रोवर्स नेहरू महाविद्यालय की स्कूटी सवार तीन छात्राओं को कंटेनर ने रौंद दिया, जिससे तीनों की मौके पर ही जान चली गई। उधर, थाना ईसानगर क्षेत्र में अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार चाचा की मौत हो गई, जबकि उसका भतीजा घायल हो गया।

पहला हादसा शुक्रवार रात करीब नौ बजे बिजुआ-भीरा स्टेट हाईवे पर गढ़ी फार्म के पास हुआ। तेज रफ्तार कार ने सामने से बाइक को इतनी जोरदार टक्कर मारी कि बाइक के परखच्चे उड़ गए और बाइक पर सवार इसी थाना क्षेत्र के गांव पड़रिया तुला निवासी रोहित गुप्ता (27), पहाड़ापुर निवासी हबीब उर्फ हसीब (32) और बिजुआ निवासी संदीप शुक्ला (26) की मौत हो गई। तीनों दोस्त थे और एक ही निजी बस पर काम करते थे। टक्कर के बाद कार अनियंत्रित होकर पास के खेत में जा घुसी। अंधेरे का फायदा उठाकर चालक और कार में सवार लोग भाग निकले। अंधेरा अधिक होने के कारण कुछ देर तक कोई मौके पर नहीं पहुंच सका। बाद में गुजरते लोगों ने सड़क पर तीनों को पड़ा देखा तो पुलिस को सूचना दी। भीरा पुलिस ने तीनों को अस्पताल भेजा, जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। उधर, गोला में खुटार रोड पर गांव अहमदनगर के पास केन ग्रोवर्स नेहरू महाविद्यालय की स्कूटी सवार तीन छात्राओं को कंटेनर ने रौंद दिया, जिससे तीनों की मौके पर मौत हो गई है। छात्राओं की पहचान साहिबा (20), खदीजा (13) और दीदार बानो निवासी बिलहरी थाना नीमगांव के रूप में हुई है। तीसरा हादसा ईसानगर थाना क्षेत्र में शुक्रवार को देर रात हुआ, जिसमें गांव सिंगावर निवासी अखिलेश कश्यप (50) बाइक से वापस घर आ रहे थे। रास्ते में शंकरपुर के पास एक अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी।

कांग्रेस ने सालों तक आदिवासियों को उनके हाल पर छोड़ा

डेडियापाड़ा (गुजरात), एजेंसी

- प्रधानमंत्री ने आदिवासियों की अनदेखी के लिए पूर्ववर्ती सरकारों पर निशाना साधा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को कहा कि आदिवासियों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बहुत बड़ा योगदान दिया है, लेकिन कांग्रेस ने कभी उनके योगदान को मान्यता नहीं दी और स्वतंत्रता के बाद पार्टी के 60 साल के शासन के दौरान उन्हें अपने हाल पर छोड़ दिया गया।

आदिवासी नेता भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के मौके पर गुजरात में नर्मदा जिले के डेडियापाड़ा शहर में एक जनसभा को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि उनकी सरकार ने आदिवासी क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधाओं में वृद्धि की है और खेल बुनियादी ढांचे को बढ़ाने के लिए काम कर रही है। अपने संबोधन से पहले, प्रधानमंत्री ने 9,700 करोड़ रुपये से अधिक लागत की विभिन्न बुनियादी ढांचा और विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। मोदी ने कहा, हमने आदिवासी क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधाएं बढ़ा दी हैं क्योंकि उन्हें सिकल सेल एनीमिया का खतरा है। मोदी ने जनजातीय क्षेत्रों में खेल अवसंरचना विकसित करने के लिए अपनी सरकार की प्रतिबद्धता की जानकारी देते हुए कहा कि हाल में क्रिकेट विश्व कप जीतने वाली महिला टीम में एक आदिवासी खिलाड़ी भी थी।

बिहार ने जातिवादी एजेंडे को खारिज किया

सूरत। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि बिहार की जनता ने जातिवाद का जहर उगलने वालों और मुस्लिम लीग–माओवादी गठजोड़ बन चुकी कांग्रेस को नकार दिया। राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और राजीव गांधी के साथ काम कर चुके कांग्रेस के राष्ट्रवादी नेता नामदार के कारनामों से दुखी हैं। मोदी सूरत में रहने वाले बिहार के लोगों द्वारा आयोजित एक अभिनंदन समारोह में बोल रहे थे, जहां उन्होंने राज्य में विधानसभा चुनावों में भाजपा नीत राजग की भारी जीत पर उन्हें बधाई दी। मोदी ने कहा कि पिछले एक दशक में कांग्रेस की लगातार चुनावी हार उस पार्टी के लिए आत्ममंथन का विषय है।

अमृत विचार

बरेली, रविवार, 16 नवंबर 2025

शाहजहांपुर

न्यूज ब्रीफ

22 में से दो शिकायतों का मौके पर निस्तारण

तिलहर, अमृत विचार : संपूर्ण समाधान दिवस में एसडीएम दयानंद सरोज ने फरियादियों को सुना। इस दौरान आई 22 शिकायतों में से दो शिकायतों का मौके पर निस्तारण कर दिया । शनिवार को ब्लॉक सभागार में आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस में सबसे अधिक अवैध कब्जा करने की शिकायतें आईं। एसडीएम ने सभी को मौके पर जाकर शिकायतों का निशान करने के निर्देश दिए। पूर्ति निरीक्षक मनीष यादव ने फरियादी महिला मुस्तफाबाद मोहल्ला की गया देवी को तुरंत राशन कार्ड जारी कर उनकी शिकायत का निस्तारण किया। इस दौरान कोतवाल राकेश कुमार, बीडीओ बृजेश मिश्रा, पूर्ति निरीक्षक आलोक कुमार, मनीष यादव, एसडीओ कैलाश यादव आदि मौजूद रहे।

बिना अनुमति काटे पेड़ रिपोर्ट दर्ज

जैतीपुर, अमृत विचार : वन विभाग के उपनिरीक्षक रामप्रकाश वर्मा ने गढ़िया रंगीन थाने में दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि मुखबिर से मरेना गांव में अवैध कटान की सूचना पर गांव पहुचा तो वहां 14 पेड़ों को काटकर ठेकेदार लकड़ी ले जा चुका था। जिनकी जड़े मौजूद थी, जिसमे पांच शीशम, छह गूलर, एक महुआ, एक बेल था पेड मालिक जितेंद्र सिंह से कटान के कागजात मांगे तो चार शीशम एक गूलर की अनुमति दिखा पाए । बताया कि पेड़ काटकर इस्लाम नवी निवासी मोहल्ला मिरधान फरीदपुर बरेली ले गया। पुलिस ने पेड़ मालिक और लकड़ी ठेकेदार पर रिपोर्ट दर्ज की है।

भैंस बेचने से मना करने पर रॉड से पीटा

रोजा, अमृत विचार : रामचंद्र मिशन थाना क्षेत्र के मोहल्ला गाड़ीपुरा निवासी सूरज यादव ने थाना पर दी गई तहरीर में बताया पुत्तूलाल चौराहे के रहने वाले तौसीब और सोनू ने उसकी भैंस खरीदने की बात कही थी। उसने बेचने से मना कर दिया। इस बात से दोनों नाराज हो गए। शनिवार की सुबह सूरज भैंस नदी के किनारे ले गया था। दोनों आरोपियों ने उसे लोहे की राड से पीटकर घायल कर दिया। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है। पुलिस मामले की विवेचना कर रही है।

आग से हजारों का सामान जला

शाहजहांपुर, अमृत विचार : तिलहर थाना क्षेत्र के गांव बरहामोहब्तपुर निवासी महिपाल के घर में शुक्रवार की शाम छह बजे खाना बनाते समय कमरे में आग लग गयी। उसकी पत्नी ने शोर मचाया तो गांव वाले दोड़कर गए ओर पानी डालकर आग को बुझाया। उसका हजारों रुपये का घरेलू सामान जल गया है।

स्थानांतरण सूची जारी कराने को लेखपालों का प्रदर्शन

लेखपाल संघ ने लंबित मांगों को लेकर तहसील में धरना देकर विधायक को सौंपा ज्ञापन, समस्याओं के समाधान की मांग

संवाददाता, पुवायां

अमृत विचार: उत्तर प्रदेश लेखपाल संघ ने अपनी वर्षों से लंबित मांगों और समस्याओं के समाधान न होने पर शुक्रवार को तहसील परिसर में शांतिपूर्ण धरना देते हुए विधायक चेतराम को ज्ञापन सौंपा। सुबह 10से दोपहर 2 बजे तक चले इस धरने में भारी संख्या में लेखपाल मौजूद रहे। संघ ने शासन-प्रशासन को ज्ञापन सौंपकर समस्याओं पर तत्काल संवेदनशीलता से निर्णय लेने की मांग की।

संघ ने बताया पिछले 9 वर्षों से लेखपाल पद की शैक्षणिक योग्यता व पदनाम परिवर्तन, प्रारंभिक वेतनमान उच्चीकरण, एसीपी विसंगति संशोधन, मृतक आश्रित लेखपालों की पुरानी पेंशन विसंगति, राजस्व निरीक्षक व नायब तहसीलदार के अतिरिक्त पदों का सृजन, स्टेशनरी भत्ता 100 रुपये से बढ़ाकर 1000 रुपये, वाहन/मोटरसाइकिल भत्ता अनुमन्य करने, तथा विशेष वेतन भत्ता 100 रुपये से बढ़ाकर 2500 रुपये प्रतिमाह किए जाने जैसी मांगें लगातार शासन स्तर पर लंबित हैं।

विधायक को ज्ञापन सौंपते लेखपाल संघ के पदाधिकारी। ● अमृत विचार

● विधायक व सीडीओ ने दिए मौके पर निस्तारण के निर्देश

संघ ने यह भी कहा कि प्रदेश के लगभग 3000 लेखपाल भय और तनाव में परिवार से दूर रहकर नौकरी कर रहे हैं, लेकिन अंतरमंडलीय स्थानांतरण संबंधी 23 अगस्त 2018 के शासनादेश के अनुसार ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए जाने के बावजूद स्थानांतरण सूची आज तक जारी नहीं की गई, जबकि अन्य विभागों के कर्मचारियों के स्थानांतरण संपन्न हो चुके हैं। इसके अलावा संघ ने शिकायत की कि मुख्यमंत्री द्वारा 02 जुलाई व 03 सितंबर 2025 के निर्देशों के बावजूद वर्ष 2025–26 की डीपीसी आयोजित नहीं हो सकी है, जिससे राजस्व निरीक्षक पद पर पदोन्नति भी अधर में है। संघ ने बताया कि तहसील और जनपद स्तर पर अधिकारियों द्वारा नियमित मासिक बैठकें तक नहीं की जा रही हैं। वहीं, समस्याएं उठाने वाले पदाधिकारियों का शासनादेशों के विपरीत स्थानांतरण किए जाने की शिकायत भी बैठक में उठाई गई थी। संघ ने कहा कि संसाधनों के अभाव, कम संख्या और बढ़ते गैर-विभागीय कार्यों के दबाव के बावजूद लेखपाल लगातार विभागीय दायित्वों को ईमानदारी से निभा रहे हैं, लेकिन समस्याओं के समाधान के लिए किए जा रहे पत्राचार और वार्ताएं अनसुनी रह गई हैं। धरने के दौरान लेखपालों ने शासन से मांग की कि संवर्ग की मूल समस्याओं और वर्षों से लंबित मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार कर त्वरित समाधान सुनिश्चित किया जाए। इस दौरान मो. एहतराम, अभिनव श्रीवास्तव, रितेश कनौजिया, उत्कर्ष वर्मा, प्रदीप कुमार, हेमंत गंगवार, नरेंद्र, आजम खां, वीरेश, गिरीश त्रिवेदी, निशु, कल्पना, पूनम, दिव्या समेत तमाम लेखपाल मौजूद रहे।

समस्याओं को लेकर सदर तहसील में गरजे लेखपाल

शाहजहांपुर, अमृत विचार : लेखपालों की विभिन्न मांगों को लेकर शनिवार को प्रदेशव्यापी धरना प्रदर्शन लेखपाल संघ द्वारा शनिवार को तहसीलों में किया गया। जिसमें जनपद की सदर, पुवायां, जलालाबाद, तिलहर व कलान तहसील में भी धरना कर लेखपालों ने संबधित अधिकारियों को ज्ञापन सौंपा। सदर में उत्तर प्रदेश लेखपाल संघ के तहसील अध्यक्ष अरविंद बाबू मिश्रा के नेतृत्व में लेखपालों ने धरना दिया और एसडीएम संजय कुमार पाण्डेय को ज्ञापन सौंपकर समस्या समाधान की मांग रखी। दिए ज्ञापन में बताया गया कि विगत नौ वर्षों से लेखपाल पद की शैक्षिक योग्यता व पदनाम बदलने, प्रारंभिक वेतनमान उच्चीकरण, एसीसी विसंगतियों को दूर करना, स्टेशनरी भत्ता 100 से बढ़ाकर किए जाने समेत अन्य समस्याओं को रखा गया। साथ ही चेतावनी दी गई कि अगर समस्याओं का निस्तारण जल्द न हुआ तो लेखपाल अतिरिक्त क्षेत्र छोड़ने, कार्य बहिष्कार करने एवं मंत्री, विधायकों के आवासों के बाहर प्रदर्शन व आंदोलन को बाध्य होगा। इस दौरान लेखपाल अरविंद बाबू मिश्रा, मुनेंद्र कुमार, सुरेंद्र सिंह, सुधा सिंह, हरगोविंद, अखिलेश कुमार, जितेंद्र पचौरी आदि शामिल रहे।

तिलहर में लेखपालों का धरना शुरू

तिलहर, अमृत विचार : तहसील में लेखपालों ने अपनी मांगों को लेकर धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया है। लेखपालों ने चेतावनी दी है, यदि उनकी मांगें शीघ्र निस्तारण नहीं किया गया, तो वे आगे धरना जारी रखेंगे। तहसील परिसर में महिला लेखपाल और पुरुष लेखपालों ने हनुमान मंदिर में एकत्रित होकर विरोध प्रदर्शन किया। लेखपालों ने बताया कि हमारा धरना पांच सूत्रीय मांगों को लेकर किया जा रहा है। लेखपाल संघ के तहसील अध्यक्ष धर्मेंद्र कुमार ने बताया कि उनकी प्रमुख मांगों में प्रारंभिक वेतनमान का उच्चीकरण (2800 ग्रेड पे), पदोन्नति के अवसरों में वृद्धि (50 प्रतिशत नायब तहसीलदार पद विभागीय परीक्षा से), स्टेशनरी भत्ते में 100 रुपये से 100 रुपये की बढ़ोतरी, विशेष भत्ता 100 रुपये से बढ़ाकर 2500 रुपए करना, अंतर-मंडलीय स्थानांतरण और लेखपाल पदों की संख्या में वृद्धि शामिल है। धर्मेंद्र कुमार के अनुसार, लेखपाल लंबे समय से इन मांगों को उठा रहे हैं, लेकिन सरकार द्वारा उन पर किसी प्रकार का कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि इससे पहले भी कई बार इस संबंध में प्रदर्शन किए जा चुके हैं। लेखपालों के काम बंद कर धरने पर बैठने से तहसील में अपने विभिन्न कार्यों के लिए आने वाले नागरिकों को भारी असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। हड़ताल के कारण धान सत्यापन के साथ-साथ चुनाव संबंधी चल रहे कार्य एवं अन्य कार्य भी प्रभावित होने की आशंका है।

सर्वेयर के लिए 25 तक करें आवेदन

शाहजहांपुर, अमृत विचार: फसलों की ई-पड़ताल के लिए गाटों का सर्वे कार्य प्रत्येक रबी, खरीफ एवं जायद में किया जाता है।

आगामी रबी में सर्वे कार्य दिसम्बर से प्रारम्भ किया जाना सम्भावित है, इसके लिए इच्छुक युवक संबंधित विकास खंड के राजकीय कृषि बीज भण्डार से आवेदन पत्र निःशुल्क प्राप्त कर 25 नवंबर तक ई-मेल ddaszpdcs<bha>@</bha>gmail.com पर आवेदन करने के साथ संबंधित विकास खंड के राजकीय कृषि बीज भंडार पर भी अपना आवेदन जमा करेगें। समय से आवेदन करने वाले युवकों का चयन किया जाएगा। डीडी कृषि पीके मिश्रा ने बताया कि इसके लिए न्यूनतम योग्यता हाईस्कूल हो, नवीनतम वर्जन का 5 जी एंड्रॉयड फोन हो। चयनित युवक को गाटों के सर्वे कार्य किए जाने को वर्तमान में सर्वेयरों के देय मानदेय योजनान्तर्गत प्रति सर्वेयर प्रति एकल सर्वे के लिए 5 रुपये तथा एक से अधिक सर्वे के लिए अधिकतम 10 रुपये प्रति गाटा की दर से भुगतान किया जाएगा। साथ ही सर्वेयरों को सर्वे कार्य के लिए खरीफ, रबी एवं जायद के सर्वे काल के समय इंटरनेट कनेक्टिविटी की उपलब्धता के लिए 35 प्रति सर्वेयर प्रति सर्वे काल को भुगतान किया जाना निर्धारित है।

पिता बोले, बेटी को मारकर लटकाया

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: रोजा क्षेत्र में महिला का शव फंदे से लटका मिलने के मामले में मृतका के मायके वाले हरियाणा से शाहजहांपुर पहुंचे। मृतका के पिता ने आरोप लगाया है कि उसकी बेटी रोशनी को मारकर फंदे से लटका दिया है। ससुराल वाले उसकी पुत्री को दहेज के लिए मारते पीटते थे।

मृतका रोशनी।

गढ़िया रंगीन थाना क्षेत्र के गांव रपड़िया नवादा निवासी रोशनी (26) की शादी करीब साढ़े पांच साल पहले सुरेंद्र निवासी जमुका थाना रोजा के साथ हुई थी। शुक्रवार दोपहर बाद रोशनी का शव ससुराल में एक कमरे में दुपट्टे से लटका हुआ मिला था। उसका पति घर पर नहीं था और परिवार के अन्य लोग गांव में थे। ससुराल वालों ने उसका शव कमरे में लटका हुआ पाया था।

पुलिस मौके पर जांच करती हुई। ● अमृत विचार

● हरियाणा से पहुंचे मृतका के परिजनों नेआरोप लगाया गर्म पानी डालकर जलाते थे

प्रभारी निरीक्षक राजीव कुमार ने महिला का शव उतारकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतका के पिता सर्वेश कुमार परिवार समेत हरियाणा में काम करते थे। बेटी की मरने की सूचना पर शनिवार सुबह पिता परिवार समेत पोस्टमार्टम हाउस पर पहुंचे। सर्वेश ने आरोप लगाया उसकी बेटी को दहेज के लिए ससुराल वाले प्रताड़ित करते थे और पति शराब पीता था। रोशनी शराब पीने का विरोध करती थी तो पति उसको मारता पीटता था। शुक्रवार की सुबह रोशनी की अपनी मां से फोन पर बात हुई थी। उसने फोन पर बताया था पति और अन्य लोग उसको रोज मारते पीटते है। उसको गर्म पानी डालकर जलाते थे। प्रभारी निरीक्षक राजीव कुमार ने बताया कि मृतका के मायके वालों की तरफ से तहरीर मिलने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

गन्ना क्रय केंद्र पर अवैध वसूली की शिकायत

पुवायां, अमृत विचार: तहसील दिवस के दौरान भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) गुट के जिलाध्यक्ष अनिल सिंह यादव ने गन्ना किसानों से हो रही वसूली के मामले को उठाते हुए अधिकारियों को ज्ञापन सौंपा।

जिलाध्यक्ष ने बताया कि अजबापुर चीनी मिल का गन्ना क्रय केंद्र ककरौआ जप्ती में संचालित है, जहां ठेकेदार किसानों से प्रति ट्राली 100 रुपये तथा प्रति बैलगाड़ी 50 रुपये की अवैध वसूली करता है। इसके अलावा केंद्र प्रभारी द्वारा प्रति क्विंटल गन्ने पर 3 किलो करदा काटने का आरोप भी लगाया गया। उन्होंने कहा कि जिलाधिकारी द्वारा पहले ही आदेश जारी किए जा चुके हैं कि किसी भी गन्ना क्रय केंद्र पर अवैध वसूली नहीं की जाएगी, इसके बावजूद किसान लगातार शोषण का शिकार हो रहे हैं। उन्होंने मांग की कि संबंधित अधिकारियों को निर्देशित कर केंद्रों पर हो रही अवैध वसूली को रोका जाए।

डीएम की सख्त हिदायत, पुल के निर्माण में गुणवत्ता का रखा जाए पूरा ध्यान

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

● जिलाधिकारी ने निर्माणाधीन कोलाघाट पुल का किया निरीक्षण

अमृत विचार: जिलाधिकारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह ने शनिवार को रामगंगा नदी पर निर्माणाधीन कोलाघाट पुल का निरीक्षण किया। उन्होंने निर्माण स्थल पर प्रगति का जायजा लिया और अधिशासी अभियंता से जानकारी प्राप्त की। बताया पुल के कुल 44 पिलरों में से दो पिलरों का कार्य दिसंबर 2025 तक पूरा कर लिया जाएगा। जिलाधिकारी ने थर्ड पार्टी सत्यापन समय पर कराने और निर्माण के दौरान सेफ्टी मानकों का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए।

जिलाधिकारी ने लक्ष्य के अनुरूप परियोजना की भौतिक और वित्तीय प्रगति की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। परियोजना प्रबंधक उत्तर प्रदेश सेतु निगम ने बताया कि मुख्य सेतु का 47 प्रतिशत और पहुंच मार्ग का 10 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है, जिससे कुल भौतिक प्रगति 57 प्रतिशत हो गई है। वित्तीय प्रगति 51 प्रतिशत है। अब तक 15841.59 लाख रुपये की धनराशि परियोजना को आवंटित की जा चुकी है। रामगंगा और बैगुल नदी पर स्थित पुराने कोलाघाट पुल के क्षतिग्रस्त होने के कारण हल्के और भारी वाहनों का आवागमन बंद है, जिससे वाहनों को 50–60 किलोमीटर की अतिरिक्त दूरी तय करनी पड़ रही है। इसी समस्या के समाधान हेतु राज्य मार्ग संख्या 163 पर कोलाघाट के निकट दो लेन का नया सेतु निर्माणाधीन है। मुख्य सेतु की लंबाई 1802.14 मीटर जबकि दोनों ओर 200–200 मीटर पहुंच मार्ग निर्धारित है। परियोजना की स्वीकृत कुल लागत 16683.22 लाख रुपये है। फरवरी 2025 में कार्य प्रारम्भ किया गया था और जून 2027 तक पूर्ण करने का लक्ष्य निर्धारित है।

भूमि अधिग्रहण और रजिस्ट्री की कार्रवाई पूर्ण हो चुकी है। पिलर, बीम और अन्य संरचनात्मक कार्य तेजी से प्रगति पर हैं। जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि सभी कार्य गुणवत्तापूर्ण, सुरक्षित और समय सीमा के भीतर पूरे किए जाएं। उन्होंने कहा कि निर्माण सामग्री की गुणवत्ता में किसी भी स्तर पर समझौता स्वीकार नहीं होगा। पुल समय पर पूरा होने से क्षेत्रवासियों को लंबी दूरी तय करने से मुक्ति मिलेगी। निरीक्षण के दौरान उप जिलाधिकारी जलालाबाद प्रभात कुमार राय सहित जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे ।

डीएम ने कांट सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का किया निरीक्षण

संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: जिलाधिकारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी विवेक कुमार मिश्रा के साथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कांट का निरीक्षण किया और चिकित्सीय व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने प्रतिदिन आने वाले मरीजों की संख्या, चिकित्सकों की उपस्थिति, दवाओं की उपलब्धता और रात्रिकालीन ड्यूटी संबंधी जानकारी ली।

निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी इमरजेंसी, इंजेक्शन कक्ष, दंत चिकित्सक कक्ष, नेत्र परीक्षण इकाई, लेबर रूम और पैथोलॉजी कक्ष पहुंचे और व्यवस्थाओं की स्थिति देखी। दवा वितरण कक्ष में उन्होंने दवाओं की उपलब्धता की जानकारी लेते हुए निर्देश दिया कि सभी आवश्यक दवाएं हमेशा स्टॉक में रहें। स्टॉक कम होते ही तत्काल डिमांड भेजी जाए। उन्होंने सीसीटीवी की कार्यप्रणाली भी कंट्रोल रूम से देखी। जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी को सीएचसी की साफ-सफाई दुरुस्त कराने, रंगाई-पुताई कराने और केंद्र को एक मॉडल सीएचसी के रूप में विकसित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि चिकित्सक समय से उपस्थित रहकर मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं दें। अस्पताल जनता की सेवा का केंद्र है, इसलिए स्वच्छता और अनुशासन में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

ट्रैफिक नियमों का करें पालन

शाहजहांपुर, अमृत विचार: यातायात माह नवंबर के तहत एनसीसी कैडेट, ट्रैफिक पुलिस और एआरटीओ ने विभिन्न स्थानों पर ट्रैफिक नियमों की जानकारी देकर जागरुकता अभियान चलाया गया और लोगों को सुरक्षा हेतु कई नियम बताये।

वाहन चालकों को बताया गया कि ट्रैफिक नियमों का पालन करें, बाइक चलाते समय मोबाइल का प्रयोग न करे, हेलमेट और कार चलाते समय सीट बेल्ट का प्रयोग करें, वाहन को अधिक स्पीड में न चलाए, रात में बैक लाइट जला कर रखे, कोहरे को लेकर फाग लाइट जलाकर रखे आदि बताए गए। इस अवसर पर यातायात प्रभारी विनय शुक्ला, उप निरीक्षक रमेश कुमार, विवेक कुमार थे।

विश्वविद्यालय बनने से युवाओं की उच्च शिक्षा को मिलेगा नया आयाम

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

● ट्रस्ट की परिसंपत्तियां राज्य को हस्तांतरित, मार्ग हुआ साफ

● जिले में 2026 से नए विश्वविद्यालय के संचालन की संभावना

अमृत विचार: जिले में लंबे समय से प्रतीक्षित राज्य विश्वविद्यालय की स्थापना का रास्ता आखिरकार खुल गया है। राज्य कैबिनेट ने स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज के उन्नयन और ''स्वामी शुकदेवानंद राज्य विश्वविद्यालय'' की स्थापना के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। इस स्वीकृति के साथ शाहजहांपुर प्रदेश के 25वें राज्य विश्वविद्यालय का केंद्र बनने जा रहा है।

शिक्षा के विस्तार और गुणवत्ता सुधार की दिशा में यह बड़ा कदम है। मुमुक्ष आश्रम ट्रस्ट के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती ने ट्रस्ट की सभी परिसंपत्तियों को निःशुल्क राज्य सरकार को हस्तांतरित कर विश्वविद्यालय की आधारशिला को मजबूत किया है। इसके लिए राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम में संशोधन भी मंजूर कर लिया गया है। विश्वविद्यालय बनने के बाद जिले में उच्च शिक्षा के नए अवसर खुलेंगे। अभी प्रदेश में 24 राज्य और 51 निजी विश्वविद्यालय कार्यरत हैं। नए विश्वविद्यालय से शाहजहांपुर और उसके आसपास के क्षेत्रों में उच्च शिक्षा की संरचना मजबूत होगी तथा आधुनिक शोध संसाधन और नवाचार आधारित शिक्षण की उपलब्धता बढ़ेगी। मुमुक्ष आश्रम ट्रस्ट की सभी शिक्षण इकाइयों स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज, विधि महाविद्यालय, श्री देवी संपद ब्रह्मचर्य संस्कृत महाविद्यालय, श्री धर्मानंद सरस्वती कॉलेज और श्री शंकर मुमुक्ष विद्यापीठ को विश्वविद्यालय में समाहित किया जाएगा। कुलपति, कुलसचिव, परीक्षा नियंत्रक और वित्त अधिकारी सहित नौ प्रमुख पद अगले 15 दिनों में सृजित किए जाएंगे। उम्मीद है कि वर्ष 2026 में विश्वविद्यालय शिक्षण कार्य शुरू कर देगा।

एसएस कॉलेज के पूर्व प्राचार्य अवनीश मिश्रा ने विश्वविद्यालय की स्थापना को विकेंद्रित शिक्षा व्यवस्था की बड़ी उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि एआई, एमसीए, एमबीए जैसे व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के साथ महिला शिक्षा को बढ़ावा देने वाले विषय जैसे होम साइंस, ललित कला और वोकल म्यूजिक बड़े स्तर पर उपलब्ध होंगे। साथ ही विश्वविद्यालय की स्पोर्ट्स टीमों में युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलेगा। ददरौल विधायक अरविंद सिंह ने कहा कि अब जिले के छात्रों को आगे की पढ़ाई के लिए बरेली विश्वविद्यालय की दूरी नहीं तय करनी पड़ेगी। उप प्राचार्य अनुराग अग्रवाल ने इसे जिले के लिए गर्व का क्षण बताया। युवाओं ने भी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि नए कोर्स शुरू होने से अब बरेली या दिल्ली जाकर पढ़ाई नहीं करनी होगी। कोर्स के विकल्प बढ़ने और खर्च कम होने से शिक्षा अधिक सुगम होगी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय से शिक्षा की गुणवत्ता भी बढ़ेगी और शाहजहांपुर की पहचान को नया विस्तार मिलेगा।

ट्रस्ट की कुल संपत्ति एक अरब आठ करोड़ तीन लाख रुपये आंकी गई

डीएम द्वारा जारी हैसियत प्रमाण पत्र के अनुसार, ट्रस्ट की चल-अचल संपत्ति का मूल्य एक अरब आठ करोड़ तीन लाख रुपये से अधिक है। विश्वविद्यालय के लिए 20.039 एकड़ भूमि उपलब्ध होगी। ट्रस्ट की इमारतों का कुल क्षेत्रफल 33092.2 वर्ग मीटर है, जिनका मूल्य 71 करोड़ से अधिक आंका गया है। स्वामी चिन्मयानंद ने कहा कि विश्वविद्यालय की मंजूरी से जिले की शिक्षा व्यवस्था को नई दिशा मिलेगी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सहयोग से यह दशकों पुराना सपना पूरा हुआ है। उच्च शिक्षा विभाग जल्द ही गजट अधिसूचना जारी करेगा, जिसके बाद इंजीनियरिंग टीम कैंपस की रूपरेखा तैयार करेगी। भवन, लैब, पुस्तकालय और अन्य अधोसंरचना निर्माण के लिए बजट आवंटित किया जाएगा।

डीएम ने अवशेष अतिक्रमण तुरंत हटाने के दिए निर्देश

शाहजहांपुर, अमृत विचार: ग्राम रौली-बौरी में शमशान भूमि पर हुए अवैध निर्माण को हटाए जाने के बाद जिलाधिकारी धर्मेंद्र प्रताप ने शनिनवार को स्थल का निरीक्षण किया। यह कार्रवाई 11 नवंबर को की गई थी। जिलाधिकारी ने मौके पर मौजूद अधिकारियों से पूरी जानकारी ली और शेष बचे अवैध अतिक्रमण को तत्काल हटाने के निर्देश दिए।

जिलाधिकारी ने कहा कि श्मशान की जमीन पर किसी भी प्रकार का कब्जा स्वीकार्य नहीं है। प्रशासन इस भूमि को पूरी तरह कब्जा मुक्त कर सुरक्षित रखेगा। उन्होंने उप जिलाधिकारी जलालाबाद को निर्देशित किया कि स्थानीय निवासियों को बचे हुए मलबे को हटाने के लिए समय दिया जाए।

डीएम-एसपी ने सुनीं कई लोगों की समस्याएं

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

● शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के निर्देश

अमृत विचार: तहसील जलालाबाद में शनिवार को संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन जिलाधिकारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह की अध्यक्षता में हुआ। समाधान दिवस में बड़ी संख्या में शिकायतकर्ता पहुंचे।

नई बस्ती भौती की संतोष कुमारी ने शिकायत की कि जगपाल, शरदवीर और गुड्डू ने उनकी खेत की जमीन पर अवैध कब्जा कर लिया है। ग्राम देवरानियां के रोशन लाल, लालाराम, गंगा सिंह और चरण सिंह ने शिकायत की कि मुरारी, मदनलाल और संतराम ने उनकी जमीन पर कब्जा कर मकान बना लिया है। समशीपुर के बादाम सिंह ने आरोप लगाया कि कानूनों सुखबीर की जमीन पर भूमाफिया कब्जा कर चुके हैं। जिलाधिकारी ने अवैध कब्जों पर कड़ी नाराजगी जताते हुए निर्देश दिया कि ऐसे मामलों में भू-माफियाओं पर प्राथमिकी दर्ज कर उन्हें जेल भेजा जाए। उन्होंने स्पष्ट कहा कि कब्जे और भूमि विवाद से जुड़े मामलों में पुलिस और राजस्व टीम संयुक्त रूप से मौके पर जाकर निस्तारण सुनिश्चित करें।समाधान दिवस में कुल 36 शिकायतें प्राप्त हुईं, जिनमें से 5 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। डीएम ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि प्रत्येक शिकायत का निस्तारण के साथ किया जाए तथा शिकायतकर्ता से समाधान के बाद फीडबैक भी लिया जाए।

खलिहान और खेल की जमीन पर विवाद

बंडा, अमृत विचार: खलिहान की जमीन की बिक्री का एक पुराना स्टाम्प सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद गांव सैदापुर में चर्चाओं का दौर शुरू हो गया है। वायरल स्टाम्प पेपर के अनुसार वर्ष 2005 में सैदापुर निवासी रामनरेश ने खलिहान की जमीन को अपनी जमीन बताकर लगभग 16 डिसमिल भूमि गांव के ही रतिराम के नाम 45 हजार रुपये में बेच दी थी। स्टाम्प पेपर में क्रेता, विक्रेता और गवाहों के नाम दर्ज हैं। खलिहान जैसी पंचायत संपत्ति को बेचने पर राजस्व विभाग की ओर से कार्रवाई का प्रावधान है, लेकिन यह मामला 20 वर्ष बाद फिर सामने आया है। इसी गांव में खेल के मैदान की करीब 3000 वर्ग मीटर जमीन पर इंद्रपाल द्वारा मकान निर्माण की शिकायत पर राजस्व विभाग ने जांच की।

छात्रों को परमाणु ऊर्जा की दी जानकारी

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: रायन इंटरनेशनल स्कूल में न्यूक्लियर पावर कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के तत्वावधान में परमाणु ऊर्जा विषयक संगोष्ठी आयोजित की गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सांसद अरुण सागर के साथ परमाणु ऊर्जा विभाग के वैज्ञानिक अजय प्रताप सिंह, वैज्ञानिक अधिकारी वाईपी गौतम और विद्यालय की प्रधानाचार्य उषा अग्रवाल उपस्थित रहीं।

संसद ने विद्यार्थियों को परमाणु विज्ञान, उर्जा संरक्षण और सतत तकनीक के महत्व के बारे में जागरूक किया। उन्होंने कहा कि विज्ञान गरीब से अमीर और गांव से शहर तक, हर व्यक्ति की सेवा का साधन है। यह संगोष्ठी केवल कार्यक्रम नहीं बल्कि भविष्य के सपनों का बीज है, जो विद्यार्थियों में वैज्ञानिक जिज्ञासा और नवाचार की भावना पैदा करेगा।

कार्यक्रम में बोलते सांसद अरुण सागर।

सांसद ने कहा कि उन्होंने इस आयोजन के लिए केंद्रीय मंत्री से विशेष स्वीकृति दिलाई, जिसके बाद यह ऐतिहासिक कार्यक्रम संभव हो पाया। उन्होंने परमाणु ऊर्जा को सूरज की किरणों से भी अधिक शक्तिशाली बताते हुए कहा कि यह तकनीक भारत को उर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बना सकती है। उन्होंने विद्यार्थियों को कहानी सुनाते हुए बताया कि कैसे एक गांव में बिजली संकट था, लेकिन बाद में सोलर पैनल स्थापित हुए और अब परमाणु ऊर्जा के सपने पूरे हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि विज्ञान सेवा का साधन है और आने वाली पीढ़ी उसी सेवा के सिपाही बनकर देश का भविष्य संवारेंगी।

कार्यक्रम में वैज्ञानिकों ने परमाणु ऊर्जा की कार्यप्रणाली, उपयोगिता, सुरक्षा और भविष्य की तकनीकों पर विस्तार से जानकारी दी। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सवाल पूछे और विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त की।

● तकनीक भारत को उर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बना सकती है: सांसद

सदर में एडीएम प्रशासन ने सुनी जन शिकायतें

शाहजहांपुर, अमृत विचार: जिले में शनिवार को सभी तहसीलों में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन जिला व तहसील स्तरीय अधिकारियों की अध्यक्षता में किया गया। जिसमें तहसील सदर में एडीएम प्रशासन रजनीश कुमार मिश्रा की अध्यक्षता में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में 43 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए, जिसमें से 5 प्रार्थना पत्रों का निस्तारण एडीएम ने मौके पर किया और शेष प्रार्थना पत्रों के गुणवत्ता पूर्ण निस्तारण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया।इस दौरान एडीएम प्रशासन ने कहा कि तहसील में आने वाले फरियादियों को बार बार एक ही कार्य के लिए चक्कर न काटने पड़े और पुनरीक्षण कार्यक्रम में भी तेजी लाई जाए।

न्यूज ब्रीफ

चोरी के बाजरा समेत दो गिरफ्तार

शाहजहांपुर, अमृत विचार : जैतीपुर के उप निरीक्षक रोहिताश कुमार ने बताया कि कस्बा जैतीपुर निवासी राकेश कुमार के गोदाम का चोरों ने चार दिन पहले ताला तोड़ दिया था। चोर सात बोरी बाजरा चुराकर ले गए थे। उन्होंने अज्ञात में चोरी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। पुलिस की विवेचना में देवेंद्र और नेम सिंह निवासी करकौर थाना जैतीपुर का नाम प्रकाश में आया था। पुलिस ने दोनों आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने उसके कब्जे से चोरी किया बाजरा व बाइक बरामद की है। पूछताछ के दौरान आरोपियों ने बताया कि बाजरा भट्टे के निकट खेत में छिपा दिया था।

किशोरी से दुष्कर्म का आरोपी गिरफ्तार

शाहजहांपुर, अमृत विचार : पुलिस ने किशोरी से दुष्कर्म के आरोपी को गिरफ्तार करके बाल सुधार गृह भेज दिया। कलान थाना के उप निरीक्षक मनीष कुमार ने बताया 4 नवंबर को एक बाल अपचारी ने किशोरी को अगवा करके दुष्कर्म किया था। किशोरी को पुलिस ने बरामद कर लिया था। पुलिस ने पॉक्सो आदि की धारा में मुकदमा दर्ज किया था। पुलिस ने आरोपी बाल अपचारी को जल्लापुर चौराहे से गिरफ्तार करके बाल सुधार गृह भेज दिया।

विकास भवन गेट से बाइक चोरी

शाहजहांपुर, अमृत विचार : पुवायां थाना क्षेत्र के गांव अनावा निवासी प्रशांत ने थाना सदर बाजार में दी गई तहरीर में बताया कि शुक्रवार की दोपहर बाद विकास भवन गेट पर आया और बाइक खड़ी कर दी। वह लौटकर आया तो बाइक गायब मिली। उन्होंने बाइक को तलाश किया और नही मिली। सदर बाजार पुलिस ने बाइक चोरी की रिपोर्ट दर्ज कर ली है। पुलिस चोरी गई बाइक की तलाश कर रही है।

भैंस की वजह से बाइक सवार मां- बेटे घायल

तिलहर, अमृत विचार : बेटे की शादी का निमंत्रण देने जा रही मां-बेटे की बाइक के रास्ते में भैंस आने की वजह से हादसे का शिकार हो गई। हादसे में मां और बेटे घायल हो गए। स्थानीय लोगों की मदद से दोनों को सीएचसी पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों ने मां की गंभीर हालत देखते हुए उसे राजकीय मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया। थाना क्षेत्र के गांव चकबरैंचा निवासी गीता देवी के बेटे विपिन की शादी 23 को होनी है। इसी सिलसिले में वह बेटे विपिन के साथ शुक्रवार शाम 5 बजे थाना मदनापुर क्षेत्र स्थित अपने भाई के घर बुलावा देने जा रही थीं। तिलहर से रजनपुर मार्ग पर एक झाला के पास सड़क पर अचानक भैंस आ गई। इससे बाइक अनियंत्रित होकर सड़क पर गिर गई।

बेकाबू वाहन ने बाइक को मारी टक्कर, युवक की मौत

बदायूं निवासी युवक ननिहाल जाते समय हुआ हादसे का शिकार

संवाददाता कलान/शाहजहांपुर

बरेली मोड़ पर पुलिस जांच करती हुई। ● अमृत विचार

अमृत विचार: जिले में अलग-अलग सड़क हादसों में एक युवक की मौत हो गई, जबकि एक युवक घायल हो गया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया, साथ ही घायल को इलाज के बाद घर भेज दिया। हादसे में मौत की सूचना मिलते ही मृतक के घर में कोहराम मच गया।

बदायूं जिले के थाना उसहैत के गांव बमरौली निवासी 28 वर्षीय देवेंद्र कुमार की ननिहाल कलान कस्बे में है। शुक्रवार सुबह वह ननिहाल आया था। वह रात 10:30 बजे ननिहाल से अपने घर बदायूं बाइक से जा रहे थे। कलान क्षेत्र में आंधीदेई गांव के सामने वैन ने बाइक को टक्कर मार दी, जिससे बाइक सवार देवेंद्र घायल हो गया। उसकी बाइक क्षतिग्रस्त हो गई। हादसे के बाद चालक वैन लेकर भाग गया। प्रभारी निरीक्षक प्रभाष चंद्र फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे और घायल को सीएचसी पर भेज दिया। जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। इधर सूचना मिलने पर उसके ननिहाल वाले रात ही में पहुंच गए। मौत की खबर से परिवार में रोना पीटना मच गया। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि तहरीर मिलने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। वहीं दूसरी घटना कोतवाली क्षेत्र में शुक्रवार की देर रात कांट-जलालाबाद मार्ग पर साउथ सिटी के सामने हुई। यहां ट्रक ने कार को बचाने का प्रयास किया तो ट्रक पेड़ से जाकर टकरा गया। टक्कर इतनी भीषण थी कि पेड़ जड़ से उखड़कर वाहनों और एक खोखे पर गिर गया। बाइक सवार घायल हो गया। पुलिस ने उसकी मलहम पट्टी कराके घर भेज दिया। उसकी बाइक क्षतिग्रस्त हो गई। दुकान के खोखे में काफी नुकसान हो गया। प्रभारी निरीक्षक अश्वनी कुमार सिंह मौके पर पहुंचे और क्रेन को मंगवाकर ट्रक और पेड़ को सड़क पर हटवाया। इस दौरान जाम लग गया था। चालक ट्रक छोड़कर भाग गया। गनीमत रही है कि कोई बड़ा हादसा नहीं हुआ। पुलिस ट्रक के बारे में जानकारी कर रही है।

बस की टक्कर से किसान घायल

तिलहर, अमृत विचार: रात लखनऊ-दिल्ली हाईवे पर शुक्रवार देर तेज रफ्तार रोडवेज बस ने भैंसा बुग्गी में टक्कर मार दी। हादसे में किसान गंभीर रूप से घायल हो गया, जबकि दोनों भैंसे भी जख्मी हो गए।

हाईवे पर करीब आधे घंटे तक जाम लगा रहा। सूचना पर पहुंची पुलिस ने यातायात सुचारु कराया और घायल चालक को अस्पताल पहुंचाया। थाना क्षेत्र के गांव चांदपुर निवासी किसान संतराम ने बताया शुक्रवार देर रात करीब 1:30 बजे वह चीनी मिल में गन्ना डालकर भैंसा बुग्गी से घर लौट रहे थे। जैसे ही वह बिजली कार्यालय के सामने पहुंचे, तभी पीछे से बरेली की ओर से आ रही तेज रफ्तार रोडवेज बस ने उनकी बुग्गी में जोरदार टक्कर मार दी। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए, वहीं दोनों भैंसे भी पूर्ण रूप से घायल हो गए। बुग्गी पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। टक्कर के बाद हाईवे पर वाहनों की लंबी कतार लग गई।स्थानीय लोगों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और यातायात को बहाल कराया। घायल किसान को सीएचसी में भर्ती कराया गया, जहां उसका इलाज जारी है। प्रभारी निरीक्षक राकेश कुमार ने बताया कि पीड़ित की ओर से तहरीर मिली है।

अब ढकना रोड पर दिखा बाघ, ग्रामीणों में दहशत

संवाददाता, खुटार

सड़क पार करता बाघ।

● वन विभाग ने मामले की जानकारी से किया इनकार, कहा, पगमार्क ट्रेस कर की जाएगी कांबिंग

अमृत विचार: पांच दिन पूर्व गांव मोहनपुर में देखे जाने के बाद अब ढकना लहिया-मलिका रोड पर बाघ को सड़क पार करते देखा गया है। चार पहिया वाहन में सवार लोगों ने उसका फोटो, वीडियो बनाकर मोबाइल में कैद कर लिया। सोशल प्लेटफॉर्म पर बाघ का वीडियो वायरल देख लोगों ने उस मार्ग से निकलना कुछ हद तक बंद कर दिया है।

इस मामले में वन विभाग ने जानकारी से इनकार किया है। कहना है कि मौके पर पहुंच कर पग चिन्हों को ट्रेस करने के साथ ही लोगों को जागरूक करने और कांबिंग की जाएगी। हालांकि, बाघ गांव के नजदीक देखे जाने से दहशत फैली हुई है। बता दे कि 11 और 12 नवंबर की मध्य रात को खुटार के गांव मोहनपुर में अंत्येष्टि स्थल के पास बाघ को देखा गया था। उस मार्ग से निकल रहे लोगों ने उसका वीडियो और फोटो अपने मोबाइल में कैद कर उसे सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया था। साथ ही रात को ही तमाम ग्रामीण लाठी-डंडा लेकर पहुंचे थे। शोर मचाया तो बाघ गन्ने के खेतों में चला गया था। वन विभाग की टीम ने मौके पर पहुंच कर जांच की थी। लेकिन पगचिन्हों व लोकेशन ट्रेस तक नहीं हो पाई थी। शुक्रवार रात को ढकना लहिया-मलिका रोड से निकल रहे लोगों ने बाघ को सड़क पार करते देखा तो होश उड़ गए। काफी दूरी पर ही वाहन रोक लिया और उसका वीडियो बनाने के बाद आसपास में रहे ग्रामीणों को जानकारी दी। शनिवार सुबह तड़के ग्रामीण खेतों की तरफ नहीं पहुंच सके। बाद में ग्रामीण समूह बनाकर खेतों में पहुंचे। बाघ देखे जाने पर लोग भयभीत है। उधर, वन रक्षक संतोष गौड़ ने बताया कि इस मामले की सूचना नहीं मिली है।

सिपाही ने प्रसूता को दिया ब्लड

ब्लड देता सिपाही।

शाहजहांपुर, अमृत विचार: राजकीय मेडिकल कॉलेज में एक सिपाही ने स्वेच्छा से गर्भवती महिला को एक यूनिट रक्तदान दिया। सिपाही मानवता एवं सेवाभाव की मिसाल पेश की है। राजकीय मेडिकल कॉलेज में एक गर्भवती महिला भर्ती हुई। महिला डॉक्टर ने प्रसव पीड़ा से पीड़ित गर्भवती महिला के परिवार वालों से कहा कि एक यूनिट ब्लड की जरूरत है। पीड़ित परिवार ने एसपी से गुहार की। मीडिया सेल पर ब्लड देने के लिए डाला गया। आईजीआरएस में तैनात सिपाही शुभनिस स्वेच्छा से ब्लड देने के लिए तैयार हो गया। एसपी ने सिपाही को मेडिकल कॉलेज भेज दिया। सिपाही ने स्वेच्छा से महिला को एक यूनिट ब्लड दिया। परिवार वालों ने सिपाही का सराहना करते हुए आभार व्यक्त किया। एसपी राजेश द्विवेदी ने कहा कि पुलिस आमजन की सहायता, जीवन रक्षा तथा संकट की घड़ी में त्वरित सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहती है और भविष्य में इसी प्रकार की मानवीय कार्यों में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करती रहेंगी।

डीसीएम चालक ने कमरे में फंदा लगाकर दी जान

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

● काम से लौटी महिला तो पति का शव फंदे से लटका देखा

अमृत विचार: हयातपुरा में एक युवक ने कमरे में पंखे के कुंडे से फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। उसकी पत्नी घर पर लौटकर आई तो देखा कि उनका शव कमरे में लटका था। यहां पर किराए के मकान में रहता था और डीसीएम चलाता था। मृतक पीलीभीत जिले का रहने वाला था।

पीलीभीत जिले के गनेशपुर गौटिया निवासी दिलीप पाल (40) चौक कोतवाली क्षेत्र में मोहल्ला हयातपुरा में किराए के मकान में परिवार समेत रहता था। यहां पर डीसीएम चलाता था। उसकी पत्नी संध्या पाल घरों में घरेलू काम करती है। शुक्रवार की शाम 5 बजे उसकी पत्नी घरेलू काम करने के लिए चली गई। उसके दो बेटे कार्तिक व सिद्धार्थ घर के बाहर खेल रहे थे। इस दौरान उसके पति ने कमरे में पंखे के कुंडे से रस्सी का फंदा गले में डालकर आत्महत्या कर ली। उसकी पत्नी घरेलू काम करके शाम 8 बजे घर पर आई तो उसने देखा कि घर पर उसके पति नहीं है। उसने एक कमरे का दरवाजा खोला तो देखा कि उसके पति फंदे से शव लटक रहा था। उसने शोर मचाया तो मोहल्ले वाले एकत्रित हो गए। उन्होंने चौक कोतवाली सूचना दी। प्रभारी निरीक्षक अश्वनी कुमार सिंह फोर्स के साथ मौके पर गए और शव को उतारा। पुलिस लाइन से फॉरेंसिक टीम ने जांच करके नमूना लिया। संध्या पाल ने पुलिस को बताया कि उसके पति डीसीएम चलाते थे। वह दो दिन से डिप्रेशन में थे और काम पर नहीं जा रहे थे। उन्होंने आत्महत्या क्यों की, उनको कोई जानकारी नहीं है। मौत की खबर से उसकी पत्नी और बच्चों का रो-रोकर बुराहाल है। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

लापता वृद्ध का शव उपलों के ढेर में मिला

संवाददाता, कलान

● दिमागी रूप से कमज़ोर और मिर्गी से पीड़ित था वृद्ध

मृतक हरिश्चंद्र।

अमृत विचार : थाना क्षेत्र के गांव भुन्नी खेड़ा में शुक्रवार से गायब हरिश्चंद्र (55) का शव शनिवार सुबह मकान के पीछे लगी पुआल और उपलों के बीच मिला। मृतक के छोटे भाई विद्याराम शर्मा ने थाने पर प्रार्थना पत्र देकर बताया हरिश्चंद्र दिमागी रूप से कमजोर था और उसे मिर्गी के दौरे भी आते थे। वह अविवाहित था और शुक्रवार से लापता था।

शनिवार सुबह 6 बजे उसका शव पुआल और उपलों के बीच पड़ा मिला। विद्याराम ने भाई की मौत दौरा पड़ने से होने की आशंका जताते हुए शव का पोस्टमार्टम कराने की मांग की।

पांच शिकायतों का मौके पर निस्तारण

शाहजहांपुर, अमृत विचार: तहसील सदर में आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस में अपर जिलाधिकारी प्रशासन की अध्यक्षता में लोगों की शिकायतें सुनी गईं। समाधान दिवस में कुल 43 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए, जिनमें से 5 का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया।अपर जिलाधिकारी ने शेष प्रार्थना पत्रों के गुणवत्तापूर्ण और समयबद्ध निस्तारण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि आमजन की समस्याओं का प्रभावी समाधान प्रशासन की प्राथमिकता है।

लाइन ठीक करते समय लाइनमैन को लगा करंट

संवाददाता, कलान

अमृत विचार: नगर पंचायत वार्ड 5 बालाजी नगर में शनिवार शाम करीब 7 बजे पावर हाउस में तैनात लाइनमैन सुदेश निवासी पृथ्वीपुर, बिजली की लाइन ठीक करते समय करंट की चपेट में आकर गंभीर रूप से घायल हो गया।

सुदेश ने खंभे पर चढ़ने से पहले पावर हाउस को फोन कर तीन लाइनों का शटडाउन ले लिया था, लेकिन चौथी लाइन का शटडाउन नहीं मिल पाया। तीन केबल जोड़ने के बाद जैसे ही चौथी लाइन का तार हाथ में लिया, उसी समय तेज करंट ने उसे अपनी चपेट में ले लिया। करंट लगते ही वह खंभे से नीचे गिर पड़ा और गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना के बाद मौजूद लोगों ने तुरंत 108 एंबुलेंस और बिजलीघर को सूचना दी। मौके पर अखिलेश, जी-2 टीम, मीटर रीडिंग स्टाफ और लाइनमैनों ने मिलकर सुदेश को पीएचसी कलान पहुंचाया, जहां से बरेली रेफर कर दिया।

रेलवे पुल के नीचे मार्ग पर भरा गंदा पानी

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

तेल टंकी मोड पर रेलवे पुल मार्ग पर भरा गंदा पानी। ● अमृत विचार

● लोगों को निकलने में दिक्कत, रेल अधिकारी चुप्पी साधे

अमृत विचार: रेल प्रशासन यात्रियों की सुविधा के लिए तेल टंकी मोड़ पर फुट ओवरब्रिज का निर्माण कराया था। लोग पुल पार करके स्टेशन पर और स्टेशन रोड पर जा सके। पुल से पहले मार्ग पर गंदा पानी भरा हुआ है। लोग गंदे पानी से गुजकर जाते है। शिकायत करने के बाद रेल प्रशासन ध्यान नहीं दे रहा है।

रेल प्रशासन ने तेल टंकी मोड़ पर फुट ओवरब्रिज का निर्माण कराया था। रेल प्रशासन ने एक बोर्ड लगा रखा है, । यह पुल स्टेशन के प्लेटफार्म एक और स्टेशन रोड पर उतरता है। पुल से काफी संख्या में लोगों का आवागमन होता है। इस पुल से लोग स्टेशन पर जाते है और स्कूली व बच्चे निकलते है। महिलाएं कुटिया साहिब के लिए जाती है। टेलर्स की दुकान के पास पुल के मुख्य द्वार सड़क पर हमेशा पानी भरा रहता है। लोगों को निकलने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। लोग गंदे पानी के बीच निकलकर जाते है। पुल के नीचे रोड खस्ता हालत में है । स्थानीय लोगों ने बारिश का पानी नहीं बल्कि नालियों और एक शोरूम के निकास का पानी है। यहां पर हमेशा मार्ग पर पानी भरा रहता है। बदबू के कारण लोगों का निकला मुश्किल है। स्थानीय लोगों ने बताया कि रेल प्रशासन को कई बार मार्ग पर भरे पानी के बारे में अवगत कराया जा चुका है, लेकिन अधिकारी चुप्पी साधे बैठे है। स्थानीय अफसरों ने मुरादाबाद मंडल के अधिकारियों से शिकायत की है।

प्रधान के बेटे ने किशोरी से दुष्कर्म की कोशिश की

संवाददाता, रोजा/शाहजहांपुर

अमृत विचार: प्रधान पुत्र ने घर में घुसकर किशोरी से दुष्कर्म की कोशिश की। किशोरी ने शोर मचाया तो आरोपी मौका भाग गया। क्षेत्र के एक गांव के व्यक्ति ने थाना पर दी गई तहरीर में बताया कि एक माह पूर्व बच्चों को खेल सिखाने के लिए नौकरी निकली थी।

उसकी 16 वर्षीय पुत्री ने खेलकूद प्रतियोगिता में बच्चों के खिलाने के लिए आवेदन किया था। प्रधान का पुत्र उसकी बेटी पर दबाव बना रहा था। उसकी पुत्री से आरोपी ने कहा कि उसकी बात नहीं मानी तो सलेक्शन नहीं होने देंगे। आरोपी ने उसकी पुत्री से कहा कि यदि सलेक्शन कराना है तो मुझसे अकेले में मिलना पड़ेगा। वह उसकी बेटी से अश्लील बातें करता था। आरोप है कि 8 नवंबर को आरोपी ने उसकी पुत्री को फोन करके कहा कि उसकी बात नहीं मानी तो सलेक्शन नहीं होने देंगे। आरोपी की आवाज फोन में रिकॉर्ड है। उसकी पुत्री ने आरोपी से अकेले में मिलने से मना कर दिया। प्रभारी निरीक्षक राजीव कुमार ने बताया कि आरोपी आदित्य के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

पति पर दर्ज कराई मारपीट की रिपोर्ट

शाहजहांपुर, अमृत विचार: जलालाबाद थाना क्षेत्र के गांव मोहल्ला गांधीनगर निवासी लक्ष्मी ने थाना पर दी गई तहरीर में बताया कि उसकी शादी चार साल पहले पंकज निवासी कानूनगोयान थाना जलालाबाद से हुई थी।

आरोप है कि एक माह पूर्व पति ने जेवर रख लिया और मारपीट करके घर से निकाल दिया। पीड़िता किराए के मकान में रह रही है। आरोपी ने दो बार गर्भपात भी करा दिया था। वह घरों में घरेलू काम करके अपनी जीविका चला रही है। पुलिस ने आरोपी पति के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है। पुलिस मामले की विवेचना कर रही है।

न्यूज ब्रीफ

रुपये वापस मांगने पर वृद्ध को पीटा

सिंधौली, अमृत विचार : थाना क्षेत्र के गांव रखिया बुजुर्ग निवासी ऊषा देवी ने थाना पर दी गई तहरीर में बताया गांव में एक युवक से अपने रुपये मांगने के लिए गई। युवक ने उसे भुगतान के लिए एक चेक दे दिया। उसने चेक बैंक में जमा किया तो बाउंस हो गया। पीड़िता उसके घर पर दोबारा रुपये लेने के लिए गई आरोपी ने उसे पीटकर घायल कर दिया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है। पुलिस मामले की विवेचना कर रही है।

राजेंद्र गुप्ता आज आएंगे शाहजहांपुर

शाहजहांपुर, अमृत विचार : उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल के प्रदेश महामंत्री राजेंद्र गुप्ता रविवार को शाहजहांपुर पहुंचेंगे। उनका आगमन प्रात: 11 :30 बजे निर्धारित है। उन्हें बरेली मोड़ से वाहनों के साथ स्वागत करते हुए कार्यक्रम स्थल हिंदुस्तान मैरिज लॉन, गर्रा फाटक के निकट, लाया जाएगा। कार्यक्रम स्थल पर 12 :30 बजे उनकी प्रेस वार्ता आयोजित की जाएगी। इसके बाद संगठन के कार्यों की समीक्षा बैठक होगी, जो दोपहर 2 :30 बजे तक चलेगी।

चार ओवरलोड ट्रक किए सीज

शाहजहांपुर, अमृत विचार : शुक्रवार रात संयुक्त टीम ने सिंधौली से खुटार तक अवैध मिट्टी खनन और ओवरलोडिंग परिवहन पर सघन जांच अभियान चलाया। अभियान के दौरान ओवरलोडिंग में लिप्त चार ट्रक पकड़े गए। टीम ने इन वाहनों को थाने खुटार में सीज़ करते हुए परिवहन तथा माइनिंग की संबंधित धाराओं के अंतर्गत चालान की कार्रवाई की। अधिकारियों ने बताया कि क्षेत्र में अवैध खनन और ओवरलोडिंग पर निगरानी और भी कड़ी की जाएगी, ताकि नियमों का पालन सुनिश्चित हो सके।

बिरसा मुंडा की जयंती मनाई गई

शाहजहांपुर, अमृत विचार : जीएफ कॉलेज में शनिवार को स्वतंत्रता सेनानी और आदिवासी नायक बिरसा मुंडा की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम की शुरुआत प्राचार्य मोहसिन हसन खान द्वारा उनके चित्र पर माल्यार्पण कर हुई। प्राचार्य ने कहा कि बिरसा मुंडा एक महान समाज सुधारक और जननायक थे, जिन्होंने जनजातीय समाज में अंधविश्वास और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जागरूकता फैलाकर महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी नेतृत्व क्षमता और संघर्ष के कारण उन्हें आदिवासी समुदाय में "पृथ्वी का पिता" के रूप में सम्मान प्राप्त है।इसके बाद शिक्षकों और छात्र–छात्राओं ने भी उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। जयंती के अवसर पर महाविद्यालय में कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। रंगोली प्रतियोगिता में गौरी सिंह प्रथम, प्रियंका देवी द्वितीय और शिवांगी तृतीय रहीं। स्लोगन प्रतियोगिता में उमा केवट ने प्रथम, शिल्पी केवट ने द्वितीय और नितिन कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

युवा संसद में छात्रों ने दिखाई नेतृत्व क्षमता

स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय में युवा संसद प्रतियोगिता में छात्रों ने लिया भाग

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

- प्रतिभागियों की तर्कशक्ति और प्रस्तुति की सराहना
- संसदीय संवाद और नेतृत्व क्षमता पर जोर

युवा संसद प्रतियोगिता में प्रतिभागियों के बीच संवाद सत्र का दृश्य। • अमृत विचार

अमृत विचारः स्वामी शुकदेवानंद विधि महाविद्यालय में शुक्रवार को युवा संसद प्रतियोगिता का भव्य आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः 11 बजे पुष्पांजलि और दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। समारोह की अध्यक्षता स्वामी चिन्मयानंद ने की, जबकि राज्यसभा सांसद मिथिलेश कुमार मुख्य अतिथि और उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की सदस्य पुष्पा पांडे विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं।

प्राचार्य ने स्वागत उद्बोधन में युवा संसद की सार्थकता, लोकतांत्रिक संवाद की संस्कृति तथा विद्यार्थी जीवन में संसदीय समझ के महत्व पर प्रकाश डाला। परिचयात्मक सत्र के बाद सभापति ने प्रतियोगिता का औपचारिक शुभारम्भ किया। मंचासीन अतिथियों में प्रबंध समिति के सचिव अवनीश मिश्र, प्राचार्य जयशंकर ओझा, मृदुल शुक्ला और रंजना खंडेलवाल सहित अन्य गणमान्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रदीप कुमार सिंह ने किया।

समारोह अध्यक्ष स्वामी चिन्मयानंद ने कहा कि राष्ट्रहित सदैव व्यक्तिगत हित से ऊपर होता है। उन्होंने विद्यार्थियों को कर्तव्यनिष्ठा, अनुशासन और ऊर्जा के सकारात्मक उपयोग की प्रेरणा दी। साथ ही उन्होंने स्वामी शुकदेवानंद विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और राज्य सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के दौरान अवनीश मिश्र ने मुख्य अतिथि मिथिलेश कुमार का अंगवस्त्र से सम्मान किया। इसके बाद क्लाइंट काउंसलिंग संहिता को अतिथियों द्वारा हस्ताक्षरित कर औपचारिक रूप से अंगीकृत किया गया। यह संहिता प्रदीप कुमार सिंह व उनकी टीम द्वारा तैयार की गई है।

मुख्य अतिथि मिथिलेश कुमार ने कहा कि युवा लोकतांत्रिक व्यवस्था को सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। उन्होंने नई शिक्षा नीति, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य जागरूकता और गोबर आधारित जैविक खाद की महत्ता पर जोर देते हुए प्रतिभागियों को संसदीय प्रणाली की गहन जानकारी प्रदान की। विशिष्ट अतिथि पुष्पा पांडे ने प्रतिभागियों की तैयारी की सराहना करते हुए कहा कि युवा संसद में प्रस्तुत तर्क वास्तविक संसदीय स्तर के योग्य हैं। उन्होंने कहा कि महिला प्रतिभागियों की मजबूत उपस्थिति महिला सशक्तिकरण की दिशा में उत्साहजनक संकेत है। कार्यक्रम के अंत में सचिव अवनीश मिश्र ने कहा कि महाविद्यालय लगातार नए आयाम स्थापित कर रहा है। जिला एवं सत्र न्यायाधीश द्वारा विधिक सहायता केंद्र को प्रथम स्थान प्रदान किया जाना इसकी गुणवत्ता और सामाजिक उत्तरदायित्व का प्रमाण है। उन्होंने निर्णायकों, प्रतिभागियों, आयोजन समिति और छात्र-छात्राओं का धन्यवाद व्यक्त किया। समापन राष्ट्रगान की भावपूर्ण प्रस्तुति के साथ हुआ। प्रतियोगिता विद्यार्थियों में तर्कशक्ति, नेतृत्व क्षमता, संसदीय समझ और अभिव्यक्ति कौशल को प्रोत्साहित करने में अत्यंत सफल सिद्ध हुई ।

नन्हें कलाकारों की प्रस्तुतियों ने किया मंत्रमुग्ध

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

एसपी का स्वागत करते प्रबंधक।

- लोक नृत्यों और गतिविधियों ने बढ़ाया उत्साह

अमृत विचारः दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल शाहजहांपुर में शुक्रवार को भव्य कार्निवल और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ एसपी राजेश द्विवेदी, राज्यसभा सांसद मिथिलेश कुमार कठेरिया, एमएलसी सुधीर गुप्ता, एडीएम एफ एंड आर अरविंद कुमार, एआरटीओ सर्वेश कुमार, सीओ ट्रैफिक संजय कुमार और टीसीएस विनय कुमार पांडे द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया।

कार्यक्रम में नन्हें बच्चों ने स्वागत नृत्य, हरियाणवी, कश्मीरी, पहाड़ी और पंजाबी लोक नृत्य प्रस्तुत कर दर्शकों का दिल जीत लिया। बच्चों की मनमोहक प्रस्तुतियों से विद्यालय परिसर उत्साह और ऊर्जा से भर उठा। विद्यालय प्रांगण में लगाए गए आकर्षक स्टॉलों ने सभी का ध्यान खींचा। 'मॉम एंड मी' गतिविधि में माताओं और बच्चों ने मिलकर भाग लिया, जो कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रहा। कार्निवल ने विद्यार्थियों को अपनी कला, रचनात्मकता और प्रतिभा प्रदर्शित करने का मंच प्रदान किया। विजेताओं को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। समापन अवसर पर लकी ड्रॉ निकाले गए। राकेश कुमार यादव ने सभी अतिथियों, अभिभावकों और प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, आत्मविश्वास और सामूहिक भावना को प्रोत्साहित करते हैं ।

विभिन्न स्पर्धाओं के विजेताओं को किया गया पुरस्कृत

संवाददाता, पुवायां

- बाल दिवस पर आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम संपन्न

अमृत विचारः पं. जवाहरलाल नेहरू जन्मदिवस एवं बाल दिवस के अवसर पर आरएमएल ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स में दो दिवसीय विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान की चेयरमैन वर्षा गोस्वामी तथा नगर पालिका परिषद पुवायां के चेयरमैन संजय गुप्ता द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया।

इस दौरान आयोजित विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। संस्थान के प्राचार्य डा. नीरज कुमार तथा एचओडी डॉ. राजीव कुमार ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक हैं। बाल दिवस पर विद्यार्थियों ने खाद्य पदार्थों के आकर्षक स्टॉल लगाए, जिससे कार्यक्रम में उत्साह और रौनक बढ़ गई। वहीं छात्राओं ने जवाहरलाल नेहरू की जयंती पर सुंदर रंगोली बनाकर अपनी कला का प्रदर्शन किया। 14 और 15 नवंबर को आयोजित प्रतियोगिताओं में वॉलीबॉल, कबड्डी, खो-खो, बैडमिंटन, अंताक्षरी, नींबू दौड़, बोरा दौड़, शतरंज, कैरम, लूडो, म्यूजिकल चेयर, रस्साकशी और ई-स्पोर्ट्स जैसे अनेक खेल शामिल रहे। विजेताओं को बधाई देते हुए चेयरमैन संजय गुप्ता ने कहा कि खेलों से विद्यार्थियों में अनुशासन, एकता और आत्मविश्वास की भावना विकसित होती है और संस्थान ऐसे आयोजनों को निरंतर प्रोत्साहित करता रहेगा।

हजरत हातिम अली शाह का 52वां सालाना उर्स शुरू

तिलहर, अमृत विचारः तिलहर नगर के प्रसिद्ध सूफी संत हजरत हाजी हाफिज मोहम्मद हातिम अली शाह मियां का 52वां सालाना उर्स शरीफ शुरू हो गया है।

उर्स की सरपरस्ती सज्जादा नशीन इकबाल हुसैन उर्फ फूलमियां कर रहे हैं। दरगाह मोहल्ला कच्चा कटरा पर पहुंचकर अकीदतमंदों ने हाजिरी दी और दुआएं मांगी। उर्स का आगाज 16 नवंबर की सुबह कुरानखानी के साथ हुआ। शाम को होने वाले जलसे में मौलाना जाकिर हुसैन नईमी मुरादाबाद, मौलाना अकील उर रहमान, कारी अली अहमद, हाफिज अब्दुल मतीन, कारी निजामुद्दीन, कारी मखदूम अशरफ बनारसी और मौलाना जुबेर अहमद रजवी शिरकत करेंगे। 17 नवंबर को सुबह 10:30 बजे कुल शरीफ होगा, जिसके बाद दिन में कव्वाली और रात में भी कव्वाली का आयोजन होगा।

फूड स्टॉल, कला प्रदर्शनी रही आकर्षण का केंद्र

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

बाल मेले में एडीएम अरविंद कुमार व व्यापार मंडल के महानगर अध्यक्ष सचिन बाथम। • अमृत विचार

- बाल दिवस पर आयोजित प्रदर्शनी का एडीएम वित्त ने की सराहना

अमृत विचारः ऑल सेंट्स स्कूल शाहजहांपुर में 15 नवंबर 2025 को बाल मेला आयोजित किया गया। विद्यालय परिसर रंग-बिरंगी सजावट, आकर्षक स्टॉलों और बच्चों के उत्साह से सराबोर रहा। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रधानाचार्या साक्षी रस्तोगी ने दीप प्रज्वलन कर किया। मुख्य अतिथि के रूप में एडीएम एफ एंड आर अरविंद कुमार उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि ने मेले में लगाए गए विभिन्न स्टॉलों, प्रोजेक्टों और गतिविधियों का बारीकी से निरीक्षण किया। उन्होंने बच्चों से बातचीत कर उनके कार्यों की जानकारी ली और उनकी मेहनत व आत्मविश्वास की सराहना की। विद्यालय प्रबंधन से तनुजा बाथम, सागर बाथम और शगुन बाथम विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। डायरेक्टर सचिन बाथम ने कहा कि ऐसे मेले बच्चों की प्रतिभा निखारने का प्रभावी मंच हैं। यह नेतृत्व क्षमता, टीमवर्क और व्यावहारिक ज्ञान को मजबूत करता है। उनके प्रेरणादायक शब्दों से विद्यार्थियों और शिक्षकों का उत्साह बढ़ा।

मेले में फूड स्टॉल, आर्ट एंड क्राफ्ट प्रदर्शनी, गेम जोन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने सभी का ध्यान आकर्षित किया। चाट, गोलगप्पे, मोमोज, नूडल्स, छोले भटोरे सहित विभिन्न व्यंजनों के स्टॉलों पर बच्चों ने जिम्मेदारी के साथ सेवा दी। कला प्रदर्शनी में पेंटिंग, सजावटी सामान, बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट मॉडल, मिट्टी के खिलौने और पेपर क्राफ्ट की सभी ने सराहना की।कार्यक्रम के अंत में लकी ड्रॉ के विजेताओं को एडीएम अरविंद कुमार ने उपहार प्रदान किए और विद्यालय प्रबंधन, शिक्षकों तथा प्रशिक्षकों को सफल आयोजन पर बधाई दी। आयोजन श्रुति बाजपेई और अश्वनी सक्सेना की देखरेख में हुआ। शिक्षिका रूबी गुप्ता का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम में व्यापार मंडल से नारायण दास अग्रवाल, आकाशदीप गुप्ता, अमित शर्मा, सुशील दीक्षित, महेंद्र दुबे तथा स्कूल स्टाफ से शुभा, श्रेस्थि, इरम, सोनाली, रीना, अंजलि, प्रियंका, नेहा, मेघा, अजीम और आंशिका आदि का सहयोग रहा। विद्यालय परिवार ने सभी अतिथियों, अभिभावकों और विद्यार्थियों का आभार व्यक्त कर कार्यक्रम का समापन किया ।

किशोरी का युवक ने किया अपहरण, रिपोर्ट

सिंधौली, अमृत विचार : थाना क्षेत्र के एक गांव के व्यक्ति ने थाना पर दी गई तहरीर में बताया कि 11 नवंबर को उसकी 13 वर्षीय पुत्री को गांव का एक युवक अगवा करके ले गया है। उसकी पुत्री घर से जेवर ओर 50 हजार रुपये लेकर गई है। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर ली है। पुलिस आरोपी की तलाश कर रही है।

छात्रों ने वैज्ञानिक सोच और रचनात्मकता दिखाई

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

- विभिन्न कक्षाओं ने विषयवार आकर्षक मॉडल छात्रों ने बनाए

अमृत विचारः हरिप्यारी सरस्वती विद्या मंदिर सीनियर सेकेंडरी स्कूल में बाल दिवस के अवसर पर विज्ञान प्रदर्शनी का शानदार आयोजन हुआ। प्ले ग्रुप से कक्षा 7 तक के विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ भाग लिया और विभिन्न विषयों पर ज्ञानवर्धक मॉडल प्रस्तुत किए।

प्ले ग्रुप के बच्चों ने कविता और गतिविधियों की मनमोहक प्रस्तुति दी। नर्सरी वर्ग के विद्यार्थियों ने सब्जियों के लाभ से जुड़े मॉडल बनाकर स्वास्थ्य जागरूकता का संदेश दिया। एलकेजी के बच्चों ने फलों के लाभ, खरीद–फरोख्त और नकद संग्रह मशीन (एटीएम) का प्रदर्शन किया। यूकेजी वर्ग ने जंक फूड और कृत्रिम खाद्य पदार्थों से होने वाले नुकसान पर संदेशात्मक मॉडल तैयार किए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि और निर्णायक के रूप में ओमप्रकाश मिश्रा (अपर जिला जज) तथा रश्मि बहल मौजूद रहीं। दोनों ने बच्चों की मेहनत, रचनात्मकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की प्रशंसा करते हुए परिणाम घोषित किए। पुरस्कार वितरण मुख्य अतिथियों और विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों-रितेश कुमार आनंद (प्रबंधक), रमेश चंद्र सक्सेना (अध्यक्ष), राकेश अग्रवाल, भुवनेश गुप्ता, कृष्ण कुमार गर्ग और रवि मिश्र-द्वारा किया गया। प्रधानाचार्या ज्योति शुक्ला ने सभी अतिथियों और अभिभावकों का धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन बच्चों में वैज्ञानिक सोच, आत्मविश्वास और नवाचार की भावना को बढ़ावा देते हैं। कार्यक्रम अत्यंत सफल रहा और सभी ने बच्चों के प्रयासों की सराहना की।

डीएम ने परशुराम मंदिर के निर्माण कार्य का किया निरीक्षण

शाहजहांपुर, अमृत विचारः जिलाधिकारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह ने शनिवार को जलालाबाद स्थित भगवान परशुराम मंदिर और रामताल के सौंदर्यीकरण कार्यों का निरीक्षण किया। जिलाधिकारी ने मंदिर परिसर में सत्संग भवन, ट्रस्ट कार्यालय, पुजारी कक्ष और सीसी रोड निर्माण कार्यों की प्रगति देखी।

निरीक्षण के दौरान उन्होंने निर्देश दिए कि रामताल के पास बन रही बाउंड्री वॉल पर आकर्षक चित्रकारी कराई जाए। उन्होंने सीसी रोड और अन्य निर्माण कार्यों का अवलोकन करते हुए शेष बचे कार्यों को जल्द पूरा करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने स्पष्ट कहा कि सभी निर्माण कार्य गुणवत्ता, समय-सीमा और निर्धारित मानकों के अनुरूप कराए जाएं। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री का उपयोग अनिवार्य है और किसी भी प्रकार की लापरवाही या ढिलाई बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

खन्नौत नदी संरक्षण के लिए किया स्थलीय सर्वे

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

- लोधीपुर घाट से हनुमतधाम तक पैदल भ्रमण कर देखा अतिक्रमण

अमृत विचारः नगर आयुक्त डॉ. बिपिन कुमार मिश्र ने लोक भारती शाहजहांपुर टीम के साथ खन्नौत नदी के उत्थान और पुनरुद्धार के लिए लोधीपुर घाट से हनुमतधाम नए पुल तक अपस्ट्रीम में बाई तरफ के घाट का स्थलीय निरीक्षण किया। नगर आयुक्त के नेतृत्व में टीम ने पैदल चलकर नदी किनारे हुए अतिक्रमण का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान नदियों के किनारे पौधरोपण के माध्यम से प्राकृतिक रिवर फ्रंट विकसित करने पर विस्तृत चर्चा की गई। पिछले दो वर्षों में आई बाढ़ से जनहानि को ध्यान में रखते हुए गर्रा और खन्नौत नदी को भविष्य की पीढ़ियों के लिए अविरल और निर्मल बनाए रखने का संकल्प व्यक्त किया गया।

नगर आयुक्त ने राजस्व और संपत्ति टीमों, सदर तहसील के राजस्व विभाग, सिंचाई विभाग तथा शाहजहांपुर विकास प्राधिकरण को नदी क्षेत्र का सीमांकन कर अवैध कब्जों को हटाने के निर्देश दिए। पदयात्रा का समापन नदी को स्वच्छ रखने के सामूहिक संकल्प के साथ हुआ।

इस अवसर पर संयुक्त नगर आयुक्त संगीता कुमारी, महाप्रबंधक जल विजय नारायण मौर्य, पार्षद डीएस चौहान, जलकल विभाग के अवर अभियंता, राजस्व टीम, संपत्ति विभाग, प्रवर्तन दल और लोक भारती संस्था से विजय पाठक, संत किशोर त्रिपाठी, आलोक कुमार मिश्र, फतेह बहादुर सिंह, प्रेमपाल सिंह, शिवम अवस्थी, सैफ सिद्दीकी तथा अनिमेटर्स की टीम मौजूद रही।

अपर आयुक्त बरेली ने किया पुवायां मंडी का निरीक्षण

पुवायां, अमृत विचारः बरेली मंडल के अपर आयुक्त प्रीति जायसवाल ने शनिवार देर शाम पुवायां मंडी के धान क्रय केंद्रों का औचक निरीक्षण किया। उनके निरीक्षण की जानकारी स्थानीय प्रशासन को पहले से नहीं थी, जिसके चलते अधिकारी वर्ग में हड़कम्प मच गया।

सूचना मिलते ही एडीएम प्रशासन जितेंद्र कुमार मिश्रा और एसडीएम पुवायां चित्रा निर्वाल मौके पर पहुंचे। अपर आयुक्त ने धान खरीद से जुड़े दस्तावेजों, स्टॉक, वजन, गुणवत्ता और किसानों को होने वाली भुगतान प्रक्रिया सहित विभिन्न बिंदुओं की गहन जांच की। दस्तावेजों की पड़ताल देर रात तक चलती रही। निरीक्षण के दौरान केंद्र प्रभारियों और बिचौलियों में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। सभी किसी संभावित कार्रवाई की आशंका में पूरे समय निगरानी मोड पर रहे।

Lifelines MEDICAL OF BAREILLY अमृत विचार एक सम्पूर्ण अखबार
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें :- 8445507002

फोकस नेत्रालय
राजेन्द्र नगर, बरेली 731-098-7005
● 40,000 से अधिक सफल सर्जरी सम्पन्न
● बिना इंजेक्शन एनेस्थीसिया (केवल आई ड्राप्स द्वारा)
● आयुष्मान/सीजीएचएस/ईसीएचएस/सीएपीएफ सभी स्वास्थ्य बीमा मान्य
● कैशलेस ईलाज
बरेली का सबसे बड़ा केवल आँखों के लिए समर्पित प्राइवेट अस्पताल ...
नवीनतम AI तकनीक एवं NABH मान्यता के साथ

डॉ. नितिन अग्रवाल
एम.डी. (गोल्ड मेडिलिस्ट), डी.एम. (कार्डियोलॉजी)
हृदय रोग विशेषज्ञ मो. 9457833777
2D ECHO + TMT
हृदय रोग के लक्षण : ■ घबराहट ■ छाती में दर्द या भारीपन ■ सांस फूलना ■ पैरों में सूजन ■ हाई ब्लडप्रेशर ■ हाई कोलेस्ट्रोल ■ डाइबिटीज (शुगर) ■ सीने या पेट में जलन या दर्द ■ हार्ट अटैक ■ हार्ट फेल
APPLE CARDIAC CARE DR NITIN AGARWAL'S HEART CLINIC
ए-3, एकता नगर, केयर अस्पताल के सामने, स्टेडियम रोड, बरेली। सम्पर्क करें:- 9458888448

डॉ. हारिस अंसारी
एम.एस., एम.सी.एच. (यूरोलॉजी)
Consultant Urologist & Andrologist
गुर्दा, प्रोस्टेट, पेशाब की थैली की पथरी व कैंसर सर्जन
● प्रोस्टेट (गदूद का आपरेशन) (TURP) ● गुर्दे की पथरी का आपरेशन (PCNL) ● गुर्दे की नली (यूरेटस) की पथरी का ऑपरेशन (URSL) ● पेशाब के समस्त प्रकार के रोगों का इलाज
कैशलेस, इंश्योरेंस, TPA व ESI आयुष्मान से अनुबन्धित अस्पताल
डॉ. एम. खान हॉस्पिटल
मल्टी स्पेशलिटी व क्रिटिकल केयर सेन्टर स्टेडियम रोड, निकट सेंट फ्रांसिस स्कूल, बरेली
समय दोपहर 12 से शाम 4 बजे तक हेल्पलाईन 9837549348, 98978382286

ससुरालियों पर दर्ज कराई दहेज प्रताड़ना की रिपोर्ट

शाहजहांपुर, अमृत विचारः जलालाबाद थाना क्षेत्र के मोहल्ला गौटिया निवासी रिंकी ने थाना पर दी गई तहरीर में बताया उसकी शादी एक साल पहले उपदेश निवासी पहाड़पुर थाना शमशाबाद जिला फर्रुखाबाद के साथ हुई थी।

मायके वालों ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार दहेज दिया था। दहेज के लिए ससुराल वाले प्रताड़ित करने लगे। एक दिन ससुराल वालों ने मकान की छत से धक्का देने का प्रयास किया था। आरोप है कि तीन माह पूर्व ससुराल वालों ने घर से निकाल दिया। पुलिस पति समेत सात के खिलाफ दहेज उत्पीड़न की रिपोर्ट दर्ज कर ली है। पुलिस मामले की विवेचना कर रही है।

शुकदेवानंद कॉलेज में मनाया जनजातीय गौरव दिवस

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

- विचार गोष्ठी में बिरसा मुंडा के योगदान पर चर्चा

अमृत विचारः अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद शाहजहांपुर महानगर ने भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय में विचार गोष्ठी का आयोजन किया। डॉ . अनुराग अग्रवाल ने विद्यार्थियों को बिरसा मुंडा के बारे में बताते हुए कहा कि वे भारतीय आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी और मुंडा जनजाति के लोकनायक थे। उन्होंने 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बंगाल प्रेसीडेंसी (वर्तमान झारखंड) में आदिवासी धार्मिक सहस्राब्दी आंदोलन का नेतृत्व किया और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आदिवासी समाज उन्हें भगवान और धरती आबा के नाम से सम्मान देता है।

महानगर अध्यक्ष रानू दुबे ने कहा कि बिरसा मुंडा ने वैष्णव धर्म की दिशा में प्रेरित करते हुए जनजातीय समाज में व्याप्त अंधविश्वासों को दूर करने का प्रयास किया।कार्यक्रम में बरखा सक्सेना, जिला संयोजक एसएफडी वैभव सक्सेना, नगर मंत्री आशुतोष मिश्रा, अभिरेन्द्र त्रिपाठी, हिमांशु सक्सेना, रीवा वर्मा, आंषि आस्थाना, श्रेया मिश्रा सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे ।

त्रिवेणी एक्सप्रेस में महिला का नकदी-जेवर समेत पर्स चोरी

शाहजहांपुर, अमृत विचारः त्रिवेणी एक्सप्रेस से एक महिला परिवार के साथ लखनऊ से शाहजहांपर आ रही थी। ट्रेन से महिला का नकदी, जेवर और मोबाइल समेत पर्स चोरी हो गया। लखनऊ के वृंदावन बिहार कालोनी निवासी दीप्ती गुप्ता ने जीआरपी थाना पर दी गई तहरीर में बताया कि शनिवार सुबह लखनऊ से त्रिवेणी एक्सप्रेस में सवार हुई। आलमनगर रेलवे स्टेशन पर किसी अज्ञात व्यक्ति ने उसका पर्स चुरा लिया। पर्स में पांच हजार रुपये, चार चांदी की पायल, बिछुए, सोने की झुमकी, पांच हजार रुपये थे। जीआरपी थाना प्रभारी ने बताया कि अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज करके लखनऊ जीआरपी को ट्रांसफर कर दिया गया है।

बाल दिवस पर बच्चों ने लगाया मेला

संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचारः बाल दिवस के उपलक्ष्य में मॉडल ग्राम पंचायत भटपुरा रसूलपुर स्थित जमुना वाटिका प्रांगण में जेपी पब्लिक स्कूल में मेले का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन अजय प्रताप यादव ने नेहरू के चित्र पर माल्यार्पण और फीता काटकर किया।

ग्राम प्रधान अनिल कुमार गुप्ता ने अजय प्रताप का स्वागत किया।अजय प्रताप ने कहा कि जेपी पब्लिक स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रहा है। इस विद्यालय में क्षेत्र के लगभग 100 ग्रामों से बच्चे शिक्षा ग्रहण करने आते हैं, जो मॉडल ग्राम पंचायत के लिए गर्व की बात है। मेले में बच्चों ने अलग-अलग थीम पर स्टॉल लगाए। अबूबकर द्वारा सजाई गई पौधों की दुकान विशेष आकर्षण रही, जिनके पौधे ऊंचे दामों पर पसंद किए गए। बच्चों ने क्राफ्ट एक्टिविटी में भी सुंदर मॉडल और प्रोजेक्ट प्रस्तुत किए। प्रोजेक्ट निर्माण में अधीरा, आराध्या गुप्ता, शिफा, सुबहाना, नव्या गुप्ता, आदित्य कटियार और अरुण उत्कृष्ट रहे। इन्हें अजय प्रताप, संरक्षक शाहनवाज खां एडवोकेट, अध्यक्ष रजनी गुप्ता, महासचिव विकास सक्सेना और कोषाध्यक्ष महेंद्र दुबे द्वारा पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

न्यूज ब्रीफ

कोषागार ने जमा करें जीवित प्रमाण पत्र

बदायूं, अमृत विचार : वरिष्ठ कोषाधिकारी विकास चौधरी ने बताया कि पेंशन प्राप्त कर रहे पेंशनर्स जिनकी पेंशन जीवित प्रमाण-पत्र समय पर न देने के कारण वंचित हो गई है। अथवा समय सीमा समाप्त हो गई है। वह अपना जीवित प्रमाण पत्र कोषागार कार्यालय में किसी भी कार्यदिवस में स्वयं उपस्थित होकर अथवा ऑनलाइन जीवन प्रमाण पत्र की बेबसाइट पर अपलोड करें।

ट्रैक्टर पलटने से युवक की दबकर मौत

बदायूं, अमृत विचार : कादरचौक थाना क्षेत्र के गांव कादरबाड़ी निवासी सरदार खान (24) पुत्र तेज खान शुक्रवार रात गंगा की कटरी क्षेत्र में ट्रैक्टर से जमीन की जुताई कर रहे थे। साथ में उनके परिवार के लोग भी थी। इसी दौरान ट्रैक्टर पलट गया। सरदार खान ट्रैक्टर की चपेट में आ गए। मौके पर ही उनकी मौत हो गई। साथ में काम कर रहे परिवार के लोगों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। जहां परिजनों ने बताया कि रात में तीन लोगों ने मौके पर आकर फायरिंग शुरू कर दी थी। वह लोग डर के भागे तो ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर पलटा था। उन लोगों से जमीन का विवाद चल रहा है।

मिट्टी खाकर बीमार हो रहे गोवंश

उसहैत, अमृत विचार : विश्व हिंदू महासंघ भारत के जिलाध्यक्ष अनुज गुप्ता को लोगों ने शनिवार को सूचना दी कि खाली प्लॉट में बीमार गोवंश भूख के कारण मिट्टी खा रहा है। अनुज गुप्ता ने नगर अध्यक्ष सफल गुप्ता को इसकी जानकारी दी। जिसके बाद पशु चिकित्सक को बुलाया गया। नगर पंचायत को सूचना देकर गाड़ी मंगाई गयी। नगर पंचायत के वाहन से किसी तरह बीमार गौवंश को पशु अस्पताल ले जाया गया। जहां गौवंश का उपचार शुरू किया गया। चेयरमैन नवाब हसन द्वारा गौवंश को साहपुर रोड स्थित गौशाला भिजवाया गया। इस मौके पर जिला अध्यक्ष अनुज गुप्ता, कृष्णा गुप्ता, अनुराग गुप्ता, छविराम गोस्वामी, अभय गुप्ता, रामदास वाल्मीकि आदि मौजूद रहे।

समाधान दिवसः डीएम ने 3 शिकायतें कीं निस्तारित

तहसील दिवस में शिकायत सुनते डीएम अवनीश कुमार राय। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचारः शनिवार को संपूर्ण समाधान दिवस तहसील दातागंज में संपन्न हुआ। समाधान दिवस में आई 40 शिकायतों में जिलाधिकारी अवनीश राय ने तीन का मौके पर निस्तारण किया। शेष का अधिकारियों का निस्तारित के आदेश दिए।

सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 40 शिकायती पत्र प्राप्त हुए। जिनमें से 03 का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया। शेष शिकायती एवं प्रार्थना पत्रों का सम्बंधित अधिकारियों को गुणवत्तापरक व समयबद्ध निस्तारण करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर सीडीओ केशव कुमार सहित अन्य विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

इस बार बोर्ड की परीक्षा में घट सकती है केंद्रों की संख्या

हाईस्कूल व इंटर के बोर्ड परीक्षा कार्यक्रम में परिवर्तन

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

● पिछली बार हुई बोर्ड परीक्षा में बनाए गए थे 99 केंद्र

अमृत विचारः हाल के दिनों में माध्यमिक शिक्षा परिषद ने हाईस्कूल, इंटरमीडिएट बोर्ड परीक्षा कार्यक्रम जारी किया था। जिसमें संशोधन किया गया है। संशोधित कार्यक्रम वेबसाइट पर दिख रहा है। संशोधित परीक्षा कार्यक्रम के तहत हिंदी और प्रारंभिक हिंदी के पेपर का समय में बदला गया है। इंटरमीडिएट संस्कृत के पेपर की नई तिथि तय की गई है।

संशोधित कार्यक्रम के तहत कक्षा 10 के लिए हिंदीप्रारंभिक हिंदी दोनों पेपर की परीक्षा 18 फरवरी को सुबह की पाली में होगी। नए परीक्षा कार्यक्रम में तीन पेपर की तिथि बदली गई है। बाकी परीक्षाएं पहले घोषित कार्यक्रम के अनुसार आयोजित की जाएंगी।

जिला विद्यालय निरीक्षक ने बताया कि माध्यमिक शिक्षा परिषद की ओर से बोर्ड परीक्षा के कार्यक्रम में बदलाव किया है। तीन पेपरों की तिथि और समय बदला गया है। इंटरमीडिएट सामान्य हिंदी और हिंदी दोनों की परीक्षा 18 फरवरी को दोपहर की पाली में होगी। कक्षा 12 की संस्कृत की जो परीक्षा पहले 20 फरवरी को सुबह की पाली में निर्धारित की गई थी, वह अब 12 मार्च को दोपहर की पाली में होगी।

> परीक्षा केंद्र निर्धारण की प्रक्रिया शुरू हो गई है। 307 स्कूलों के द्वारा आधारभूत सूचनाएं अपलोड की गई हैं। स्कूलों का सत्यापन गठित समितियों के द्वारा किया जा रहा है। सत्यापन होने के बाद परीक्षा केंद्र निर्धारित कर दिए जाएंगे। परीक्षा केंद्रों के चयन के बाद सुरक्षा व्यवस्था, सीसीटीवी कैमरों से निगरानी और परीक्षा सामग्री की उपलब्धता के लिए भी विशेष प्लान तैयार किया जाएगा, ताकि इस बार परीक्षा बिना किसी व्यवधान के शांतिपूर्वक संपन्न कराई जा सके।
> -लालजी यादव, जिला विद्यालय निरीक्षक

डीआईओएस ने बताया कि माध्यमिक शिक्षा परिषद ने संशोधित परीक्षा कार्यक्रम वेबसाइट पर अपलोड कर दिया है। जिसे देखा जा सकता है। वहीं जिला विद्यालय निरीक्षक ने बताया कि परीक्षा कार्यक्रम घोषित होने के बाद केंद्र निर्धारण की प्रक्रिया में तेजी आई है। दिसंबर माह के प्रथम सप्ताह तक केंद्र निर्धारित कर सूची प्रकाशित कर दी जाएगी। बताया कि इस बार बोर्ड परीक्षा में परीक्षार्थियों की संख्या घटी है। संभव है इस बार कम संख्या में परीक्षा केंद्र बनाए जाएं।

इस बार बन सकते हैं 97 परीक्षा केंद्र

यूपी बोर्ड की आगामी परीक्षा को देखते परीक्षा केंद्रों के निर्धारण की प्रक्रिया अंतिम चरण में पहुंच गई है। इस बार 97 विद्यालयों को परीक्षा केंद्र बनाने की तैयारी की जा रही है। इन विद्यालयों का चयन पूरी तरह से निर्धारित मानकों के आधार पर किया जाएगा। गत वर्ष हुई बोर्ड की परीक्षा में 99 कॉलेजों को परीक्षा केंद्र बनाया गया था। इस बार बोर्ड परीक्षा में करीब नौ परीक्षार्थी कम हुए हैं इसलिए बच्चों की संख्या घटने की वजह से परीक्षा केंद्रों की संख्या भी घट सकती है इस पर विचार किया जायेगा। इस बार करीब 97 कॉलेजों को ही परीक्षा केंद्र बनाया जा सकता है।

डिजिटल एक्सरे मशीन बंद, मरीज परेशान

आईसीयू में मरीजों को नहीं किया जा रहा भर्ती, अल्ट्रासाउंड भी नहीं हो रहे, राजकीय मेडिकल कॉलेज में व्यवस्था ध्वस्त

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : जनपद में स्वास्थ्य सेवाएं पूरी तरह चरमरा गयी हैं। जिला अस्पताल से लेकर राजकीय मेडिकल कालेज में मरीजों को कई तरह की परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। सरकारी अस्पताल में कई दिनों से डिजिटल एक्सरे मशीन बंद है, वहीं मेडिकल कॉलेज में आईसीयू में मरीजों को भर्ती नहीं किया जा रहा है। ओपीडी में मरीज समय से नहीं पहुंच रहे हैं। तमाम शिकायतों के बाद भी जिम्मेदार मौन साधे बैठे हैं।

पिछले काफी समय से बुखार के मरीजों की संख्या बढ़ रही है। सरकारी अस्पतालों में हर दिन सैकड़ों मरीज पहुंच रहे हैं। लेकिन सरकारी सिस्टम की लाचारी मरीजों को परेशान कर रही है। जिला अस्पताल में पिछले कई दिनो से डिजिटल एक्सरे नहीं हो रहे हैं। जबकि डॉक्टर मरीजों को डिजिटल एक्सरे कराने को लिख रहे हैं। शनिवार को डिजिटल एक्सरे कराने पहुंचे लोगों ने बताया कि वह कई दिनो से यहां आ रहे हैं। डिजिटल एक्सरे की फिल्म न होने की बात कह कर मरीजों को लौटा दिया जाता है। आज भी कई दर्जन मरीज सुबह नौ बजे से खड़े हैं। लेकिन डिजिटल एक्सरे रूम नहीं खोला गया है। काफी मरीज लौट चुके हैं। यहां पर कोई कुछ भी बताने को तैयार नहीं है। डिजिटल एक्सरे न होने से मरीजों को दवा भी नहीं दी जा रही है। मरीजों का कहना है कि अस्पताल प्रशासन से कुछ मरीजों ने शिकायत भी की मगर कुछ नहीं किया गया।

> अल्ट्रासाउंड करने वाले रेडियोलॉजिस्ट कुछ समय से छुट्टी पर हैं इसलिए महिलाओं के अल्ट्रासाउंड नहीं हो पा रहे हैं। जबकि डिजिटल एक्स रे की फिल्म खतम हो गयी है। एक दो दिन में नई फिल्म आ जाएगी तभी डिजिटल एक्सरे होने शुरू हो जाएंगे।
> -डॉ. अमित वार्ष्णेय, सीएमएस, जिला अस्पताल

डिजिटल एक्सरे रूम के निकट ही अल्ट्रासाउंड कक्ष है। इस कक्ष में महिलाओं के अल्ट्रासाउंड किए जाते हैं। कई दिन से महिलाओं के अल्ट्रासाउंड नहीं किए गए हैं। महिलाएं इंतजार करने के बाद वापस लौट जाती हैं। कुछ महिला मरीजों ने बताया कि चार दिन से लगातार चक्कर लगा रहीं हैं मगर अल्ट्रासाउंड रूम बंद रहता है। आज भी सुबह से बैठे हैं। अब घर लौटना पड़ रहा है।

डिजिटल एक्सरे मशीन बंद, बाहर खड़े मरीज। ● अमृत विचार

राजकीय मेडिकल कालेज में आईसीयू बंद

राजकीय मेडिकल कालेज में पिछले पन्द्रह दिन से आईसीयू बंद चल रहा है। उसमें मरीजों को भर्ती नहीं किया जा रहा है। यहां पर आने वाले गंभीर मरीजों को बरेली आगरा या फिर लखनऊ को रेफर कर दिया जाता है। राजकीय मेडिकल कालेज के जिम्मेदारों का कहना है कि आईसीयू मे डॉक्टर तो हैं लेकिन अभी कुछ तकनीकी कमियों के चलते समस्या आ रही है। जल्द ही इसका निस्तारण कर लिया जाएगा।

ओपीडी में नहीं मिलते डॉक्टर

राजकीय मेडिकल कालेज की ओपीडी में सुबह आठ से दो बजे तक डॉक्टरों के बैठने का समय निर्धारित किया गया है। लेकिन अधिकांश डॉक्टर दस बजे ओपीडी में पहुंचते हैं और एक बजे तक बाहर निकल जाते हैं। मरीजों का कहना है कि सुबह को देर से आने के बाद भी जल्द ही ओपीडी से चले जाते हैं। जिससे दूर दराज से आने वाले मरीजों को दवा नहीं मिल पाती है और उन्हें परेशानी का सामना करना पडता है। राजकीय मेडिकल कालेज प्रशासन का कहना है कि डॉक्टर नियमित ओपीडी में पहुंच रहे हैं। कभी देर भी हो सकती है।

डिब्बा सहित तौली जा रही मिठाई, देना पड़ा जुर्माना

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

● गैस एजेंसी के कांटे में मिली अनियमिताएं

● बाट माप अधिकारियों ने चेक किए कांटे

अमृत विचारः मिठाई विक्रेताओं के द्वारा नियमों को ताक पर रखकर मिठाई की कीमत में डिब्बे की बिक्री की रही है। दुकानदार ग्राहकों के साथ खुलेआम ठगी कर हैं। ज्वेलर्स के द्वारा भी नियमों का पालन नहीं किया जा रहा है। इनके साथ साथ अन्य स्थानों पर घटतौली की जा रही है। इन सभी के खिलाफ कार्रवाई करते हुए बाट माप विभाग ने एक लाख से अधिक का जुर्माना लगाया है।

मिठाई विक्रेता मिठाई के साथ साथ उसी कीमत में डिब्बे का दाम भी वसूल रहे हैं। आम तौर जब भी कोई व्यक्ति दुकान पर पहुंचकर मिठाई खरीदने के बाद डिब्बे में मिठाई लेकर चला जाता है। इस पर कम ध्यान देता है कि डिब्बे का वजन 50 से 200 ग्राम तक होता है। ऐसे में वह मिठाई की कीमत में डिब्बा खरीदता है। जिसकी शिकायतें बाट माप विभाग तक पहुंच रही थीं। ऐसी ही शिकायतें अन्य दुकानदारों के द्वारा तौल में की जा रही मनमानी को लेकर बाट माप विभाग के पास पहुंच रही थीं। इन शिकायतों पर गौर करते हुए बाट माप विभाग के अधिकारी ने शहर में संचालित दर्जनभर से अधिक दुकानों का निरीक्षण किया। मिठाई विक्रेताओं के द्वारा तौल मे नियमों का पालन नहीं किया जा रहा था। इन सभी दुकानदारों पर विभाग अधिकारी जुर्माना डाला है। वहीं सर्राफा बाजार में पहुंचकर ज्वैलर्स के कांटे चेक किए। ज्वैलर्स के तौल उपकरण मानक के अनुसार नहीं पाए गए। वहीं इंडेन गैस एजेंसी का कांटा भी सही नहीं पाया गया। इन सभी पर बाट माप अधिकारी विनीत कुमार पांडेय ने एक लाख से अधिक का जुर्माना डाला है।

बाट माप अधिकारी ने बताया कि कहीं भी दुकानदारों के द्वारा तौल में नियमों का पालन नहीं हो रहा है तो उपभोक्ता शिकायत दर्ज करा सकते हैं। प्रत्येक तहसील क्षेत्र में बाट माप नियमों का पालन कराने के लिए कांटे बाट की चेकिंग के लिए अभियान चलाया जा रहा है। इसी के तहत कार्रवाई की जा रही है।

ई-गुरुकुल कॉलेज में कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर हुआ सेमिनार

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : ई-गुरुकुल कॉलेज में कृत्रिम बुद्धिमत्ता विषय पर भव्य सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरंभ कॉलेज निदेशक विकास माहेश्वरी और रिया माहेश्वरी ने किया।

सेमिनार को संबोधित करते हुए कॉलेज के निदेशक ने कहा कि आने वाले समय में ई-गुरुकुल कॉलेज विद्यार्थियों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रशिक्षण देकर उन्हें रोजगार व स्वरोजगार से जोड़ने के लिए संकल्पित है। इस तकनीक से विद्यार्थी अधिक अंक प्राप्त कर सकते हैं। व्यापारी अपने व्यवसाय का विस्तार कर सकते हैं और शासन-प्रशासन भी अपने कार्यों में इस तकनीक को प्राथमिकता दे रहे हैं।

कार्यक्रम में छात्र ऋषभ ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमें अपने सपनों को साकार करने की शक्ति देती है। छात्रा सोनम ने कहा कि भविष्य में इसके बिना आगे बढ़ पाना संभव नहीं होगा। छात्रा आयुषी ने कहा कि यह अब हमारे जीवन का आवश्यक अंग बन चुका है और हमारी अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा।

सेमिनार में कोचर ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विविध उपयोगों तथा महत्वपूर्ण साधनों के विषय में विस्तृत जानकारी दी। रीतु बत्रा, मुस्कान और प्रतीक ने भी जनसमूह को संबोधित किया। विद्यार्थियों को प्रतीक चिंह्न देकर सम्मानित किया। प्रशिक्षक एकता सपरा, मीनू कालरा, नैना देवल, ओम वशिष्ठ, अभिषेक आर्या, अनिरुद्ध मिश्र, आगाज संस्था के अध्यक्ष नितिन गुप्ता का सहयोग रहा। संचालन आमिर सुल्तानी ने किया।

सेमिनार के दौरान मौजूद छात्र-छात्राएं। ● अमृत विचार

● कार्यक्रम के बाद प्रतिभागियों को प्रतीक चिह्न देकर किया गया सम्मानित

एप बताएगा कि बच्चों ने कितना सीखा, कितना बाकी

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचारः परिषदीय स्कूलों में प्रदेश सरकार शिक्षा व्यवस्था को बदलने पर जोर दे रही है। नए नए प्रयोग किए जा रहे हैं। इन्हीं प्रयोगों में बच्चों को शैक्षिक स्थिति का ब्योरा ऑनलाइन फीड किया जाएगा। जिसे एप पर देखा जा सकेगा कि बच्चों की ग्रोथ क्या है। उसने कितना सीखा, क्या आता है। और क्या सीखना अभी शेष है। छमाही परीक्षा के बाद दिसंबर में प्रेरणा पोर्टल पर पर बच्चे का प्रगति कार्ड बनाने का काम शुरू होगा। इसके लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

जिले में 2158 परिषदीय स्कूल संचालित हैं। इन स्कूलों में 3.09 लाख से अधिक बच्चे पंजीकृत हैं। इन स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों का प्रगति कार्ड प्रेरणा पोर्टल पर अपलोड किया जाएगा। जिसमें बच्चे की शैक्षिक स्थिति का ब्योरा दर्ज किया जाएगा। निरीक्षण के दौरान बेसिक शिक्षा विभाग के अधिकारी उनके द्वारा बच्चों की शैक्षिक स्थिति देखी जाती है।

एआरपी एकेडमिक रिसोर्स पर्सन भी उनकी शैक्षणिक स्थिति परखते हैं। जिससे कमजोर बच्चों का शैक्षणिक स्तर सुधारा जा सके। स्कूलों का निरीक्षण करने के दौरान शिक्षक बच्चों से सवाल पूछ लेते हैं।

जवाब न देने पर छात्रों को निराशा होती है। बच्चे हतोत्साहित न हों इसके लिए प्रेरणा पोर्टल पर ऑनलाइन हाजिरी लगाने के साथ ही प्रगति कार्ड बनाने के निर्देश बेसिक शिक्षा निदेशक द्वारा दिए गए हैं। प्रगति कार्ड में बच्चे की शैक्षणिक स्थिति का ब्योरा दर्ज किया जाएगा।

> प्रेरणा पोर्टल पर सभी बच्चों का रिपोर्ट कार्ड अपलोड किया जाएगा। इसके निर्देश मिल चुके हैं। यह कार्य दिसंबर माह में छमाही परीक्षा के बाद किया जाएगा। जिसके निर्देश सभी प्रधानाध्यापकों और बीईओ को दे दिए गए हैं।
> -वीरेंद्र कुमार सिंह, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी।

● परिषदीय स्कूलों के छात्रों की शैक्षणिक स्थिति का ब्योरा ऑनलाइन किया जाएगा फीड

● दिसंबर से प्रेरणा पोर्टल पर प्रगति कार्ड बनाने का किया जाएगा काम

मौखिक और नियमित टेस्ट का दर्ज होगा ब्योरा

समग्र शिक्षा के जिला समन्वयक पीसी श्रीवास्तव ने बताया कि प्रेरणा पोर्टल पर बच्चे का प्रगति कार्ड दर्ज किया जाएगा। प्रगति कार्ड में कक्षा-कक्ष प्रक्रिया, गतिविधि, समूह कार्य, व्यक्तिगत कार्य, लिखित कार्य, मौखिक कार्य और नियमित टेस्ट में बच्चे के प्रदर्शन का ब्योरा होगा।

बच्चों के पसंद का भी दर्ज होगा ब्योरा

कक्षा तीन से आठ तक के बच्चें का प्रगति कार्ड मौखिक कार्य और टेस्ट के प्रदर्शन का ब्योरा दर्ज होगा। वहीं प्री-प्राइमरी से कक्षा दो तक के बच्चों से उनकी अत्यधिक पसंद का ब्योरा लिया जाएगा। प्रगति कार्ड बच्चे के शैक्षणिक स्तर को सुधारने और उन्हें आगे बढने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यदि किसी शिक्षक का स्थानांतरण दूसरे स्कूल में होता है, तो भी उसे प्रत्येक बच्चे के शैक्षणिक स्तर और उनके पसंद का ब्योरा की जानकारी हो जाएगी और वह बेहतर कार्य कर पाएगा। इससे यह समझने में भी मदद मिलेगी कि स्कूल में अध्ययनरत बच्चे को कहां परेशानी आ रही है। दिसंबर से प्रगति कार्ड बनने शुरू हो जाएंगे।

गोवंश को ठंड से बचाने को लगे तिरपाल

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : शासन के निर्देश पर गोवंश को सर्दी से बचाने के लिए तैयारी शुरू कर दी गई है। गोशाला में त्रिपाल लगाए जा रहे हैं। पन्नी लगा कर गोवंश को सर्द हवाओं से बचाने के प्रयास किए जा रहे हैं। अभी तक करीब आधा दर्जन गोशालाओं को तिरपाल से ढका जा चुका है। 30 नवम्बर तक सभी गोशालाओं को तिरपाल से ढक दिया जाएगा।

सर्दियां शुरू हो चुकी हैं। इसलिए सरकार ने गोवंश की सुरक्षा को कड़े निर्देश दिए हैं। उक्त निर्देशों के तहत जिले के सलारपुर ब्लाक के गांव भगवतीपुर की गौशाला को तिरपाल से ढक दिया गया है। गोशाला में करीब तीन दर्जन गोवंश हैं उन्हें सर्दियों में ठंड से बचाने के प्रयास किए गए हैं। इसके साथ अन्य गोशालाओं में भी गोवंश को ठंड से बचाने के लिए पन्नी और त्रिपाल लगाए जा रहे हैं। इस ब्लॉक में 17 गोशालाएं हैं जिसमें से आधा दर्जन गोशालाओं को कवर्ड किया जा चुका है। उधर ब्लॉक उसावा के अंतर्गत जो गोशालाएं हैं उन्हे 10 दिन के अंदर त्रिपाल से ढकने के निर्देश दिए गए हैं। पशुपालन विभाग का कहना है कि उसावां और उसहैत तथा दातागंज क्षेत्र की सभी गोशालाओं को पहले तिरपाल से ढका जाएगा उसके बाद अन्य गोशालाओं को भी सुरक्षित किया जाएगा।

मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी समदर्शी सरोज ने बताया कि हर साल गोवंश को ठंड से बचाने के उपाय किए जाते हैं। इसलिए इस बार भी जिले की सभी गोशालाओं को तिरपाल से ढका जा रहा है। बताया कि जिले में 300 से अधिक गोशालाएं हैं। सभी में गोवंश की सुरक्षा के प्रयास किए जा रहे हैं।

गोशाला में तिरपाल से ढकते कर्मचारी।

● शासन की सख्ती के बाद पशुपालन विभाग ने शुरू किया काम

पड़ौआ की गौशाला में ठिठुर रहा गोवंश

ब्लॉक जगत के गांव पड़ौआ की गोशाला में अभी तिरपाल नहीं लगाया गया है। इस गोशाला में करीब तीस गौवंश हैं जो टीन शेड के नीचे रहते हैं। टीनशेड के बाहर अभी तक त्रिपाल नहीं लगाया गया है जिससे गोवंश को रात को खुली हवा लगती है। गोशाला के केयरटेकर ने बताया कि ब्लॉक के पशु चिकित्सक को स्थिति से अवगत करा दिया गया है। उन्होंने आश्वासन दिया है जल्द ही गोशाला को तिरपाल से ढक दिया जाएगा।

एनएचएम के कार्यक्रम में जुटे स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के नवनिर्वाचित प्रदेश संगठन मंत्री अरविंद राना को शनिवार को समारोह आयोजित कर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि प्रदेश अध्यक्ष डा. मयंक गुप्ता ने स्वास्थ्य सेवाओं को पूरी तरह जनहित को समर्पित करने का आवाहन किया। साथ ही संगठन को सेवा भाव से चलाने की बात कही। प्रदेश कार्यकारिणी को और मजबूत बनाने का संकल्प लिया गया।

शहर के आवास विकास स्थित शिवांश लॉन में शनिवार को एनआरएचएम द्वारा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समारोह में नव निर्वाचित प्रदेश संगठन मंत्री अरविंद राना को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि संगठन के प्रदेश अध्यक्ष डा.मयंक गुप्ता ने कहा कि संगठन स्वास्थ्य सेवाएं बेहतर ढंग से दे रहा है इसके लिए सभी पदाधिकारियों को सम्मान दिया जाना चाहिए। कहा कि संगठन का दायित्व है कि जनहित में पूरी निष्ठा और मेहनत के साथ लोगों की सेवा की जाए।

प्रदेश कार्यकारिणी समिति के प्रदेश उपाध्यक्ष अनुज मिश्रा ने कहा कि संगठन का विस्तार किया जाना चाहिए। मंडल कोषाध्यक्ष शिवम तोमर, पुष्पेंद्र यादव जिलाध्यक्ष बरेली, संजय आर्य, आदि ने संघ को मजबूत करने पर जोर दिया। नवनिर्वाचित रविंद्र राना ने कहा कि संगठन के लिए पूरे मनोयोग से कार्य करेंगे।

प्रदेश कार्यकारिणी को मजबूत बनाने का संकल्प लेते लोग। ● अमृत विचार

● स्वास्थ्य सेवाओं को और प्रभावी बनाने पर दिया जोर

● एनएचएम यूनियन के प्रदेश संगठन मंत्री का हुआ स्वागत

प्रदेश में एनआरएचएम को और ऊंचाइयों पर ले जाने के होंगे प्रयास

जिलाध्यक्ष केबी चतुर्वेदी ने कहा कि सभी पदाधिकारी संगठन को मजबूत बनाएं। कार्यक्रम में डा. होरेश दिनकर, डा. कौशल गुप्ता, अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. जावेद हुसैन ने अध्यक्षता करते हुए पदाधिकारियों को शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में डा. अरविंद धवल, डा. हरिनिवास यादव, डा. बीरेंद्र यादव, डा. मेहराज, डा. दमयंती, शिवा सिंह, लता चौहान, मुकेश कुमार, ब्रजेश राठौर, राहुल शर्मा, आयुष रस्तोगी, नाजिम खान, नरेंद्र, संजीव भारद्वाज, उदय प्रताप, उमेश राठौर, प्रदीप कुमार, डा. रंजन कुमार, सोनम गुप्ता, आदि लोग मौजूद रहे।

मालवीय अध्यापक आवास गृह पर 18 को होगा सम्मेलन

बदायूं, अमृत विचार : कांग्रेस की ओर से 18 नवंबर को मालवीय अध्यापक आवास गृह पर संविधान बचाओ, लोकतंत्र बचाओ सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। मुख्य वक्ता सीतापुर के सांसद राकेश राठौर और मुख्य अतिथि सहारनपुर सांसद इमरान मसूद रहेंगे।

सम्मेलन के लिए जिलाध्यक्ष ने गई गांवों में भ्रमण करके लोगों से मुलाकात की और उनसे बात की। उन्होंने कहा कि सम्मेलन की तैयारियां बहुत तेजी से चल रही हैं। संविधान और लोकतंत्र की रक्षा हर कीमत पर की जाएगी और सभी लोग मिलकर संविधान को बचायेगे। उन्होंने रूपापुर, उनौला, बूचानगला, बीबीपुर, तालगांव, बुधवाई, मचलई आदि में ग्रामीणों से बात की। ओमवीर दद्दा, नवनीत यादव, अखिलेश, मोहित, धर्मवीर, सचिन, रचित यादव आदि साथ रहे।

अमृत विचार

बरेली, रविवार,16 नवंबर 2025

बदायूं

न्यूज ब्रीफ

राणा शुगर मिल ने शुरू की गन्ने की खरीद

विजय नगला, अमृत विचार : रामपुर जिले के शाहबाद में राणा चीनी मिल का गन्ना क्रय केंद्र बनाया गया है। शनिवार को क्षेत्र के सहोर, रिजोली, गिरधरपुर, दियोरी जीत, मलगांव, त्रिलोकपुर आदि गांव के किसान ट्रैक्टर ट्रालियों में गन्ना भरकर केंद्र पर पहुंचे। जहां लगभग 6 घंटे बाद गन्ने की तौल शुरू की गई। केंद्र प्रभारी सुभाष ने बताया किसानों के पास गन्ने की पर्चियां समय से भेजी जा रही हैं। उन्होंने गन्ना किसानों से पर्चियों के अनुसार क्रय केंद्र पर गन्ना लाने की बात कही। ज्येष्ठ गन्ना अधिकारी तेजपाल सिंह ने बताया किसानों का पिछले वर्ष का बकाया गन्ना भुगतान कर दिया गया है। नवंबर से नए सत्र की गन्ना खरीद शुरू कर दी गई है। किसानों के लिए गन्ना केंद्र पर परेशानी नहीं होने दी जाएगी। उन्होंने किसानों से पर्ची के साथ गन्ना लाने की अपील की।

दिव्यांग बच्चों में बांटे जाएंगे सहायता उपकरण

बदायूं, अमृत विचार : दिव्यांग बच्चों में सहायक उपकरण बांटे जाएंगे। बच्चों को चिन्हित करने के लिए ब्लॉक दातागंज, समरेर, म्याऊं और उसावां में शिविर लगाया जाएगा। दातागंज और समरेर में 25 नवंबर और म्याऊं व उसावां में 26 नवंबर को शिविर लगेगा। इनमें चिन्हित होने वाले दिव्यांग बच्चों को दिव्यांग विभाग सहायक उपकरणों का वितरण करेगा।

लेखपालों ने एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

बदायूं, अमृत विचार : लेखपाल संघ ने आठ सूत्रीय मांगों को लेकर बिसौली एसडीएम राशि कृष्णा को ज्ञापन सौंपा। जिसमें उन्होंने वेतन विसंगति, पदनाम परिवर्तन और अतिरिक्त पदों के सृजन आदि की मांग की। लेखपालों का कहना था कि पदनाम परिवर्तन किए जाने की मांग वर्षों पुरानी है। जिस पर ध्यान नहीं दिया जा रहा। कहा कि प्रारंभिक वेतनमान का उच्चीकरण किया जाए। एसीपी में विसंगति को दूर किया जाए। अतिरिक्त, राजस्व निरीक्षक और नायब तहसीलदार के अतिरिक्त पदों का सृजन किया जाए। स्टेशनरी भत्ता 100 रुपये से बढ़ाकर 1000 रुपये करने की मांग लेखपालों के द्वारा की गई। एसडीएम को ज्ञापन सौंपने वालों में तहसील अध्यक्ष अमित कुमार, राहुल सिंह, रिंकी गुप्ता, मोहित शर्मा, आदित्य कान्त उपाध्याय आदि लेखपाल मौजूद रहे।

अनूप बने इतिहास परिषद अध्यक्ष

राजकीय महाविद्यालय के इतिहास परिषद के पदाधिकारी। ● अमृत विचार

बदायूं, अमृत विचार : राजकीय महाविद्यालय में सत्र 2025-26 के लिए इतिहास परिषद की कार्यकारिणी का पुनर्गठन किया गया। इतिहास के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार के निर्देशन में चुनाव अधिकारी डॉ. संजय कुमार द्वारा संपन्न कराए गए। चुनाव में एमए प्रथम सेमेस्टर के छात्र अनूप सिंह यादव अध्यक्ष चुने गए।

उपाध्यक्ष के दो पदों पर बीए प्रथम सेमेस्टर के शिवकुमार कश्यप और बीए तृतीय सेमेस्टर की तमन्ना निर्वाचित हुईं। वहीं सचिव पद पर समीक्षा और इशू दीक्षित निर्वाचित हुईं। संयुक्त सचिव पद शिवम, सौरभ सिंह, पवन कुमार और सरिता यादव को मिला। सभी निर्वाचित पदाधिकारियों को डॉ. अनिल कुमार ने पद व कर्तव्य की शपथ दिलाई।

सामूहिक विवाह के लिए आए एक हजार से अधिक आवेदन, मौके पर जाकर किया जा रहा सत्यापन

25 नवंबर को किया जाएगा सामूहिक विवाह कार्यक्रम

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

● समाज कल्याण विभाग को 784 विवाह कराने का मिला लक्ष्य

अमृत विचार: समाज कल्याण विभाग को मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत 784 गरीब बेटियों की शादी कराने का लक्ष्य मिला है। योजना के तहत प्रशासन स्तर से 25 नवंबर की तिथि निर्धारित की है। कार्यक्रम कराने की तिथि घोषित होने के बाद विभाग में तैयारी तेज हो गई है। अब तक 1409 आवेदन प्राप्त हुए हैं। इनका सत्यापन किया जा रहा है। जिससे अधिक से अधिक जोड़ों का विवाह कराया जा सके।

प्रदेश सरकार द्वारा मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना का संचालन कर रही है। योजना के तहत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक वर्ग के साथ ही सामान्य वर्ग के गरीब बेटियों की शादी कराई जाती है। इस शासन स्तर से योजना में बदलाव किया है। योजना के तहत अब तक एक जोड़े की शादी कराने में 51 रुपये खर्च किए जाने का प्रावधान था।

इस बार एक जोड़े की शादी कराने में एक लाख रुपये खर्च होंगे। इसमे से 60 हजार रुपये कन्या के खाते में भेजे जाएंगे। यह धनराशि कन्या के बैंक खाते में डीबीटी के माध्यम से भेजी जाएगी। 25 हजार रुपये उपहार सामग्री पर खर्च होंगे। सामूहिक विवाह आयोजन के दौरान 15 हजार रुपये प्रति जोड़ा खर्च किया जाएगा। शासन की ओर से वर्तमान वित्तीय वर्ष में समाज कल्याण विभाग को 784 जोड़ों की शादी कराने का लक्ष्य दिया गया है। प्रशासन की ओर से सामूहिक विवाह कार्यक्रम आयोजन कराने की तिथि निर्धारित कर दी है।

आयोजन 25 नवंबर को होगा। यह कार्यक्रम तहसील स्तर पर आयोजित किए जाएंगे। जिसकी तैयारी विभाग और प्रशासनिक स्तर पर करनी शुरू हो गई है। समाज कल्याण विभाग के अधिकारी ने बताया कि अब तक 1409 आवेदन प्राप्त हुए हैं। सभी प्राप्त आवेदनों को सत्यापन कराया जा रहा है। जिससे समय पात्र आवेदक को योजना का लाभ मिल सके।

> सामूहिक विवाह योजना के तहत कार्यक्रम तहसील स्तर पर कराए जाएंगे। 25 नवंबर को कार्यक्रम का आयोजन कराया जाएगा। आए आवेदनों का सत्यापन करने के आदेश संबंधित अधिकारियों को दिए गए हैं। जिससे पात्र व्यक्ति को योजना का लाभ मिल सके। कार्यक्रम स्थलों का चयन भी जल्द किया जाएगा। – **केशव कुमार**, मुख्य विकास अधिकारी

वापस हुआ था 31.62 लाख का बजट

गत वर्ष के वित्तीय वर्ष में समाज कल्याण विभाग को शासन की ओर से 1567 जोड़ों की शादी कराने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। विभाग और प्रशासन स्तर पर लाख प्रयास करने के बाद भी लक्ष्य पूरा नहीं हो सका। मिले 1567 लक्ष्य के सापेक्ष कुल 1505 जोड़ों की ही शादी गत वर्ष के दौरान हुई थी। 62 जोड़ों की शादी कराना शेष रह गया था। वित्तीय वर्ष समाप्ति के दौरान विभाग को योजना के तहत 31.62 लाख रुपये का बजट शासन में समर्पित करना पड़ा था।

कांग्रेस ने सरदार पटेल को नहीं दिया, भाजपा दे रही सम्मान

सदर विधानसभा में निकाली गई पदयात्रा, 12 किमी चलकर गांव आमगांव में हुई जनसभा

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती के अवसर पर सदर विधायक महेश चंद्र गुप्ता के नेतृत्व में बदायूं विधानसभा की पद यात्रा निकाली गई। पदयात्रा में पदाधिकारी और हजारों कार्यकर्ताओं की भीड़ सरदार पटेल चौक से शुरू हुई। फिर भगत सिंह चौक, कार्तिकेय चौक, गोपाल टॉकीज, दातागंज तिराहा, रेलवे क्रॉसिंग, एपी इंटरनेशनल स्कूल, गांव लखनपुर होते हुए आमगांव पहुंची। जगह-जगह पुष्प वर्षा करके पद यात्रा का स्वागत हुआ। मुख्य अतिथि भाजपा क्षेत्रीय अध्यक्ष दुर्विजय सिंह शाक्य, जिलाध्यक्ष राजीव कुमार गुप्ता, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष अशोक भारतीय भी शामिल रहे। पद यात्रा ने लगभग 12 किमी का सफर तय किया। जहां जनसभा का आयोजन किया गया।

खेड़ा नवादा पर मुस्लिम समाज और भगत सिंह चौक पर पंजाबी सेवा समिति और अन्य लोगों ने स्वागत किया। भगवान माहेश्वरी, सभासद दिलीप कुमार, अजय प्रताप सिंह, मुकेश आदि मौजूद रहे।

आमगांव में आयोजित जनसभा को संबोधित करते सदर विधायक महेश चंद्र गुप्ता। ● अमृत विचार

● सरदार पटेल ने 565 रियासतों को भारत में एकीकृत करने का किया था काम

कार्तिकेय चौक पर कुमार तनय वैश्य समाज, लोची नगला पर भाजपा नेता मनोज कृष्ण गुप्ता व सभासद मोहित सक्सेना, दातागंज तिराहा पर अमन गुप्ता, धर्मा सेवा ट्रस्ट कार्यालय पर राणा प्रताप सिंह, एचपी इंटरनेशनल स्कूल पर पूर्व जिलाध्यक्ष हरप्रसाद सिंह पटेल, सोबरनपुर चौराहा पर प्रधान राजवीर सिंह के बाद आमगांव में प्रधान नरेंद्र सिंह पटेल, आर्येंद्र सिंह पटेल, श्रीकृष्ण पाठक, अंकित शाक्य आदि ने स्वागत किया।

भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा मंडल अध्यक्ष नसीम खान के आवास पर जिला उपाध्यक्ष अधिवक्ता मोहम्मद शीराज आलम के नेतृत्व में सलीम खान राना, शमीम एजाज खान, शोएब, बब्बू, लईक, खालिद, जसीम खान, मोहसिन खान, अख्तर, मुजाहिर अली के साथ पद यात्रा पर पुष्प वर्षा की। आमगांव में जनसभा हुई। जिसे संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि लौह पुरुष की जयंती पर उनके सम्मान में पूरे देश में पद यात्रा निकाली जा रही है। देश को बनाने मे सरदार पटेल का बहुत बड़ा योगदान है। उनके इरादे बहुत मजबूत थे। वह नहीं होते तो आज देश की बहुत खराब स्थित होती। जिलाध्यक्ष ने कहा कि आजादी की लड़ाई में योगदान देने वाले सरदार पटेल को कांग्रेस ने वह सम्मान नहीं दिया जो उन्हें मिलना चाहिए था। भाजपा वह सम्मान देने का काम कर रही है।

सदर विधायक ने कहा कि सरदार पटेल ने 565 रियासतों को भारत में एकीकृत करने का काम किया था। मोदी सरकार सरदार पटेल को सम्मान दे रही है। पद यात्रा में उत्साहित दिखे कार्यकर्ता बधाई के पात्र हैं। जिन्होंने 12 किमी पैदल चलकर सरदार पटेल को श्रद्धांजलि दी। पूर्व जिलाध्यक्ष हरप्रसाद सिंह पटेल व अशोक भारती ने कार्यक्रम को संबोधित किया। संचालन जिला महामंत्री सुधीर श्रीवास्तव ने किया। डीसीबी चेयरमैन जेके सक्सेना, जिला उपाध्यक्ष सोबरन सिंह राजपूत, अनेक पाल सिंह पटेल, हरिओम पाराशरी, एमपी सिंह राजपूत, डॉ. अरुण प्रकाश, मोनिका, भाजपा नेता विश्वजीत गुप्ता, अंकित मौर्य, सुरजीत गुप्ता, आर्येंद्र पटेल, धीरेंद्र सिंह, मनोज गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

कार्यकर्ताओं का उत्साह, सड़कों पर लगा रहा जाम

पद यात्रा के दौरान हजारों कार्यकर्ता उत्साहित थे। हाथ में तिरंगा और जुबान पर वंदे मातरम के जयकारे थे। हजारों लोगों के सड़क पर एक साथ पैदल चलने की वजह से जगह-जगह जाम लगा रहा। पहले से निर्धारित कार्यक्रम की वजह से यातायात पुलिस भी मुस्तैद रही। वाहनों के रूट व्यवस्थित करके भेजा गया।

पद यात्रा में भाजपा क्षेत्रीय अध्यक्ष दुर्विजय सिंह शाक्य, जिलाध्यक्ष राजीव कुमार गुप्ता, विधायक महेश चंद्र गुप्ता, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष अशोक भारतीय, युवा नेता विश्वजीत गुप्ता व अन्य।

मिशन शक्ति के तहत कराई निबंध लेखन प्रतियोगिता

बदायूं, अमृत विचार : मिशन शक्ति फेज 5 के अंतर्गत शहर के राजकीय महिला महाविद्यालय में निबंध लेखन प्रतियोगिता कराई गई। जिसका विषय मिशन शक्ति, महिला सुरक्षा एवं सशक्तिकरण की पहल था। इस दौरान कुल 25 छात्राओं ने प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता समन्न होने के बाद राष्ट्रीय सेवा योजना व रेंजर्स की ओर से छात्राओं को अग्निशमन यंत्रों के प्रयोग करने का प्रशिक्षण दिया गया। अग्निशमन सुरक्षा टीम ने अग्निशमन यंत्रों की बारीकी के साथ जांच की। जिसमें गैस का प्रेशर ठीक होना, पाइप लाइन, पिन लॉक नोज की स्थिति और यंत्रों की वैधता की तारीख को किया गया। जिनमें कमी निकली उन यंत्रों को बदलने को निर्देशित किया गया। प्राचार्या डॉ. वंदना ने छात्राओं का उत्साह बढ़ाया। मिशन शक्ति प्रभारी डॉ. भावना सिंह, डॉ. ऋषभ भारद्वाज, डॉ. अर्चना पांडे, डॉ. सतीश कुमार, डॉ. बृजेश कुमार, डॉ. सरिता गौतम, रोहित कुमार के अलावा अन्य् लोग भी उपस्थित रहे।

बिहार में एनडीए की जीत पर भाजपाइयों में खुशी

बिल्सी, अमृत विचार: कस्बे में बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए गठबंधन को मिली अपार जीत पर शनिवार को भाजपा कार्यकर्ताओं ने खुशी का इजहार किया। चुनाव में मिली जीत की खुशी पर भाजपा नेता शैलेंद्र शर्मा ने कार्यकर्ताओं में मिठाई वितरित की। उन्होंने कहा कि बिहार की जनता ने विकास और सुशासन के पक्ष में जमकर मतदान करते हुए यह ऐतिहासिक फैसला दिया है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव में पार्टी की लगातार तीसरी बार भारी बहुमत के साथ सरकार बनाने का काम प्रदेश की जनता करेगी। प्रदेश की जनता अभी से इसके लिए पूरा मूड बना चुकी है। इस मौके पर भाजपा नगराध्यक्ष आदित्य

मिठाई बांटते भाजपा कार्यकर्ता और पदाधिकारी।

प्लेटफार्म नंबर दो पर झोपड़ीनुमा डाला जाएगा टिन शेड

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : केंद्र सरकार द्वारा चलाए जा रहे अमृत भारत योजना के तहत स्थानीय रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म दो पर झोपड़ीनुमा टीन शेड लगाए जाएंगे साथ ही सीसीटीवी कैमरे और पंखे भी लगाए जएंगे। प्लेटफार्म के पीछे खुला मैदान भी आम लोगों को बंद किया जाएगा।

पिछले एक साल से रेलवे स्टेशन पर अमृत भारत योजना के तहत सौंदर्यीकरण का कार्य किया जा रहा है। प्लेटफार्म एक पर सीमेंट का फर्श तोड कर पत्थर लगाया जा रहा है। नया टीनशेड बनाया गया है। प्लेटफार्म एक पर यात्रियों को बैठने को नई बेंच डाली गयी हैं। कुछ स्थानो पर कैमरे लगाए गए हैं।

इसके बाद अब रेलवे प्रशासन ने प्लेटफार्म दो पर करीब चार नए टीन शेड लगाने की बात कही है। यह चारो टीनशेड झोपड़ीनुमा होंगे। चार नए टीनशेड बन जाने के बाद यहां पर यात्रियों के बैठने की समुचित व्यवस्था हो जाएगी। इस समय यहां पर यात्री नहीं बैठते हैं केवल दो जगह टीन शेड बनाए गए हैं। अब चार और बनाए जाने की तैयारी है।

करीब पांच सौ मीटर के इस प्लेटफार्म वर इस समय ट्रेन के आने पर ही कुछ यात्री दिखाई देते हैं ट्रेन के गुजर जाने पर यहां सन्नाटा पसरा रहता है। यहां पर खुला प्लेटफार्म है।

प्लेटफार्म नंबर दो के पीछे रेलवे कॉलोनी को जाने वाली सड़क है। इस सड़क से गुजरने वाले कुछ अन्य लोग प्लेटफार्म पर घूमते रहते हैं इसलिए अब प्लेटफार्म के पीछे दीवार वना कर रोक लगाई जाएगी। जिससे अन्य लोग प्लेटफार्म पर नहीं पहुंच सकेंगे। रेलवे प्रशासन के अनुसार यहां पर कैमरे और पंखे लगाए जाएंगे। जिससे प्लेटफार्म नंबर दो पर भी यात्री हर समय बैठ सकेंगे। धूप या बारिश में यात्रियों को इधर-उधर दौड़ना नहीं पड़ेगा।

बदायूं के रेलवे प्लेटफार्म दो पर पसरा सन्नाटा। ● अमृत विचार

● यात्रियों को बैठने को लगेंगी नई बेंचें, अमृत भारत योजना के तहत किया जा रहा सौंदर्यीकरण

प्लेटफार्म दो पर लगेंगी नई बेंच

रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म दो पर यात्रियों को बैठने को नई बेंच लगायी जाएंगी। अभी कुछ स्थानों पर ही बेंच लगाई गई हैं। प्लेटफार्म पर सौंदर्यीकरण का काम होने के बाद नई बेंच लगाई जाएंगी। प्लेटफार्म दो पर बने प्याऊ के ऊपर भी टीन शेड लगाया जाएगा जिससे बारिश के समय लोगों को दिक्कत न हो।

अंडरपास की बनी एक सड़क

प्लेटफार्म दो की ओर बन रहे रेलवे के अंडरपास की एक सड़क बन कर तैयार हो चुकी है। अब दूसरी ओर खुदाई का कार्य किया जा रहा है। दोनों ओर सड़क बन जाने के बाद रेलवे लाइन के नीचे की खुदाई की जाएगी। रेलवे प्रशासन का कहना है कि लाइन के नीचे की खुदाई से पहले अन्य निर्माण कार्य पूरे करने हैं।

वरुण अर्जुन मेडिकल कॉलेज एवं रोहिलखंड अस्पताल

विशाल चिकित्सा शिविर

हड्डी रोग विभाग | स्त्री रोग विभाग | बाल रोग विभाग
शल्य रोग (सर्जरी) विभाग | मेडिसिन विभाग | चेस्ट एवं टी.बी. विभाग
नेत्र रोग विभाग | मानसिक रोग विभाग | चर्म रोग विभाग | नाक, कान, गला रोग विभाग

यह सुविधा 10 नवम्बर 2025 से प्रारंभ

समस्त रोगों के इलाज की उच्च स्तरीय सुविधाएं

रजिस्ट्रेशन शुल्क मात्र 50/- रुपये

डॉक्टर द्वारा परामर्श मुफ्त
भर्ती एवं पलंग मुफ्त
मुफ्त सामान्य ऑपरेशन (दवाओं का खर्च अतिरिक्त)
नार्मल व सिजेरियन डिलीवरी मुफ्त (दवाओं का खर्च अतिरिक्त)
भर्ती मरीजों का एक्स-रे मुफ्त
भर्ती मरीजों की सामान्य जांचें मुफ्त
भर्ती मरीजों का अल्ट्रासाउंड मुफ्त
भर्ती मरीजों का एमआरआई ब्रेन- रु. 2000/- एमआरआई स्पाईन- रु. 3000/- सीटी हेड- रु. 800/-

भर्ती मरीजों की दवाईयां भारी छूट पर

70 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों के लिए मुफ्त आयुष्मान कार्ड बनवाने एवं मुफ्त उपचार की सुविधा।
(आयुष्मान भारत योजना के लाभार्थियों के लिए निःशुल्क कार्ड एवं निःशुल्क चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध)

परिवार स्वास्थ्य कार्ड की सुविधा मात्र 200 रुपए में 1 वर्ष के लिए उपलब्ध।

वरुण अर्जुन मेडिकल कॉलेज एवं रोहिलखंड अस्पताल
NH-30, बन्थरा, शाहजहाँपुर, उ.प्र.-242307
मो.नं : 05842-297260, 05842-297360, 7521001988, 7521001989

BAREILLY INTERNATIONAL UNIVERSITY
Rohilkhand Medical College Campus, Pilibhit Bypass Road,
Bareilly-243006 (UP) India, Phone : 0581-2526051, 053, 153
Email : registrar@biu.edu.in, Website : www.biu.edu.in
For any query contact : 9520876189, 9105500202, 9105500404

Applications are invited from Indian/NRI/Foreign National Students for Admission to Ph.D. Programmes January 2026 session in the following disciplines

- Faculty of Medical Sciences (All Clinical and Non-Clinical Specialities)
- Faculty of Nursing M.Sc. (N) with 3 years teaching or clinical experience
- Faculty of Dental Sciences (All Specilities)
- Humanities and Journalism English
- Faculty of Pharmacy
- Faculty of Management
- Faculty of Allied Health Sciences (Faculty of Paramedical Sciences) (Ph.D. in Medical Laboratory Technology/Physiotherapy)

Application Fee
- For Indian Candidate Rs. 2000/-
- NRI/Foreign National Candidate Rs. 5000/- or $60 USD

Last Date of Receiving Application : 30th November, 2025

Application Submission Address : To, The Registrar, Administrative Block, Bareilly International University, Bareilly-243006 (U.P.) India
For more details and application form & application fee, visit univerisity website : www.biu.edu.in
(https://biu.edu.in/reseach/Latest-Application-form-for-PHD-programme.pdf)

पूर्व माध्यमिक शिक्षक संघ का मंडलीय अधिवेशन शुरू

पूर्व माध्यमिक शिक्षक संघ के अधिवेशन के दौरान मौजूद पदाधिकारी।

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

● स्काउट भवन में मंडलीय निर्वाचन की नामांकन प्रक्रिया हुई संपन्न

अमृत विचार : स्काउट भवन में शनिवार को उत्तर प्रदेशीय जूनियर हाईस्कूल पूर्व माध्यमिक शिक्षक संघ का मंडलीय अधिवेशन हुआ। बरेली मंडल के चारों जनपद बरेली, बदायूं, पीलीभीत और शाहजहांपुर के पूर्व माध्यमिक शिक्षक संघ के मंडलीय और जिला कार्यकारिणी के पदाधिकारी शामिल हुए।

इस मौके पर मंडलीय कार्यकारिणी के तीन वर्ष पूरे होने के बाद नई कार्यकारिणी निर्वाचन की प्रक्रिया शुरू हुई। मंडल के अध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष, संगठन मंत्री, उपाध्यक्ष सहित 21 पदों के लिए नामांकन प्रक्रिया पूरी हुई। मंडलीय निर्वाचन के लिए अलीगढ़ मंडल के अध्यक्ष पर्यवेक्षक के रूप में उपस्थित रहे। रविवार को निर्वाचन का कार्यक्रम प्रांतीय अध्यक्ष योगेश त्यागी की मौजूदगी में होगा। निवर्तमान मंडलीय अध्यक्ष दिनेश कुमार गंगवार, पीयूष कुमार, यतेंद्र कुमार, प्रेमानंद शर्मा, फरहत हुसैन, राजन यादव, करुणेश कुमार, राकेश कुमार आदि पदाधिकारी मौजूद रहे।

न्यूज ब्रीफ

अधिकारियों ने 35 में से दो शिकायतें की निस्तारित

बिल्सी, अमृत विचार : माह के तीसरे शनिवार को तहसील के लोक सभागार में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में एसडीएम प्रेमपाल सिंह ने लोगों की शिकायतों को सुना। इस दौरान एसडीएम को 35 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए। जिनमें से दो का मौके पर ही निस्तारण किया गया। समाधान दिवस में चकरोड पर से अवैध कब्जा हटवाने, भूमि की पैमाइश कराने से जुड़े प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए। इस मौके पर सीओ संजीव कुमार सिंह, तहसीलदार प्रभा सिंह, पूर्ति निरीक्षक धीरज गुप्ता, एसडीओ जेपी सिंह राजपूत, बीईओ गौतम प्रकाश, कोतवाल मनोज कुमार सिंह आदि अधिकारी मौजूद रहे।

तमंचे के साथ हिस्ट्रीशीटर गिरफ्तार

बदायूं, अमृत विचार : बिनावर थाना क्षेत्र के विलहत निवासी आलोक उर्फ ओम कुमार पुत्र वीरेंद्र सिंह हिस्ट्रीशीटर है। शनिवार को पुलिस ने उसे गंगा एक्सप्रेस वे के अंडरपास स्थित गांव बगुली नगर से एक तमंचा और दो जिंदा कारतूस के साथ गिरफ्तार किया है।

23 में 3 मामलों में कराया समझौता

बदायूं, अमृत विचार : रिजर्व पुलिस लाइन सभागार में पुलिस परिवार परामर्श केंद्र के सहयोग से आपसी कलह और मतभेद में आकर बिखरते परिवारों को एक डोर से बांधने का पुलिस सहारा बनी। काउंसलर भीमसेन सागर, गिरधारी सिंह राठौर, ज्वाला प्रसाद गुप्ता, एसडी शर्मा, शिव स्वरूप गुप्ता, सुषमा कथूरिया, अशोक खुराना, उपनिरीक्षक माया देवी, हेड कांस्टेबल कुमुद, डोली, राखी के सामने 29 फाइलें आईं। जिसमें 23 पर काउंसलिंग हुई। दोनों पक्षों की सुनवाई के बाद 3 मामलों में समझौता हुआ। बाकी की फाइलों के लिए अग्रिम तिथि दी गई है।

तमंचा और कारतूस के साथ पकड़ा गया युवक

ओरछी, अमृत विचार : शनिवार को मुखबिर की सूचना पर फैजगंज बेहटा पुलिस ने गांव दांवरी के जंगल से तमंचा और एक कारतूस के साथ एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। थानाध्यक्ष राजकुमार सिंह ने बताया कि सूचना मिली कि गांव दांवरी जाने वाले कच्चे मार्ग पर एक व्यक्ति तमंचे के साथ खड़ा है। उन्होंने उपनिरीक्षक हरिदत्त सैनी, सिपाही जसवीर सिंह, विकास चौधरी, कपिल शर्मा को भेजा। युवक को हिरासत में लिया गया। उसने अपना नाम फखुरुद्दीन बताया। आरोपी को जेल भेजा गया है।

प्रसूताओं को चार दिन और नहीं मिलेगा खाना

जिला महिला अस्पताल की प्रेरणा कैंटीन में लगा ताला

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : जिला महिला अस्पताल में प्रसूताओं को अभी चार दिन तक और खाना नहीं मिलेगा। कैंटीन विवाद बढ़ता जा रहा है। इस मामले में महिला अस्पताल प्रशासन भी असहाय बना हुआ है।

जिला अस्पताल में 2022 से समूह की महिला सदस्य गुड्डी देवी ने प्रसूताओं को खाना बनाने का ठेका लिया था। उन्होने प्रेरणा कैंटीन शुरू कर प्रसूताओं को खाना शुरू कर दिया। अब समूह की दूसरी महिला ने किसी तरह से कैंटीन का प्रस्ताव अपने नाम करा लिया। जिसके बाद चार दिन से कैंटीन में दोनों महिलाओं के ताले पड़े हैं। कैंटीन बंद है जिससे प्रसूताओं को सरकारी अस्पताल से मिलने वाला खाना नहीं मिल पा रहा है। दोनो पक्ष की महिलाओं ने डीएम से न्याय की गुहार की है। उधर महिला अस्पताल प्रशासन का कहना है कि मामला और उलझ गया है जिससे चार दिन तक कैंटीन बंद रहेगी। प्रसूताओं को खाना नहीं मिल सकेगा। अस्पताल प्रशासन फिलहाल मामले को सुलझाने के प्रयास में है। कैंटीन में खाना बनाने वाली महिला रसोइया ने बताया कि वह लोग अब रसोई में नहीं जा रहे हैं। वहां पर ताला लटका है। काम बंद है।

जिला महिला अस्पताल में प्रेरण कैंटीन पर लटका ताला। ● अमृत विचार

● अब समूह की दूसरी महिला ने कैंटीन का प्रस्ताव अपने नाम करा लिया

घर से मंगाना पड़ रहा खाना

महिला अस्पताल में प्रसूताओं को उनके परिजन घर से खाना ला रहे हैं। कुछ महिलाएं बाहर से मंगा कर खाना खा रही हैं। प्रसूताओं का कहना है कि आपसी विवाद में महिला मरीजों को परेशानी हो रही है। अस्पताल प्रशासन को समस्या का समाधान कर ना चाहिए।

कोचिंग जा रही छात्रा को खींचा आरोपी गिरफ्तार

विजय नगला, अमृत विचार : इंटर की छात्रा के कोचिंग जाते समय दूसरे समुदाय के युवक ने खींचा और कुछ खिलाने का प्रयास किया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की। उसे गिरफ्तार करके जेल भेजा गया है।

थाना मूसाझाग क्षेत्र के गांव निवासी व्यक्ति ने शुक्रवार को थाने पर तहरीर देते हुए बताया था कि उसकी 19 साल की बेटी इंटरमीडिएट की छात्रा है। वह बिनावर थाना क्षेत्र के एक गांव में कोचिंग पढ़ने जाती है। शुक्रवार शाम लगभग सात बजे वह गांव से कोचिंग जा रही थी। रास्ते में ट्यूबवेल पर आरोपी ने छात्रा को रास्ता रोक लिया। छात्रा को जबरदस्ती कुछ खिलाने का प्रयास किया। छात्रा ने विरोध किया तो वह छात्रा को खींचने लगा। वह चिल्लाई तो आरोपी उसे छोड़कर भाग गया। छात्रा रोती हुई अपने घर पहुंची और परिजनों को जानकारी दी। छात्रा अपने पिता के साथ थाने पहुंची और तहरीर दी गई। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करके आरोपी की तलाश शुरू की थी। शनिवार को पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार करके जेल भेजा। थाना प्रभारी राजेंद्र सिंह ने बताया कि छात्रा से छेड़छाड़ के आरोपी को जेल भेजा है।

मांगों को लेकर लेखपालों ने तहसील में दिया धरना

अपनी मांगों को लेकर धरना पर बैठे लेखपाल। ● अमृत विचार

संवाददाता, बिल्सी

● चेतावनी दी कि मांगों पर सुनवाई नहीं हुई तो आंदोलन तेज होगा

अमृत विचार : लेखपाल संघ के प्रांतीय आह्वान पर शनिवार को तहसील बिल्सी परिसर में लेखपालों ने आठ सूत्रीय मांगों को लेकर एक दिवसीय धरना प्रदर्शन किया। लेखपालों ने चेतावनी दी कि मांगों पर जल्द सुनवाई नहीं हुई तो आंदोलन तेज किया जाएगा।

धरना स्थल पर लेखपालों ने सरकार से प्रारंभिक वेतनमान उच्चीकरण कर 2800 ग्रेड पे किए जाने, पदोन्नति के अवसरों में वृद्धि, एसीपी विसंगति सुधार, स्टेशनरी भत्ता व विशेष वेतन भत्ता बढ़ाने, नियत यातायात भत्ता समाप्त कर उसके स्थान पर बाइक भत्ता दिए जाने की मांग की। उन्होंने पदनाम परिवर्तन कर राजस्व उप निरीक्षक करने, अन्तर मण्डलीय स्थानान्तरण की सुविधा, पेंशन विसंगतियों का समाधान, लेखपालों के पदों में वृद्धि आदि की मांग रखी। धरने में लेखपालों ने कहा कि वर्षों से लंबित मांगों पर ध्यान न दिए जाने से कर्मचारी वर्ग में भारी नाराजगी है। इस दौरान विनोद कुमार सिंह, विजेंद्र पाल सिंह, दुर्गेश कुमार, विनय कुमार, सूरज भारती, हरिओम, दिव्या भारती, गरिमा, नैन्सी गुप्ता, हर्षिका, रंजीत सिंह, अनुराग त्रिपाठी, मनोज कुमार, संजय कुमार, नवी हसन आदि मौजूद रहे।

अफीम के साथ मादक पदार्थ तस्कर गिरफ्तार

दातागंज, अमृत विचार : दातागंज पुलिस और बरेली की एएनटीएफ यूनिट ने मादक पदार्थ तस्करी के एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। उसके पास से 3.1 किग्रा अफीम बरामद हुई है। जिसकी कीमत लगभग 30 लाख रुपये बताई जा रही है। आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करके पुलिस ने जेल भेज दिया है।

पुलिस शनिवार को समरेर-दातागंज मार्ग स्थित धरेली जाने वाले मार्ग पर गश्त कर रही थी। मुखबिर ने संदिग्ध व्यक्ति की जानकारी दी। पुलिस और एएनटीएफ टीम मौके पर पहुंची। जहां से एक युवक को पकड़ा। उसके पास से अफीम, मोबाइल फोन और 140 रुपये बरामद हुए। युवक ने अपना नाम दातागंज कोतवाली क्षेत्र के गांव डहरपुर कलां निवासी चंदन गुप्ता पुत्र लखपत राम गुप्ता बताया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के अंतर्गत रिपोर्ट दर्ज करके जेल भेजा है। गिरफ्तारी करने वाली टीम में प्रभारी निरीक्षक वेदपाल सिंह, उपनिरीक्षक नाहर सिंह, यूनिट के प्रभारी उपनिरीक्षक विकास यादव, हेड कांस्टेबल दिनेश कुमार, रघुवीर सिंह रहे।

खेलकूद व बौद्धिक प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने दिखाया दमखम

● रस्सा कसी, कबड्डी, म्यूजिक चेयर में किया प्रतिभाग

संवाददाता, गोला गोकर्णनाथ

अमृत विचार: सरस्वती विद्या निकेतन इंटर कॉलेज बाल दिवस पर हुई दो दिवसीय विभिन्न खेलकूद, बौद्धिक प्रतियोगिताओ में विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ प्रतिभाग़ कर अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया।

नगर के लखीमपुर रोड स्थित सरस्वती विद्या निकेतन में बाल दिवस पर पहले दिन शुक्रवार को नर्सरी से कक्षा 12 तक के विद्यार्थियों ने म्यूजिकल चेयर , चेस प्रतियोगिता, रुमाल छू, खो-खो, बैडमिंटन, रस्साकसी, मेढक दौड़ में, प्रतियोगिता के समापन पर दूसरे दिन शनिवार को हिन्दी, अंग्रेजी सुलेख, चित्रकला प्रतियोगिता विद्यार्थियों ने उत्साह से भाग लिया। विजयी प्रतिभागियों को जल्द ही पुरस्कृत किया जाएगा। शिक्षक-शिक्षिकाओं के मार्गदर्शन में प्रतियोगिताओं को निर्धारित पाली के अनुसार कराया। प्रधानाचार्य महेंद्र कुमार त्रिपाठी, मधु त्रिपाठी ने बाल दिवस पर बधाई दी

खो-खो खेलती बालिकाएं।

अवैध रूप से बेची जमीन, लेखपाल समेत छह पर रिपोर्ट

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

● पुलिस ने नहीं की कार्रवाई तो कोर्ट में दिया था प्रार्थना पत्र

अमृत विचार : कुछ लोगों ने हल्का लेखपाल से मिलकर कब्रिस्तान की जमीन का बैनामा कराकर बेची और लोगों के रुपये हड़प लिए। एक व्यक्ति की शिकायत पर पुलिस ने कार्रवाई नहीं की तो वह कोर्ट की शरण में गए। कोर्ट के आदेश पर हल्का लेखपाल समेत छह लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करके पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

सहसवान के मोहल्ला चौधरी निवासी मोहम्मद सुलेमान ने कोर्ट में प्रार्थना पत्र दिया था। जिसमें उन्होंने बताया कि गांव भगता नगला में उनकी 0.092 हेक्टेयर जमीन कब्रिस्तान व मरघट के नाम पर दर्ज है। आरोप है कि अफजाल मोहम्मद, इखलास मोहम्मद पुत्र रियाज मोहम्मद, शाजेब खान, इमरान पुत्र इलियास, इकराम ने हल्का लेखपाल से मिलकर प्रशासन को धोखा देते हुए उस जमीन पर कब्जा कर लिया है। जमीन पर अवैध निर्माण कराते हुए दुकानें बना लीं। षड्यंत्र करते हुए साल 2013 में धोखाधड़ी करके जमीन को अपना बताकर बैनामे करा लिए थे। जबकि सभी लोगों को जमीन के राजस्व अभिलेख में दर्ज होने की जानकारी थी।

अधिकारियों से शिकायत करने के बाद भी आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं की गई थी। जिसके चलते आरोपियों ने उस जमीन के बैनामे अन्य लोगों को करा दिए और लोगों के रुपये हड़प लिए। अधिकारियों से शिकायत करने की वजह से आरोपियों ने 30 अप्रैल 2025 को उनका रास्ता घेर लिया। तमंचा दिखाकर धमकाया और झूठे मुकदमा में फंसाने की धमकी दी। विरोध करने पर आरोपियों ने उन्हें पीटा। शोर सुनकर भीड़ एकत्र होने लगी तो आरोपी धमकाते हुए मौके से भाग गए। कोर्ट के आदेश पर सहसवान पुलिस ने तत्कालीन हल्का लेखपाल समेत छह लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है।

धोखाधड़ी करके जमीन का कराया बैनामा

बदायूं, अमृत विचार : दो भाइयों ने धोखाधड़ी करके अपने पिता का प्लाट बेच दिया। अपनी तीसरे भाई को सूचना तक नहीं दी। जिसने कोर्ट में प्रार्थना पत्र दिया। कोर्ट क आदेश पर उझानी पुलिस पांच आरोपियों क खिलाफ धोखाधड़ी, कूटरचना, धमकाने आदि की रिपोर्ट दर्ज करके जांच शुरू की है। बरेली के थाना सुभाष नगर क्षेत्र के मोहल्ला अशोक नगर निवासी हरपाल सिंह ने कोर्ट में प्रार्थना पत्र देकर बताया कि उझानी के मोहल्ला नझियाई में उनकी पिता शिव सहाय सिंह के नाम से प्लाट है। उनके भाई धर्मजीत उर्फ करन सिंह और उमेश उर्फ महेश चंद्र उर्फ मास्टर ने जालसाजी की। उन्हें बिना बताए नुकसान पहुंचाने के लिए मोरकली को कूटरचना और धोखाधड़ी करके प्लाट बेच दिया। आरोप लगाया कि धर्मजीत शातिर किस्म का है। वह अक्सर धोखाधड़ी के मामलों में संलिप्त रहता है। सहसवान कोतवाली में उसके खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज है। जानकारी होने पर हरपाल सिंह ने दोनों भाइयों से बैनामा के बारे में पूछा कि उन्हें सूचना दिए बिना प्लाट कैसे बेच दिया। दोनों भाइयों ने गाली-गलौज की और धमकी देना शुरू कर दिया। शिकायत करने के बाद भी उझानी पुलिस ने कार्रवाई नहीं की। जिसकी वजह से वह कोर्ट की शरण में गए। कोर्ट के आदेश पर उझानी पुलिस ने धर्मजीत, महेश चंद्र उर्फ उमेश, मोरकली, लालाराम और दिनेश के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है।

● पुलिस ने नहीं की कार्रवाई तो कोर्ट की शरण में गया था पीड़ित

इंजीनियर्स संघ की जिला कार्यकारिणी का किया गठन

बदायूं, अमृत विचार : सिंचाई विभाग नलकूप खंड के संघ भवन कार्यालय में शनिवार को मंडल अध्यक्ष रोबिन कुमार सिंह व प्रांतीय संगठन मंत्री सतीश वाष्णेय की मौजूदगी में इलेक्ट्रिकल एंड मैकेनिकल डिप्लोमा इंजीनियर्स संघ का जिला अधिवेशन आयोजित किया गया। जिसमें नई कार्यकारिणी का गठन करते हुए निर्वाचित पदाधिकारियां को शपथ ग्रहण कराई। चुनाव अधिकारी प्रांतीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष इंजीनियर संजीव कुमार सिंह के के निर्देशन में हुए चुनाव में इं. कमल कुमार जिलाध्यक्ष, इ. राहुल कुमार शर्मा, उपाध्यक्ष, इं. मोहित शर्मा सचिव, डा. पुनीत कुमार वित्त सचिव, इ. कृष्ण कुमार जिला सम्प्रेक्षक, और इ. विमल कुमार शर्मा को जिला संगठन मंत्री निर्वाचित किया गया।

स्कूल ने उच्च शिक्षा के लिए रखी आधारशिला

स्कूल भवन निर्माण का भूमि पूजन करते आचार्य व अन्य। ● अमृत विचार

संवाददाता, बिल्सी

अमृत विचार : फ्यूचर लीडर्स स्कूल'' में कक्षा 9-12 के लिए शनिवार को अत्याधुनिक भवन का भूमि पूजन किया गया। स्कूल बनने से बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलेगी।

शनिवार को बदायूं रोड पर फ्यूचर लीडर्स स्कूल ने सेकेंडरी एवं सीनियर सेकेंडरी (कक्षा 9 से 12) के विद्यार्थियों के लिए निर्मित होने वाले नवीन, अत्याधुनिक भवन का भूमि पूजन किया। मंत्रोच्चारण के साथ से पूजा-अर्चना की गई। इस आयोजन में विशिष्ट अतिथिगण, विद्यालय प्रबंधन समिति, प्रधानाचार्य, शिक्षक, अभिभावक और विद्यार्थी शामिल हुए। विद्यालय के संरक्षक, बीरेंद्र सिंह ने बताया कि बोर्ड परीक्षा की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों को शांत माहौल में उत्कृष्ट शैक्षणिक वातावरण प्रदान करना इस पहल का उद्देश्य है। विद्यालय के डायरेक्टर एवं एमडी राहुल कुमार सिंह वीपी सिंह ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। सामूहिक शुभकामनाओं और प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का सफल समापन हुआ।

खेत में लगे ठिया उखाड़ने के विरोध पर जानलेवा हमला

बदायूं, अमृत विचार : बिसौली कोतवाली क्षेत्र के गांव भमोरी निवासी अखिलेश कुमार ने सीओ को प्रार्थना पत्र देकर बताया कि 13 सितंबर की रात ग्रामीणों ने सूचना दी कि कोई व्यक्ति उनके खेत में लगे ठिए उखाड़कर ले जा रहा है। वह अपनी पत्नी आरती, भाई संजीव कुमार के साथ रात में खेत पर पहुंचे। जहां संजीव, अंकुर, विवेक, सुधाकर, दिवाकर, भास्कर, दिनेश, उमेश, महेश लाठी-डंडे और फरसा लेकर ठिया उखाड़ते मिले। विरोध करने पर उन लोगों ने जानलेवा हमला कर दिया। शोर सुनकर ग्रामीण पहुंचे। आरोपी झूठे मुकदमा में फंसाने और जान से मारने की धमकी देकर चले गए। सीओ के निर्देश पर नौ आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई है।

तमंचे की बट मारकर किया घायल

● कोर्ट के आदेश पर आठ आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करके पुलिस ने शुरू की जांच

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : फैजगंज बेहटा थाना क्षेत्र के गांव जगतुआ निवासी राकेश पुत्र श्योराज शर्मा ने कोर्ट में प्रार्थना पत्र दिया था। कोर्ट के आदेश पर पुलिस ने आठ लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है।

युवक ने प्रार्थना पत्र देकर बताया कि 13 अक्टूबर की शाम लगभग 5 बजे उनके पिता श्योराज सिंह घर पर खाना खा रहे थे। आरोप है कि गांव निवासी सत्यवीर उर्फ डिंपल पुत्र सोमपाल सिंह, अभिजीत पुत्र राजेश, अंकित पुत्र नेत्रपाल, सुरजीत पुत्र अजय पाल सिंह, धर्मेंद्र पुत्र राजेश्वर, मोहित पुत्र सुरेंद्र, दीपक और धर्मेंद्र के मौसेरा भाई आए। पिता के साथ गाली-गलौज करने लगे। पिता ने गाली देने से मना किया तो वह लोग घर के भीतर घुस आए। अभिजीत ने पिता के सिर में तमंचे की बट मारी। पिता को बचाने के लिए आई शिवाली, पुष्पेंद्र को भी डंडे मारे। चिल्लाने पर परिवार के लोग आए और उनके पिता को बचाया। आरोपी घर से जाते समय घर का सामान तोड़कर और जान से मारने की धमकी देकर चले गए। तहरीर देने के बाद भी पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज नहीं की थी। जिसके चलते उन्होंने कोर्ट की शरण ली। कोर्ट के आदेश पर आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई करके जांच शुरू कर दी गई है।

मेडिकल स्टोर पर पथराव, घर में घुसकर की अश्लीलता

बदायूं, अमृत विचार : पुरानी रंजिश के चलते पिता-पुत्रों ने मेडिकल स्टोर पर पथराव किया और घर में घुसकर महिला से अश्लीलता करते हुए मारपीट की। पीड़िता की तहरीर पर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करके जांच शुरू की है। शहर के मोहल्ला ब्राह्मपुर निवासी महिला ने एसएसपी को प्रार्थना पत्र देकर बताया कि 29 सितंबर दोपहर 2 बजे उनका बेटा अपने मेडिकल स्टोर पर था। पूर्व में रंजिश मानने वाले इमली चौक निवासी रिषभ मौर्य, शिवम मौर्य और उनके पिता ज्वाला प्रसाद मौर्य उर्फ बंगाली ने उनके बेटे के साथ गाली-गलौज शुरू कर दी। मेडिकल स्टोर पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया। बेटा दुकान छोड़कर भाग आया। वह तीनों को पीछा करते हुए डंडे और तमंचे लेकर उनके घर में घुस आए और अश्लीलता करते हुए गाली-गलौज शुरू कर दी। बेटे को उठाकर जमीन पर पटक दिया। तमंचे की बट से उसके चेहरे पर प्रहार किया। जिससे दाहिनी आंख पर चोट आई। वह लहूलुहान हो गया। महिला ने बचाव किया तो शिवम ने महिला को थप्पड़ मार दिया। जिससे महिला को कम सुनाई दे रहा है। शोर सुनकर लोगों के पहुंचने पर आरोपी जान से मारने की धमकी देकर भाग गए। अब आरोपी झूठे मुकदमा में फंसाने की धमकी दे रहे हैं। पुलिस ने पिता-पुत्रों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है।

अमृत विचार
एक सम्पूर्ण अखबार
क्लासीफाइड
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
9756905552, 8445507002

आवश्यकता है
लेडीज टीचर्स की
N.C. to Vth (NTT टीचर्स को वरियता)
पढ़ाने के लिए कॉल करें:-
मो. 9412196717
बी.के.एस. मैमोरियल इंग्लिश स्कूल
रजपुरी ढकनी, फरीदपुर, बरेली

सूचना
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैंने अपने पुत्र वेदप्रकाश मौर्य को उसके गलत आचरण एवं दुर्व्यवहार के कारण उसे अपनी समस्त चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है। भविष्य में उसके द्वारा किये गये किसी भी कृत्य का मुझसे व मेरे परिवार के किसी भी सदस्य से कोई सरोकार नहीं होगा। धर्मेन्द्र कुमार मौर्य पुत्र स्व. श्री देवकी नंदन निवासी:- कटरा चांद खां थाना बारादरी, जिला बरेली

वैधानिक सूचना :- समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन जैसे टावर सम्बन्धी, नौकरी सम्बन्धी, ऋण सम्बन्धी या अन्य किसी भी प्रकार के विज्ञापन में पाठकों को सावधान किया जाता है। विज्ञापनदाता द्वारा किये गये दावे या उल्लेख, समर्थन की पुष्टि समाचार पत्र नहीं करता है।

अमृत विचार

बरेली, रविवार, 16 नवंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

दर्जनभर सीएचसी व पीएचसी में होगा सुधार

अमृत विचार, लखनऊ : अस्पतालों के सुदृढ़ीकरण के लिए मुजफ्फरनगर के आठ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के भवन निर्माण सुधार व विस्तार के लिए तीन करोड़ 27 लाख रुपये का बजट जारी किया गया है। साथ ही उप्र. राज्य निर्माण सहकारी संघ लि. को कार्यदायी संस्था नामित कर दिया गया है। सुदृढ़ीकरण होने वाले सीएचसी में बघरा, शाहपुर, बुढ़ाना, चरथावल, पुरकाजी, तुलकलपुर, भोपा, मखियाली, सिसौली, खतौली, गढ़ीनोआबाद एवं जानसठ हैं।

छात्रों ने विस्टाडोम ट्रेन से देखा दुधवा पार्क

अमृत विचार, लखनऊ : उप्र. ईको टूरिज्म विकास बोर्ड ने बाल दिवस पर गवर्नमेंट इंटर जुबिली कॉलेज, लखनऊ के करीब 40 छात्रों को दुधवा की विस्टाडोम ट्रेन सफारी का विशेष अनुभव कराया। पारदर्शी शीशों वाली इस ट्रेन में छात्रों ने कतर्नियाघाट से दुधवा नेशनल पार्क तक जंगल, घास के मैदान, जलाशय और दुर्लभ वन्यजीवों को करीब से देखा। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने शनिवार को बताया कि बिछिया इंटरप्रिटेशन सेंटर पर छात्रों को रेल मार्ग के इतिहास, वन्यजीवों और फॉरेस्ट कॉरिडोर में सुरक्षित व्यवहार की जानकारी दी गई। धीमी गति से चलती विस्टाडोम ट्रेन के व्यूइंग ज़ोन से बच्चों ने बाघ, गैंडा, हाथी समेत दुधवा की समृद्ध जैव-विविधता को करीब से महसूस किया। विस्टाडोम ट्रेन सेवा सप्ताह में शनिवार और रविवार को संचालित होती है। मंत्री ने बताया कि ईको टूरिज्म बोर्ड आगे भी युवाओं के लिए ऐसे नवाचार जारी रखेगा।

युवा शक्ति ही डिजिटल अर्थव्यवस्था का इंजन

समीक्षा बैठक में स्टार्टअप, सेमीकंडक्टर और डाटा सेंटर पर मुख्यमंत्री योगी का रहा फोकस

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रदेश में स्टार्टअप संस्कृति का दायरा तेजी से बढ़ रहा है। 8 साल में इलेक्ट्रॉनिक निर्यात 11 गुना बढ़ा है। यहां की युवा शक्ति ही डिजिटल अर्थव्यवस्था का इंजन है। प्रशिक्षण, परीक्षण और मार्केट लिंकेज की सभी जरूरतों को पूरा किया जाए। उन्होंने हिदायत दी कि प्रोत्साहन राशि के लिए पात्र निवेशकों को प्रतीक्षा न करनी पड़े, इसके लिए विभागीय स्तर पर जवाबदेही तय हो। हर प्रस्ताव की तय समयसीमा हो और उसकी साप्ताहिक मॉनिटरिंग हो।

- **8 साल में इलेक्ट्रॉनिक निर्यात 11 गुना बढ़ा**
- **प्रोत्साहन राशि के लिए प्रतीक्षा न करें निवेशक, विभागीय स्तर पर तय हो जवाबदेही - मुख्यमंत्री**

मुख्यमंत्री योगी ने शनिवार को सूचना प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग की समीक्षा बैठक में कहा कि युवाओं को तकनीक आधारित नई अर्थव्यवस्था से जोड़ना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। आईटी और आईटीईएस सेक्टर में अधिक युवाओं को जोड़ने के लिए प्रायोगिक प्रशिक्षण मॉडल विकसित किए जाएं। इसके लिए इयान रियलिटी जैसी संस्थाओं के साथ सहयोग बढ़ाया जाए। योगी ने कहा कि स्टार्टअप, सेमीकंडक्टर, डाटा सेंटर और इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण में प्रदेश की स्थिति लगातार मजबूत हुई है। अब लक्ष्य इसे वैश्विक प्रतिस्पर्धा में शीर्ष श्रेणी में स्थापित करना है। उन्होंने कहा कि सेमीकंडक्टर क्षेत्र में एक परियोजना स्वीकृत हो चुकी है जबकि दो अन्य प्रस्तावों के लिए भारत सरकार से सतत संवाद बनाए रखा जाए।

लखनऊ स्थित अपने सरकारी आवास पर एमएसएमई विभाग की समीक्षा करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, साथ में मंत्री राकेश सचान और शीर्ष अधिकारी।

एमएसएमई को नई रफ्तार देगा 'प्लग एंड प्ले' मॉडल

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- **योगी ने रेवेन्यू शेयरिंग लीज रेंटल पॉलिसी बनाने के दिए निर्देश**
- **जमीन खरीद की दिक्कतों से मुक्त होंगे उद्योग, सीधे करेंगे उत्पादन**

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश में औद्योगिक विकास को गति देने के लिए लैंड बैंक विस्तार और एमएसएमई इकाइयों के लिए प्लग एंड प्ले मॉडल लागू करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि छोटे और मध्यम उद्योगों को जमीन खरीद की प्रक्रिया से मुक्त कर सीधे उत्पादन शुरू करने की सुविधा दी जानी चाहिए। उन्होंने रेवेन्यू शेयरिंग आधारित लीज रेंटल पॉलिसी बनाने के निर्देश दिए।

वे शनिवार को एमएसएमई विभाग की समीक्षा कर रहे थे। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि प्लग एंड प्ले मॉडल को डीबीएफओटी संरचना के तहत लागू किया जा सकता है, जिसमें निजी क्षेत्र निर्माण, वित्त और संचालन की जिम्मेदारी संभालेगा, जबकि भूमि स्वामित्व प्राधिकरण के पास रहेगा। रेवेन्यू शेयरिंग आधारित लीज रेंटल व्यवस्था से प्राधिकरण को नियमित आय प्राप्त होगी और उद्यमियों को बिना भूमि खरीदे चरणबद्ध विस्तार की सुविधा मिलेगी। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया कि प्रस्तावित नीति में उद्योग को दीर्घकालिक स्थिरता और स्पष्टता मिले जबकि भूमि का नियंत्रण राज्य के पास सुरक्षित रहे। रेवेन्यू शेयरिंग व्यवस्था सरल, पारदर्शी और औद्योगिक विकास के लिए सहायक होनी चाहिए ताकि राज्य की भूमि संपदा का अधिकतम और उचित उपयोग सुनिश्चित हो सके। उन्होंने कहा कि यह मॉडल प्रदेश के लिए उपयोगी होगा और इससे एमएसएमई इकाइयों को किफायती और तुरंत उपलब्ध कार्यस्थल मिल सकेगा।

बैठक में बताया गया कि प्रदेश में औद्योगिक भूमि की लागत अपेक्षाकृत अधिक है, विशेषकर एनसीआर क्षेत्र में। मुख्यमंत्री ने कहा कि भूमि की ऊंची कीमतें नये उद्योगों की स्थापना में बाधा बनती हैं। इसलिए किफायती आकार के भूखंड और तैयार औद्योगिक शेड उपलब्ध कराना जरूरी है। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया कि औद्योगिक विकास प्राधिकरण अपनी भूमि पर तैयार शेड विकसित करें या पीपीपी मॉडल के तहत निर्माण कराएं।

मनोज कुमार सिंह बने यूपी स्टेट ट्रांसफॉर्मेशन आयोग के सीईओ

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- **आयोग के अध्यक्ष हैं मुख्यमंत्री सभी वरिष्ठ मंत्री व शीर्ष अधिकारी सदस्य**

अमृत विचार : प्रदेश के पूर्व मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह को यूपी स्टेट ट्रांसफॉर्मेशन आयोग का मुख्य कार्यकारी अधिकारी नामित किया गया है। मुख्यमंत्री योगी के बेहद भरोसेमंद अधिकारियों में शामिल मनोज कुमार सिंह का इस आयोग के पहले सीईओ होंगे। उनका कार्यकाल तीन वर्ष का होगा।

मुख्यमंत्री योगी की अध्यक्षता में इस आयोग का गठन अक्टूबर 2022 में किया गया था। राज्य ट्रांसफॉर्मेशन आयोग को उत्तर प्रदेश राज्य नीति आयोग के रूप में भी जाना जाएगा। आयोग के अध्यक्ष मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ वित्त, कृषि, समाज कल्याण, ग्राम्य विकास, पंचायती राज, चिकित्सा स्वास्थ्य, औद्योगिक विकास, जल शक्ति, नगर विकास तथा नियोजन विभाग के मंत्री/राज्य मंत्री इसके पदेन सदस्य हैं। मुख्य सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, औद्योगिक एवं अवस्थापना आयुक्त, समाज कल्याण विभाग के आयुक्त/अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव/सचिव के साथ ही वित्त, कृषि, नगर विकास, ग्राम्य विकास, चिकित्सा स्वास्थ्य, अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास, सिंचाई एवं जल संसाधन तथा नियोजन विभाग के अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव/सचिव इसके शासकीय पदेन सदस्य हैं। इसके अलावा गैर सरकारी सदस्यों में सामाजिक क्षेत्र के विषय विशेषज्ञ, कृषि एवं संवर्गीय सेवाओं से संबंधित विषय विशेषज्ञ, वित्त क्षेत्र के विषय विशेषज्ञ तथा औद्योगिक विकास/निवेश/प्रौद्योगिकी/ऊर्जा क्षेत्र के विषय विशेषज्ञ को गैर सरकारी सदस्य बनाया गया है।

यह है आयोग का मुख्य कार्य

स्टेट ट्रांसफॉर्मेशन आयोग के मुख्य कार्यों में राज्य के विभिन्न प्रकार के संसाधनों (भौतिक, वित्तीय एवं जनशक्ति) का अनुमान लगाना और राज्य के विकास में इनके सर्वोत्तम उपयोग की नीति तैयार करते हुए सुझाव देना। राष्ट्रीय एजेंडा के उद्देश्यों, प्राथमिकताओं के साथ ही राज्य की आवश्यकताओं, संसाधनों व क्षमता को ध्यान में रखते हुए क्षेत्रवार और कार्यक्रमवार अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन उपायों की संरचना के साथ ही क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने के लिए नीतियों एवं कार्यक्रमों पर सुझाव देना। जनमानस के जीवन स्तर में सुधार के लिए तंत्र विकसित करने के साथ आर्थिक और सामाजिक विकास में अवरोध उत्पन्न करने वाले कारकों को चिन्हित करना है।

भाजपा की जीत सपा की जीत के बराबर नहीं

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा है कि सपा ने लोकसभा चुनाव में भाजपा की डबल इंजन सरकारों को हराया है। लोकसभा चुनाव में भाजपा ऐसी-ऐसी सीटें हारी है, जिसकी कल्पना नहीं कर सकते हैं। भाजपा बिहार की जीत को सपा की यूपी की जीत से बराबरी नहीं कर सकती है।

सपा प्रमुख ने शनिवार को बेंगलुरु दौरे के दौरान कहा कि भाजपा सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग कर चुनाव परिणाम अपने पक्ष में करती है। भाजपा ने उप्र में भी सरकारी मशीनरी का बहुत दुरुपयोग किया है। बिहार विधानसभा चुनाव परिणाम को लेकर उन्होंने कहा कि चुनाव में हार और जीत दोनों से सीख मिलती है। भाजपा महिलाओं, नौजवानों को सम्मान का जीवन और नौकरी नहीं देना चाहती है। बिहार चुनाव जीतने के बाद भाजपा के लोग कह रहे हैं कि उन्हें महिलाओं का वोट ज्यादा मिला है। भाजपा इसे बता तो सकती है लेकिन हर महिला को दस हजार रुपये कब तक देंगे, यह नहीं बताती है। भाजपा सम्मान का जीवन नहीं देना चाहती है।

अखिलेश यादव ने कहा कि यूपी-बिहार के लोग सबसे ज्यादा दूसरे राज्यों में परिवार से दूर रहते हैं। भाजपा सरकार पलायन रोकने के लिए काम नहीं कर रही।

एमडी-एमएस की 3208 और 124 डीएनबी सीटों पर होंगे दाखिले

अमृत विचार, लखनऊ : प्रदेश के मेडिकल कॉलेजों में पीजी सीटों पर दाखिले के लिए चिकित्सा शिक्षा महानिदेशक कार्यालय द्वारा पीजी सीटों का ब्यौरा कॉलेजवार जारी कर दिया गया है। प्रदेश के 66 मेडिकल कॉलेजों में एमडी-एमएस व डिप्लोमा में विभिन्न विषयों की कुल 3208 सीटों को कॉलेजवार सार्वजनिक किया गया है, इन पर प्रवेश के लिए काउंसिलिंग में पंजीकरण कराने वाले 5987 अभ्यर्थियों की मेरिट लिस्ट जारी की गयी है। इसी प्रकार सरकारी 47 मेडिकल कॉलेजों में विभिन्न विषयों की डीएनबी की 124 सीटों का ब्यौरा दिया गया है, जबकि इन पर प्रवेश के अभ्यर्थियों की सूची मात्र 104 की है। कॉलेजों में उपलब्ध सीटों के आधार पर अभ्यर्थियों को कॉलेजों की प्राथमिकताएं देनी होंगी।

नॉरकोटिक्स श्रेणी की प्रतिबंधित दवाओं के कारोबार का खुलासा

औषधि विभाग की बड़ी कार्रवाई, अंतरराज्यीय सिंडिकेट का भंडाफोड़, बड़ी मात्रा में अनियमितताएं पकड़ीं

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : उत्तर प्रदेश खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन (एफएसडीए) ने कोडीन फॉस्फेट कफ सिरप और नॉरकोटिक्स श्रेणी की प्रतिबंधित दवाओं के अवैध कारोबार में शामिल एक अंतरराज्यीय सिंडिकेट का भंडाफोड़ शनिवार को किया है। विभाग द्वारा वाराणसी में चलाए जा रहे विशेष अभियान के दौरान बड़ी मात्रा में अनियमितताएं पकड़ी गईं और कई फर्मों की संदिग्ध गतिविधियों का खुलासा हुआ। मामले में ऐबट हेल्थकेयर के सुपर स्टॉकिस्ट मेसर्स शैली ट्रेडर्स (झारखंड) और संबंधित व्यक्तियों के विरुद्ध कोतवाली वाराणसी में एफआईआर दर्ज कराने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन आयुक्त के नेतृत्व में सहायक आयुक्त अखिलेश कुमार जैन, औषधि निरीक्षक सीमा सिंह व वैभव बब्बर एवं पूर्वांचल के 10 औषधि निरीक्षकों की विशेष टीम ने निरीक्षण किया है। जांच में कुल नौ फर्मों को चिन्हित किया गया, जिनमें सृष्टि फार्मा, जीटी इंटरप्राइजेज, शिवम फार्मा, हर्ष फार्मा, डीएसए फार्मा, महाकाल मेडिकल स्टोर, निशांत फार्मा, वीपीएम मेडिकल एजेंसी और श्री बालाजी मेडिकल मौके पर बंद पाई गईं। इनके नाम पर भारी मात्रा में दवा सप्लाई दिखाई गई थी, जबकि ये या तो अस्तित्व में नहीं थीं या अवैध गतिविधियों में संलिप्त थीं। इसके अलावा डीएसए फार्मा और महाकाल मेडिकल स्टोर के एक ही स्थान पर पाए जाने तथा आपसी फर्जी अनुभव प्रमाणपत्र जारी करने से कोडीन युक्त सिरप की मिलीभगत से अवैध बिक्री और संभावित इलीगल डायवर्जन की पुष्टि होती है। औषधि विभाग ने स्पष्ट किया है कि ऐसी गतिविधियों में शामिल किसी भी फर्म या व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा और अभियान आगे भी जारी रहेगा।

अभियान के दौरान की गई कार्रवाई

- 130 प्रतिष्ठानों पर छापेमारी
- 20 एफआईआर दर्ज, 6 गिरफ्तार
- 73 लाख 30 हजार रुपये मूल्य की अवैध कोडीन युक्त दवाओं की सीजिंग
- 120 नमूने जांच के लिए भेजे
- 48 प्रतिष्ठानों की बिक्री पर रोक

रिकॉर्ड गायब, दवाओं की खरीद-बिक्री मिली संदिग्ध

जीडी इंटरप्राइजेज ने शैली ट्रेडर्स से 2,14,000 फेन्सीडील कफ सिरप खरीदे, लेकिन कोई विक्रय अभिलेख प्रस्तुत नहीं किया। इसके अलावा न्यू पीएल फार्मा ने 2,16,000 फेन्सीडील कफ सिरप खरीदे और पूरा स्टॉक बंद पड़ी श्री बालाजी मेडिकल को बेचने का दावा किया। जांच में यह भी सामने आया कि बालाजी मेडिकल का स्वामी मेडिकल व्यवसाय से जुड़ा ही नहीं है और एक ज्वेलरी दुकान में काम करता है।

कई राज्यों तक पहुंच

जांच रिपोर्ट के अनुसार, कई फर्मों द्वारा कूटरचित बिलों का इस्तेमाल कर अवैध रूप से कोडीन युक्त दवाओं को अन्य राज्यों और स्थानों में नशे के बाजारों तक पहुंचाया जाता रहा। उद्देश्य अधिक मुनाफा कमाना और नशे की अवैध आपूर्ति को बढ़ावा देना था।

राज्यकर के भ्रष्ट अफसरों पर शिकंजा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- **मुख्यमंत्री के निर्देश पर 44 जिलों के 146 मामलों की नए सिरे से होगी जांच**
- **एसआईटी 2018 से बड़े जीएसटी चोरी के मामलों की करेगी विस्तृत पड़ताल**

अमृत विचार : प्रदेश में व्यापक पैमाने पर हुई जीएसटी (वस्तु एवं सेवा कर) चोरी को लेकर यूपी सरकार ने सख्त कार्रवाई शुरू कर दी है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर 44 जिलों में दर्ज 146 जीएसटी चोरी के मामलों की जांच अब विशेष जांच दल (एसआईटी) को सौंपी गई है। एसआईटी वर्ष 2018 से अब तक सामने आए प्रमुख मामलों की कानूनी और तकनीकी स्तर पर विस्तृत पड़ताल करेगी। इस जांच में कई बड़े व्यापारियों और अधिकारियों के काले कारनामे सामने आ सकते हैं।

आईजी ईओडब्ल्यू केएस इमैनुएल की अध्यक्षता वाली इस एसआईटी में एसएसएफ कमांडेंट अविनाश पांडेय, एसएसपी एसटीएफ सुशील घुले और एएसपी विजिलेंस बबीता सिंह सदस्य के रूप में शामिल हैं। जांच दल ने काम शुरू करते हुए राज्य कर विभाग से सभी संबंधित पत्रावलियां और रिकॉर्ड लेने की कार्यवाही तेज कर दी है। राज्य कर आयुक्त नितिन बंसल के अनुसार, एसआईटी को जो भी दस्तावेज चाहिए होंगे, विभाग उपलब्ध कराएगा।

इन मामलों में लखनऊ, मुरादाबाद, मेरठ, आगरा, कानपुर, प्रयागराज, अलीगढ़, मुजफ्फरनगर और गाजीपुर सहित 44 जिलों में दर्ज मुकदमे शामिल हैं। एसआईटी पहले चरण में जिलेवार केसों की पड़ताल कर अलग-अलग जांच बिंदु तय कर रही है। हाल के महीनों में जीएसटी चोरी के कई बड़े मामले सामने आए हैं। मुरादाबाद में लोहे के कारोबार से जुड़े नेटवर्क में 368 करोड़ की जीएसटी चोरी पकड़ी गई, जिसमें फर्जी फर्मों का जाल यूपी सहित 16 राज्यों तक फैला मिला। राज्य कर विभाग ने सभी राज्यों को फर्मों की जांच और कार्रवाई के लिए पत्र भेजा है। इससे पहले पान मसाला कारोबार से जुड़े मामलों में भी बड़ी कर चोरी पकड़ी गई थी।

ऊदा देवी की प्रतिमा का अनावरण करेंगे राजनाथ व योगी

अमृत विचार, लखनऊ : रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रविवार को प्रदेश की राजधानी लखनऊ में वीरांगना ऊदा देवी पासी की प्रतिमा का अनावरण करेंगे। शौर्य, त्याग व बलिदान की प्रतिमूर्ति वीरांगना ऊदा देवी पासी का रविवार को बलिदान दिवस है। इस दौरान स्वाभिमान समारोह का भी उद्घाटन होगा। यह आयोजन रविवार सुबह 10 बजे सेक्टर-19 वृंदावन कॉलोनी, पासी चौराहे पर होगा। कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य व ब्रजेश पाठक समेत कई जनप्रतिनिधि भी मौजूद रहेंगे।

यूपी में दोहराया जाएगा बिहार का परिणाम : राजनाथ

वरिष्ठ कार्यकर्ता संवाद में बोले, चुनाव परिणाम से भारतीय राजनीति में बड़ा बदलाव

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए की ऐतिहासिक जीत के बाद शनिवार को लखनऊ पहुंचे रक्षा मंत्री व स्थानीय सांसद राजनाथ सिंह ने कहा कि यह सिर्फ चुनावी जीत नहीं, बल्कि भारतीय राजनीति में एक बड़े बदलाव का संकेत है। उन्होंने विश्वास जताया कि 2027 में उत्तर प्रदेश में भी बिहार जैसा परिणाम दोहराया जाएगा।

दो दिवसीय प्रवास पर राजधानी पहुंचे रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का एयरपोर्ट पर उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक और भाजपा पदाधिकारियों ने स्वागत किया। सबसे पहले वह सदर बाजार स्थित संस्कृत पाठशाला महाविद्यालय पहुंचे, जहां वरिष्ठ कार्यकर्ता संवाद कार्यक्रम में उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाते हुए बिहार की जीत को मेहनत, संगठन और समर्पण का परिणाम बताया। कहा कि बिहार की जीत कार्यकर्ताओं के पसीने की कमाई है। बिहार चुनाव के परिणाम से भारतीय राजनीति में बहुत बड़ा बदलाव है। अब जाति-मजहब की राजनीति नहीं चलेगी, जनता सुशासन और देशभक्ति के साथ है। राजनाथ सिंह ने विपक्ष को निशाने पर लेते हुए कहा कि केवल भाषणों से भ्रष्टाचार खत्म नहीं होता, व्यवस्था में परिवर्तन लाना पड़ता है। रक्षा मंत्री ने कहा कि भाजपा की राजनीति सरकार बनाने के लिए नहीं, बल्कि देश बनाने के लिए है।

लखनऊ में वरिष्ठ कार्यकर्ता संवाद कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक व अन्य। अमृत विचार

आयोजन | 61 वर्ष बाद लखनऊ में 23 से 29 नवंबर तक स्काउट्स-गाइड्स महाकुंभ

राष्ट्रीय जंबूरी की तैयारी अंतिम दौर में

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- **33,000 से अधिक प्रतिभागी जुटेंगे महाकुंभ में**

अमृत विचार : राजधानी लखनऊ 61 वर्षों बाद फिर एक ऐतिहासिक अवसर की साक्षी बनने जा रही है। 23 से 29 नवंबर तक स्काउट्स एवं गाइड्स की 19वीं राष्ट्रीय जंबूरी की मेजबानी की तैयारी अंतिम दौर में है। देशभर से आए लगभग 30,000 स्काउट-गाइड्स और 1,500 विदेशी प्रतिनिधियों के साथ कुल 33,000 से अधिक प्रतिभागियों का यह महाकुंभ होगा।

कार्यक्रम का फोकस स्काउटिंग की उस मूल आत्मा को पुनर्जीवित करना है, जो सेवा, अनुशासन, नेतृत्व और राष्ट्र निर्माण की भावना पर आधारित है। यही कारण है कि वृंदावन योजना क्षेत्र के आयोजन स्थल को लघु भारत का रूप दिया जा रहा है। यहां देश के हर कोने की झलक एक साथ दिखाई देगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आदेश पर सबसे बड़ा आकर्षण काशी के घाटों का भव्य प्रतिरूप होगा। प्रतिभागी सातों दिन विश्व-प्रसिद्ध गंगा आरती का सजीव अनुभव करेंगे, जो भारतीय अध्यात्म, परंपरा और सांस्कृतिक एकता का अनोखा चित्र प्रस्तुत करेगा।

देशभर के स्वाद, संस्कार व कला का संगम

जंबूरी में एक भारत, श्रेष्ठ भारत की अवधारणा को साकार करने के लिए फूड प्लाजा में राज्यों के पारंपरिक व्यंजन परोसे जाएंगे। विशेष रूप से बनारस का पान, चाट, पूड़ी-कचौड़ी और जलेबी विदेशी मेहमानों को भारत की असली मिट्टी का स्वाद चखाएंगे। हस्तकला मंडप में वेस्ट मटेरियल से बनी कलाकृतियां, मिट्टी के हस्तशिल्प और भारतीय कला की विविध शैलियां प्रदर्शित होंगी।

तकनीक और नवाचार की दिशा में बड़ा कदम

युवा प्रतिनिधियों के लिए पहली बार एक विशेष आईटी एवं एआई नवाचार हब स्थापित किया जा रहा है। यहां डिजिटल लर्निंग, रोबोटिक्स, एआई क्षमता-विकास और नेतृत्व कौशल से जुड़े वर्कशॉप होंगे। साइंस एक्सपो में स्काउट-गाइड आधुनिक तकनीक और वैज्ञानिक विधियों से रुबरू होंगे, ताकि भविष्य का नेतृत्व ज्ञान और तकनीक से समृद्ध हो सके।

अयोध्या के अधीक्षण अभियंता निलंबित

अमृत विचार, लखनऊ : मध्यांचल विद्युत वितरण खंड जनपद अयोध्या में तैनात अधीक्षण अभियंता प्रदीप वर्मा को उनके कार्य व्यवहार में लगातार मिल रही शिकायतों के बाद निलंबित कर दिया गया है। जानकारी के अनुसार, अभियंता प्रदीप वर्मा का उपभोक्ताओं के साथ गैर-जिम्मेदाराना रवैया और पार्टी के जनप्रतिनिधियों और नेताओं के साथ संतोषजनक व्यवहार नहीं था, जिसकी शिकायत ऊर्जा मंत्री तक पहुंची थी। सूत्रों के मुताबिक, प्रबंध निदेशक की ओर से तत्काल प्रभाव से उनका कार्यभार वापस ले लिया गया और निलंबन आदेश भी जारी कर दिया गया। निलंबन के बाद अयोध्या के अधीक्षण अभियंता का कार्यभार विनय कुमार को सौंपा गया है।

धान खरीद के साथ भुगतान में भी तेजी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- **पूरे प्रदेश में 545 करोड़ रुपये का हुआ भुगतान**

अमृत विचार : प्रदेश में धान खरीद सत्र इस बार पूरी रफ्तार में है। राज्य सरकार की नियमित समीक्षा, किसानों को दी जा रही सुविधाएं और समय पर भुगतान की व्यवस्था का असर यह है कि धान खरीद और किसानों के पंजीकरण दोनों में तेजी लगातार बढ़ रही है।

शनिवार तक पूरे प्रदेश में 3.93 लाख से अधिक किसानों ने पंजीकरण करा लिया, जबकि 53,330 किसानों से 3.12 लाख मीट्रिक टन से अधिक धान की खरीद की जा चुकी है। सरकार द्वारा निर्धारित 4000 केंद्रों के लक्ष्य से आगे बढ़ते हुए 4,143 क्रय केंद्र स्थापित कर दिए गए हैं, जहां पेयजल, बैठने की व्यवस्था और शेड सहित मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हैं। प्रदेश में धान खरीद न्यूनतम समर्थन मूल्य पर जारी है। सामान्य धान 2,369 रुपये प्रति क्विंटल और ग्रेड-ए धान 2,389 रुपये प्रति क्विंटल पर खरीदा जा रहा है। खाद्य एवं रसद विभाग ने किसानों से अपील की है कि 17 प्रतिशत नमी वाला धान ही खरीद योग्य है। पूर्वी उप्र. में धान खरीद 28 फरवरी 2026 तक और पश्चिमी यूपी में 31 जनवरी तक चलेगी। सूत्रों के मुताबिक, नोडल एजेंसियों की ओर से अब तक पूरे प्रदेश में 2.86 लाख मीट्रिक टन धान खरीदा जा चुका है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 65,820 टन अधिक है। 43,105 से अधिक किसानों को कुल 545 करोड़ रुपये का भुगतान सीधे उनके आधार-लिंक्ड खातों में भेजा गया है।

बरेली मंडल में 24,536 लाख रुपये का भुगतान

बरेली मंडल में धान खरीद और भुगतान की प्रक्रिया और तेज हो गई है। बरेली, बदायूं, पीलीभीत और शाहजहांपुर जिलों के लिए 7.19 लाख मीट्रिक टन का लक्ष्य तय है। अब तक मंडल में 17,077 किसानों से 1,06,853 मीट्रिक टन धान खरीदा जा चुका है। इनके खातों में 24,536 लाख रुपये सीधे डीबीटी से भेजे जा चुके हैं।

कार्यालय ग्राम पंचायत मानपुर चिकटिया वि.ख. क्यारा (बरेली)

निविदा आमंत्रण सूचना

पंजीकृत फर्मों के सामग्री आपूर्तिकर्ताओं को सूचित किया जाता है। कि ग्राम पंचायत की कार्य योजना के अनुसार वित्तीय वर्ष 2025–26 में SLWM/ ग्रामनिधि/मनरेगा योजना की धनराशि से ग्राम पंचायत में प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट व आंगनबाड़ी केंद्र के निर्माण हेतु ईट, सीमेंट, बजरफुट, रोड़ा, रेता, बजरी, मिट्टी, सरिया, रोड़ी, आयरन, चौखट, खिड़की, ऐंगल, पेंट, प्राइमर, पुट्टी और सेनेट्री सामान आदि एवं प्लास्टिक वेस्ट रीसाइकिलिंग हेतु आवश्यक मशीनें व अन्य सामग्री/वस्तुओं की आपूर्ति के लिए सीलबंद निविदायें ग्राम पंचायत कार्यालय पर दिनांक 17.11.2025 को पूर्वाह्न 11 बजे से 21.11.2025 को 1 बजे तक आमंत्रित की जाती हैं। जो दिनांक 21.11.2025 को अपराहन 1.30 बजे खोली जायेंगी। निविदा को स्वीकृत /अस्वीकृत करने का अधिकार ग्राम पंचायत में निहित होगा।

क्र.	कार्य का नाम	अनु. लागत
1	प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट का निर्माण कार्य।	16 लाख
2	आंगनबाडी केंद्र का निर्माण कार्य।	12 लाख

श्रीमती निर्मला देवी (ग्राम प्रधान) **सचिव**

अलखनाथ मंदिर परिसर में रुकवाया दुकानों और टॉयलेट ब्लॉक का निर्माण

बरेली, अमृत विचारः अलखनाथ मंदिर परिसर में नाथ कॉरिडोर परियोजना के तहत मुख्य द्वार, सत्संग भवन, वैदिक लाइब्रेरी, प्रसाद और फूलों की दुकान, टॉयलेट ब्लॉक का निर्माण कार्य चल रहे हैं।

एक व्यक्ति ने अपनी जमीन बताते हुए दुकानों और टॉयलेट ब्लॉक निर्माण को रुकवा दिया है। शनिवार को मंदिर समिति के साधु-संतों ने तहसील दिवस में इसकी शिकायत कर निर्माण कार्य शुरू कराने की मांग की है।नाथ कॉरिडोर परियोजना के तहत शिव मंदिरों को प्रदेश स्तरीय पर्यटन स्थल बनाने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। इस परियोजना के तहत अलखनाथ मंदिर परिसर में 11.60 करोड़ रुपये से निर्माण कार्य किए जा रहे हैं। यहां एक पार्किंग क्षेत्र बनाया जाएगा। परिसर में फूल और प्रसाद के लिए नई दुकानें, एक बड़ा सत्संग हॉल और वैदिक लाइब्रेरी बनाने के साथ ही मुख्य प्रवेश द्वार भी आकर्षक बनाया जाएगा।

दो तस्कर गिरफ्तार, सरगना फरार गांजे की कीमत करीब एक करोड़

दिल्ली और रामपुर निवासी गिरोह का सरगना पुलिस की पकड़ से दूर

संवादाता, बरेली/भमोरा

अमृत विचार : उड़ीसा से दिल्ली गांजे की खेप ले जा रहे दो तस्करों को भमोरा थाना पुलिस ने दबोचा है। दोनों तस्करों के पास से 153.69 किलो गांजा, एक ट्रक और एक मोबाइल फोन बरामद किया है। बरामद माल की अंतर्राष्ट्रीय बाजार में करीब एक करोड़ रुपये कीमत बताई जा रही है। गिरफ्तार तस्करों की पहचान गांव पस्तौर, थाना शाहबाद, रामपुर निवासी आलम उर्फ अकरम और इस्लाम खां के रूप में हुई है। जबकि गिरोह सरगना दिल्ली निवासी राकेश यादव और रामपुर निवासी फरमान पुलिस गिरफ्त से दूर है।

एसपी दक्षिणी अंशिका वर्मा ने शनिवार को बताया कि शुक्रवार रात भमोरा पुलिस की टीम रम्पुरा-बिशारतगंज रोड पर संदिग्ध वाहनों की चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान रम्पुरा तिराहे की ओर से एक ट्रक आता दिखाई दिया। पुलिस को देखकर ड्राइवर और हेल्पर हड़बड़ा गए और ट्रक सड़क किनारे रोककर भागने लगे। पुलिस टीम ने पीछा कर दोनों को मौके पर ही पकड़ लिया। पकड़े गए आरोपी आलम उर्फ अकरम और इस्लाम खां के कब्जे से भारी मात्रा में गांजा और मोबाइल बरामद हुआ। पुलिस ने ट्रक को भी सीज कर दिया। पुलिस ने तस्करों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर कोर्ट में पेश किया, जहां से दोनों को जेल भेज दिया गया।पूछताछ में दोनों तस्करों ने बताया कि वह करीब एक महीने से फरमान के ट्रक पर काम कर रहे थे। राकेश यादव और फरमान ने 40 हजार रुपये में उड़ीसा से बिसौली, बदायूं (आसफपुर स्टेशन) तक गांजा पहुंचाने की डील की थी।

20 किलो डोडा के साथ दो तस्कर दबोचे

बरेली, अमृत विचार : बारादरी थाना पुलिस ने पीलीभीत के बरखेड़ा इलाके में डोडा छिलका की खेप पहुंचाने जा रहे दो तस्करों को गिरफ्तार कर लिया। दोनों के कब्जे से 20 .80 किलो डोडा छिलका बरामद हुआ। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस की रिपोर्ट दर्ज कर कोर्ट पेश किया, जहां से दोनों को जेल भेज दिया गया। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान फरीदपुर के गांव तुमड़िया निवासी वीरपाल और गोविंदापुर निवासी वीरेंद्र के रूप में हुई। बारादरी थाना प्रभारी धनंजय पांडे ने बताया कि पुलिस को शुक्रवार रात सूचना मिली कि फरीदपुर क्षेत्र के दो युवक भारी मात्रा में मादक पदार्थ लेकर पीलीभीत की ओर जाने वाले हैं। इस पर पुलिस ने घेराबंदी कर पीलीभीत बाईपास से दोनों संदिग्ध बाइक सवारों को रोका तो भागने लगे। पुलिस ने दोनों को दौड़ाकर पकड़ लिया। दोनों के कब्जे से बोरे में भरा डोडा छिलका बरामद हुआ। गिरफ्तार युवकों ने पूछताछ में बताया कि उन्होंने यह डोडा छिलका बदायूं क्षेत्र के किसानों से खरीदकर इकट्ठा किया था। दोनों इसे पीलीभीत के बरखेड़ा इलाके में सप्लाई करने जा रहे थे, जहां अधिक दाम मिलने की उम्मीद थी। पुलिस के अनुसार दोनों काफी समय से तस्करी में सक्रिय थे और इलाके में छोटे-छोटे तस्करों के जरिए नेटवर्क चला रहे थे। सीओ तृतीय पंकज श्रीवास्तव ने बताया कि पूरे नेटवर्क की जांच शुरू कर दी गई है।

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता
निर्माण खण्ड, लो0नि0वि0, बदायूँ।
ऑनलाइन ई–निविदा आमंत्रण सूचना

No. : 2358 / Nivida(E-T.)/2025-26 Date : 07-11-2025

1. महामहिम राज्यपाल, उ0 प्र0 की ओर से अधिशासी अभियन्ता, निर्माण खण्ड, लोनिवि बदायूँ के अन्तर्गत निम्न तालिका में अंकित विवरण के अनुसार ऑनलाइन ई–निविदा दि0 18.11.2025 से दि0 25.11.2025 की दोपहर 12.00 बजे तक आमंत्रित की गयी हैं:–
2.

Sr. No.	District	Name of work	Estimated cost (in Rs. Lacs)	Bid Security (in Rs.lac)	Cost of Bid Document (Rs.)	Time of completion	Address of Executive Engineer Executing the work	Address of Superintending Engineer	Address of Chief Engineer	Eligible category of Contractor (A,B,C,D)
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
2	Budaun	शाहबाद बिसौली कछला गंगाघाट मार्ग (राज्य मार्ग सं0 –109) पर चौकी बुद्ध विहार से रानेट चौराहा ब्लैक स्पॉट का सुधार कार्य	28.93	2.90	Tender Cost+ Stationery Charges+ GST Rs.944.00	One Month	C.D. P.W.D., Budaun	Budaun-Pilibhit Circle, P.W.D. Bareilly	Bareilly Zone P.W.D., Bareilly	(Registered in Road Signage)
3	Budaun	मेरठ बदायूँ मार्ग (राज्य मार्ग–18) पर गुप्ता होटल के सामने ब्लैक स्पॉट का सुधार कार्य	8.30	0.83	Tender Cost+ Stationery Charges+ GST Rs.856.00	One Month	C.D. P.W.D., Budaun	Budaun-Pilibhit Circle, P.W.D. Bareilly	Bareilly Zone P.W.D., Bareilly	(Registered in Road Signage)
4	Budaun	मेरठ बदायूँ मार्ग (राज्य मार्ग–18) पर ज्वालापुर ब्लैक स्पॉट का सुधार का कार्य।	8.25	0.83	Tender Cost+ Stationery Charges+ GST Rs.856.00	One Month	C.D. P.W.D., Budaun	Budaun-Pilibhit Circle, P.W.D. Bareilly	Bareilly Zone P.W.D., Bareilly	(Registered in Road Signage)

3- बिड डाक्यूमेन्ट वेबसाइट http://etender.up.nic.in. पर दिनांक 18.11.2025 से 25.11.2025 तक उपलब्ध है, निविदाये दिनांक 25.11.2025 को दोपहर 12.00 बजे तक अपलोड की जा सकती हैं। इसकी तकनीकी बिड दिनांक 25.11.2025 को दोपहर 12.30 बजे खोली जायेगी।

निविदा से सम्बन्धित अधिक जानकारी वेबसाइट http://etender.up.nic.in पर उपलब्ध है।

(देवपाल सिंह)
अधिशासी अभियन्ता
निर्माण खण्ड, लो.नि.वि., बदायूँ।

UP – 240413 **दिनांक:** 14/11/2025
विज्ञापन वेबसाइट www.up.gov.in **पर उपलब्ध है।**

कार्यालय ग्राम पंचायत ढकनी रजपुरी वि.खं. भुता बरेली

पत्रांकः– 90–लेखा/निविदा आमंत्रण/वर्ष 2025–26 दिनांक 11.11.2025

अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना

समस्त पंजीकृत फर्मो को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत ढकनी रजपुरी में मनरेगा योजना के अन्तर्गत वर्ष 2025–26 में सी.सी. रोड कार्य होना है, सामग्री, सीमेंट, बजरफुट, बजरी, रेता प्रथम ईट रोड़ा आदि आपूर्ति हेतु निविदा आमंत्रित की जाती है, समस्त निविदाएं कार्यालय ग्राम पंचायत में दिनांक 18.11.2025 तक जमा कर सकते हैं, जिस फर्म का टेंडर सबसे कम दर का होगा ग्राम पंचायत द्वारा उसी को स्वीकार किया जायेगा निविदाएं 19.11. 2025 को दोपहर 12 बजे खोली जायेगी।

क्र0सं0	कार्य का नाम	अनु0 लागत
1	बीसलपुर रोड से तुलसीराम के घर तक सी0सी0 रोड निर्माण कार्य।	3.99 लाख
2	तुलसीराम के घर से अनूप के घर तक सी0सी0 रोड निर्माण कार्य।	3.99 लाख
3	रामसरन के घर से मनोज के घर तक सी0सी0 रोड व नाली निर्माण।	3.99 लाख

अजेय राघव सचिव **नरेन्द्र कुमार प्रधान**

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता
निर्माण खण्ड–3, लो0नि0वि0, लखीमपुर–खीरी

पत्रांक :– 2138 / ई–प्रोक्योरमेण्ट नोटिस / 2025 दिनाँक :– 10.11.2025

निविदा सूचना
ई–प्रोक्योरमेण्ट नोटिस
प्रथम आमंत्रण

महामहिम राज्यपाल, उ0प्र0 की ओर से लोक निर्माण विभाग, उ0प्र0 में "मार्ग निर्माण कार्यो" के कार्य हेतु ''ए'', ''बी'', ''सी'' एवं ''डी'' .श्रेणी के पात्र पंजीकृत निविदादाताओं से ई–टेण्डरिंग के माध्यम से नीचे दर्शाये गये कार्य हेतु निविदा आमंत्रित की जाती है।

क्र0 सं0	जनपद का नाम	कार्य का नाम	कार्य की लागत (लाख में)	धरोहर धनराशि (लाख में)	निविदा का मूल्य समस्त कर सहित (रू0 में)	कार्य पूर्ण करने की अवधि (वर्षा ऋतु सहित)
1	2	3	4	5	6	7
1	खीरी	सेमरहिया सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–1 व 2(150) में विशेष मरम्मत का कार्य।	16.00	1.60	944.00	02 माह
2	खीरी	बल्लीपुर सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–1(500) व 2(500) में विशेष मरम्मत का कार्य।	11.00	1.10	856.00	02 माह
3	खीरी	छेदुईपतिया सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–2 से हक्कलपुरवा सम्पर्क मार्ग के किमी0–1 व 2(100) में विशेष मरम्मत का कार्य।	15.00	1.50	856.00	02 माह
4	खीरी	विष्णूपुरवा सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–1 व 2(050) में विशेष मरम्मत का कार्य।	17.00	1.70	944.00	02 माह
5	खीरी	धर्मापुरवा सम्पर्क मार्ग के विशेष मरम्मत का कार्य। (चैनेज–0.600 से 0.700 में सी0सी0 रोड)	7.00	0.70	856.00	02 माह
6	खीरी	एस0डी0एन0पी0डी0पी0 मार्ग (राज्य मार्ग सं0–101) के कि0मी0–57 से दौलतापुर सम्पक्र मार्ग के कि0मी0–1(250) में विशेष मरम्मत का कार्य।	13.50	1.35	856.00	02 माह
7	खीरी	गुर्गीपुरवा से सोसायटी (पिछलापुरवा) सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–1 व 2(200) में विशेष मरम्मत का कार्य।	23.00	2.30	944.00	02 माह
8	खीरी	रननगर तिराहे से गुरूद्वारा सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–1 में विशेष मरम्मत का कार्य।	12.50	1.25	856.00	02 माह
9	खीरी	रननगर तिराहे से दीपनगर सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–1 व 2(500) में विशेष मरम्मत का कार्य।	18.50	1.85	944.00	02 माह
10	खीरी	पोया सम्पर्क मार्ग के विशेष मरम्मत का कार्य।	18.00	1.80	944.00	02 माह
11	खीरी	बलेरा सम्पर्क मार्ग के विशेष मरम्मत का कार्य।	19.00	1.90	944.00	02 माह
12	खीरी	पटिहन घोला रोड से मुजहा सम्पर्क मार्ग में विशेष मरम्मत का कार्य।	19.00	1.90	944.00	02 माह
13	खीरी	चन्दापुर सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–1(250) में विशेष मरम्मत का कार्य।	19.00	1.90	944.00	02 माह
14	खीरी	छिदनीपुरवा से फुलवरिया वाया सिमरीपुरवा इटैय्या सम्पर्क मार्ग के चैनेज–3.600 से 3.700 में विशेष मरम्मत का कार्य।	5.50	0.55	856.00	02 माह
15	खीरी	बुद्धापुरवा सम्पर्क मार्ग के विशेष मरम्मत का कार्य।	15.00	1.50	856.00	02 माह
16	खीरी	बजाही सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–4(200), 5 व 6(400) में विशेष मरम्मत का कार्य।	22.50	2.25	944.00	02 माह
17	खीरी	पचपेड़ा सम्पर्क मार्ग के विशेष मरम्मत का कार्य। (आबादी भाग में सी0सी0)	10.00	1.00	856.00	02 माह
18	खीरी	कृष्णानगर कालोनी सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–1 में विशेष मरम्मत का कार्य।	26.00	2.60	944.00	02 माह
19	खीरी	मजबी टोला (मलहटी टोला) सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–1 में विशेष मरम्मत का कार्य।	28.50	2.85	944.00	02 माह
20	खीरी	बासुकपुर सम्पर्क मार्ग कि0मी0–1 के आबादी भाग चैनेज–0.740 से 0.850 तक सी0सी0 मार्ग के विशेष मरम्मत का कार्य।	6.50	0.65	856.00	02 माह
21	खीरी	चमरौधा सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–1(850) में विशेष मरम्मत का कार्य।	32.00	3.20	944.00	02 माह
22	खीरी	बिजौरिया सैयदपुरवा सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–1 व 2(100) में विशेष मरम्मत का कार्य।	24.50	2.45	944.00	02 माह
23	खीरी	बीवीपुर त्रिकोलिया सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–1 में मरम्मत व रोड सेफ्टी का कार्य।	9.50	0.95	856.00	02 माह
24	खीरी	गढैय्या सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–2 में 1 1000 एम0एम0 डाया हयूम पाईप का निर्माण कार्य।	2.00	0.20	679.00	02 माह
25	खीरी	एल0बी0बी0 मार्ग (राज्य मार्ग सं0–90) के कि0मी0–32 मलूकापुर सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–3(100) में विशेष मरम्मत का कार्य।	2.00	0.20	679.00	02 माह
26	खीरी	गुजारा सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–1(630) में विशेष मरम्मत का कार्य।	28.00	2.80	944.00	02 माह
27	खीरी	गोपालापुर सम्पर्क मार्ग पर विशेष मरम्मत के अन्तर्गत तालाब के किनारे रिटेनिंग वॉल के निर्माण कार्य।	14.00	1.40	856.00	02 माह
28	खीरी	अग्गर बुजुर्ग सम्पर्क मार्ग के आबादी भाग चैनेज–1.300 से 1.500 तक सी0सी0 मार्ग के विशेष मरम्मत का कार्य।	14.50	1.45	856.00	02 माह
29	खीरी	कंचनपुर सम्पर्क मार्ग के विशेष मरम्मत का कार्य।	7.00	0.70	856.00	02 माह
30	खीरी	दुर्गापुर सम्पर्क मार्ग के विशेष मरम्मत का कार्य।	8.50	0.85	856.00	02 माह
31	खीरी	लखीमपुर–बिजुआ–भीरा–पलिया–दुधवा–गौरीफण्टा मार्ग (राज्य मार्ग सं0–90) से मिठना बोझी सम्पर्क मार्ग वाया भीखमपुर के कि0मी0–4(850) व 5(550) में विशेष मरम्मत का कार्य।	15.50	1.55	944.00	02 माह

बिड डाक्यूमेन्ट वेबसाइट http://etender.up.nic.in पर दिनाँक 18.11.2025 से 25.11.2025 तक उपलब्ध है जो कि दिनाँक 25.11.2025 को समय दोपहर 12:00 बजे तक अपलोड किये जा सकते है। इसकी तकनीकी बिड दिनाँक 25.11.2025 को दोपहर 12:30 बजे खोली जायेगी।

निविदा से सम्बन्धित अधिक जानकारी वेबसाइट http://etender.up.nic.in पर उपलब्ध है।

(अनिल कुमार यादव)
अधिशासी अभियन्ता
निर्माण खण्ड–3, लो0नि0वि0,
लखीमपुर–खीरी।

UP – 240435 **दिनांक:** 14/11/2025
विज्ञापन वेबसाइट www.up.gov.in **पर उपलब्ध है।**

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता
निर्माण खण्ड–3, लो0नि0वि0, लखीमपुर–खीरी

पत्रांक :– 2139 / ई–प्रोक्योरमेण्ट नोटिस / 2025 दिनाँक :–

निविदा सूचना
ई–प्रोक्योरमेण्ट नोटिस
प्रथम आमंत्रण

महामहिम राज्यपाल, उ0प्र0 की ओर से लोक निर्माण विभाग, उ0प्र0 में "मार्ग निर्माण कार्यो" के कार्य हेतु ''ए'', ''बी'', ''सी'' एवं ''डी'' .श्रेणी के पात्र पंजीकृत निविदादाताओं से ई–टेण्डरिंग के माध्यम से नीचे दर्शाये गये कार्य हेतु निविदा आमंत्रित की जाती है।

क्र0 सं0	जनपद का नाम	कार्य का नाम	कार्य की लागत (लाख में)	धरोहर धनराशि (लाख में)	निविदा का मूल्य समस्त कर सहित (रू0 में)	कार्य पूर्ण करने की अवधि (वर्षा ऋतु सहित)
1	2	3	4	5	6	7
1	खीरी	ग्राम सभा तिकोनिया से गंगानगर वाया बनवीरपुर सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–1 व 2(300) में विशेष मरम्मत का कार्य।	20.00	2.00	944.00	02 माह
2	खीरी	सरियापारा एस0एस0बी0 कैम्प सम्पर्क मार्ग के कि0मी0–1(700) में विशेष मरम्मत का कार्य।	26.50	2.65	944.00	02 माह
3	खीरी	सिंगहिया सम्पर्क मार्ग के किमी0–2(900) में विशेष मरम्मत का कार्य।	33.00	3.30	944.00	02 माह

बिड डाक्यूमेन्ट वेबसाइट http://etender.up.nic.in पर दिनाँक 18.11.2025 से 25.11.2025 तक उपलब्ध है जो कि दिनाँक 25.11.2025 को समय दोपहर 12:00 बजे तक अपलोड किये जा सकते है। इसकी तकनीकी बिड दिनाँक 25.11.2025 को दोपहर 12:30 बजे खोली जायेगी।

निविदा से सम्बन्धित अधिक जानकारी वेबसाइट http://etender.up.nic.in पर उपलब्ध है।

(अनिल कुमार यादव)
अधिशासी अभियन्ता
निर्माण खण्ड–3, लो0नि0वि0,
लखीमपुर–खीरी।

UP – 240436 **दिनांक:** 14/11/2025
विज्ञापन वेबसाइट www.up.gov.in **पर उपलब्ध है।**

पूर्वोत्तर रेलवे

ई–प्रापण निविदा सं.:
उप मु.इं.-निर्माण-एलजेएन-08-2025

भारत के राष्ट्रपति की ओर से मुख्य प्रशासनिक अधिकारी / निर्माण, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु ई-प्रापण निविदायें आमंत्रित करते हैं:–

क्रम सं.-1, खुली निविदा संख्याः उप मु.इं.-नि.-एलजेएन-08-2025, दिनांक 14-11-2025, कार्य का नामः पूर्वोत्तर रेलवेलखनऊ मण्डल में बहराइच–नानपारा–नेपालगंज रोड आमान परिवर्तन खण्ड के अन्तर्गत विभिन्न यार्डो (बहराइच, रिसिया, मटेरा, नानपारा एवं नेपालगंज रोड आदि) में यार्ड जल निकासी कार्यो का निष्पादन, एल.एच.एस.–51 का शेष कार्य, सी.आर.एस. टिप्पणियों के अनुपालन में आवश्यक विभिन्न विविध कार्य। अनुमानित निविदा मूल्यः ₹ 13,55,09,827.08, बयाना राशिः ₹ 8,27,600/-, निविदा प्रपत्र का मूल्यः -निल-, कार्य पूर्ण करने की अवधिः 06 (छः) माह।

● क्रम सं.-1, ई-टेण्डर डालने की अन्तिम तिथि 05-12-2025 समय 15:00 बजे तक है तथा उसी दिन 15:30 बजे मुख्य प्रशासनिक अधिकारी / निर्माण / पूर्वोत्तर रेलवे / गोरखपुर के कार्यालय में खोली जायेगी। ● निविदा सूचना, योग्यता मापदण्ड, नियम एवं शर्तें वेबसाइट *https://www.ireps.gov.in* अथवा वेबसाइट *www.ner.indianrailways.gov.in* पर भी देखा जा सकता है। ● निविदा सूचना में यदि हिन्दी या अंग्रेजी के आलेखों में कोई भिन्नता होती है तो अंग्रेजी के ही आलेख मान्य होगें।

उप मुख्य इंजीनियर / निर्माण-II,
मुजाधि / डब्लू-333 **लखनऊ जं.**

गाड़ियों की छतों व पावदान पर कदापि यात्रा न करें।

छात्रों ने विज्ञान, नवाचार प्रदर्शनी में दिखाई प्रतिभा

कार्यालय संवाददाता, बरेली

● **केशलता इंटरनेशनल स्कूल में इंटर स्कूल मैथ्स, साइंस एवं सोशल साइंस की लगी प्रदर्शनीय**

अमृत विचारः केशलता इंटरनेशनल स्कूल में शनिवार को इंटर स्कूल मैथ्स, साइंस एवं सोशल साइंस एग्जीबिशन का आयोजन हुआ। इसमें बरेली और आसपास के 29 विद्यालयों की 120 से अधिक टीमों ने भाग लिया। विद्यार्थियों ने विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं तकनीक से संबंधित विभिन्न मॉडलों एवं प्रोजेक्टों को प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि कैंट विधायक संजीव अग्रवाल ने फीता काटकर की। उन्होंने विद्यालय के चेयरमैन डॉ. केशव कुमार अग्रवाल एवं डायरेक्टर डॉ. लता अग्रवाल के साथ चंदन का पौधा रोपा। प्रदर्शनी में छात्रों ने गणित, विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों पर आकर्षक मॉडलों, प्रयोगों और प्रस्तुतियों के माध्यम से अपने ज्ञान का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

मुख्य अतिथि ने कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों में नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करते हैं। उन्हें भविष्य के वैज्ञानिक, शोधकर्ता एवं समाजसेवी बनने की दिशा में प्रेरित करते हैं। चेयरमैन डॉ. केशव कुमार अग्रवाल ने सभी अतिथियों, विद्यालय प्रतिनिधियों और छात्रों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों में खोज और सीखने की भावना को जागृत करना है। डायरेक्टर डॉ. लता अग्रवाल ने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि आप सभी की मेहनत और लगन देखकर गर्व होता है। यही उत्साह और जिज्ञासा आपको जीवन में नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएगी। प्रधानाचार्य ममतेश माहेश्वरी ने अपने स्कूल और प्रदर्शनी की विस्तार से जानकारी दी।

कार्यालय- जिला कार्यक्रम अधिकारी बाल विकास, बरेली

पत्रांक: सी–26402जि.का.का./चयन विज्ञप्ति/2025–26 दिनांक: 15.11.2025

विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि शासनादेश संख्या–1/1092245/2025/3313/58–1–2025 (197687) वाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार, अनुभाग लखनऊ दिनांक 17 सितम्बर 2025 में वर्णित व्यवस्थानुसार जनपद बरेली के शहरी/ग्रामीण परिक्षेत्र में संचालित बाल विकास परियोजना–नवाबगंज शहर, फतेहगंज पश्चिमी, मझगवां, भदपुरा एवं क्यारा में आंगनबाड़ी कार्यकत्री के चयन हेतु मानदेय पर आधारित रिक्त पदों पर नियुक्ति हेतु सीधी भर्ती प्रक्रिया के तहत विभागीय वेबसाइट http://upanganwadibharti.in पर पात्र महिला अभ्यर्थियों से ऑनलाइन आवेदन–पत्र आमंत्रित किये जाते हैं।

क्र.	परियोजना का नाम	कुल रिक्त पदों की संख्या	आंगनबाड़ी कार्यकत्री के कुल रिक्त पदों का आरक्षणवार विवरण			
			सामान्य/अनारक्षित	अन्य पिछड़ा वर्ग	अनुसूचित जाति/जनजाति	कुल पद
1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.
01	नवाबगंज	1	0	0	1	01
02	शहर	2	1	1	0	02
03	फतेहगंज पश्चिमी	2	2	0	0	02
04	मझगवां	2	1	0	1	02
05	भदपुरा	1	0	0	1	01
06	क्यारा	1	0	0	1	01
योग		09	04	01	04	09

विज्ञप्ति पदों की अर्हता एवं आवेदन पत्र भरने हेतु विशेष निर्देशः–

1. आंगनवाड़ी कार्यकत्री के पद हेतु न्यूनतम शैक्षिक योग्यता इण्टरमीडिएट या उसके समकक्ष होगी एवं अधिकतम योग्यता परास्नातक होगी।
2. आंगनवाड़ी कार्यकत्री पद हेतु आवेदिका की न्यूनतम आयु 18 वर्ष व अधिकतम आयु 35 वर्ष होगी। कटऑफ डेट का निर्धारण दिनांक 01 जुलाई 2025 होगा/ आयु के सम्बन्ध में हाईस्कूल अंकपत्र एवं प्रमाण पत्र में अंकित जन्मतिथि ही मान्य होगी।

चयन वरीयता

(I) उसी ग्राम सभा/वार्ड की निवासी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवार की विधवा महिला।
(II) ग्राम समा/वार्ड की निवासी गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवार की विधिक तलाकशुदा या परित्यकता महिला।
(III) विधवा/तलाकशुदा/परित्यकता महिला के गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवार की अभ्यर्थी न मिलने पर उसी ग्रामसभाध वार्ड की गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवार की महिलाएं ।

उपरोक्तानुसार कोई अभ्यर्थी न मिलने पर उपरोक्त वरीयता के क्रम में ही–

(I) उसी ग्राम सभा/वार्ड की निवासी गरीबी रेखा के ऊपर जीवन यापन करने वाले परिवार की विधवा महिला।
(II) ग्राम सभा/वार्ड की निवासी गरीबी रेखा से ऊपर जीवन यापन करने वाले परिवार की विधिक तलाकशुदा या परित्यकता महिला।
(III) विधवा/तलाकशुदा/परित्यकता महिला के गरीबी रेखा के ऊपर जीवन यापन करने वाले परिवार की अभ्यर्थी न मिलने पर उसी ग्राम सभा/वार्ड की गरीबी रेखा के ऊपर जीवन यापन करने वाले परिवार की महिलाएं ।

3. विधवा हेतु ग्राम पंचायत अधिकारी/सम्बन्धित नगर निकाय द्वारा निर्गत मृत्यु प्रमाण पत्र एवं परिवार की प्रमाणित नकल मान्य होगी। तलाकशुदाध परित्यकता के सम्बन्ध में मा0 उच्च न्यायालय द्वारा निर्गत विधिक आदेश मान्य होगें ।
4. आय प्रमाण पत्र के सम्बन्ध में उ0प्र0 शासन के राजस्व अनुमाग–9 द्वारा नर्गत शासनोदश संख्या–3959/1–9–11 रा.–9 दिनांक 30.09.2021 (यथा संशोधित) के क्रम में सक्षम स्तर से निर्गत आय प्रमाण पत्र ही मान्य होगें, जिनका आनलाइन सत्यापन सम्भव हो।
5. निवास एवं जाति प्रमाण पत्र के सम्बन्ध में तहसील से आनलाइन डिजिटल हस्ताक्षर से निर्गत निवास व जाति प्रमाण पत्र ही मान्य होगें जिनका ऑनलाइन सत्यापन सम्भव हो।
6. गरीबी रेखा की आय सीमा का पुर्निधारण किये जाने के सम्बन्ध में समाज कल्याण अनुमाग–2 उ.प्र. शासन के शासनादेश संख्या 22/2015/2123/26–2–2015 दिनांक 14 सितम्बर 2025 (यथा संशोधित) द्वारा ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में गरीवी रेखा हेतु निर्धारित आय सीमा का अनुपालन किया जायेगा।
7. आवेदन पत्र विभागयी वेबसाइट http://upanganwadibharti.in पर उपलब्ध फार्मेट पर आनलाइन व सही–सही सावधनीपूर्वक भरे जायेंगे। आवेदिका द्वारा अभिलेखों की स्वहस्ताक्षरित प्रति, जो स्वच्छ व पठनीय हो, अपलोड की जायेगी, जिनका उल्लेख उनके द्वारा आनलाइन फार्म में किया गया हो।
8. आनलाइन आवेदन करने की अन्तिम तिथि 05 दिसम्बर 2025 होगी।
9. कोई भी आवेदन या अभिलेख/प्रपत्र ऑलाइन या डाक द्वारा मान्य नहीं होगें। यदि आवेदन करने में कोई त्रुटि होती है या कोई तथ्य/आंकड़े/ शैक्षिक अभिलेखों के प्राप्तांक/पूर्णाक गलत या कूटरचित पाए जाएंगे, तो अभ्यर्थन निरस्त कर दिया जायेगा।
10. रिक्त पदों का विवरण कलेक्ट्रेट परिसर, विकास भवन परिसर, तहसील परिसर, खण्ड विकास अधिकारी कार्यालय के सूचना पट, बाल विकास परियोजना अधिकारी कार्यालयों के सूचना पट एवं विभागीय वेबसाइट http://upanganwadibharti.in पर देखा जा सकता है।

नोट– रिक्तियों के सम्बन्ध में यदि कोई त्रुटि होगी तो चयन समिति द्वारा लिया गया निर्णय ही मान्य होगा।
रिक्तियों की संख्या घट या बढ़ सकती है।

मनोज कुमार
जिला कार्यक्रम अधिकारी
बरेली

दूसरे समुदाय की युवती ने वसूले दो लाख रुपये

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचार : बीएससी नर्सिंग के छात्र को दोस्ती और प्यार में फंसाकर दूसरे समुदाय की युवती ने जबरन निकाह कर लिया और दो लाख रुपये ऐंठ लिए। छात्र की मां की तहरीर पर बिथरी चैनपुर पुलिस ने बदायूं निवासी नर्सिंग छात्रा, उसके मां-बाप और भाई के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

सुभाषनगर थाना क्षेत्र के शांति विहार निवासी सुशीला देवी ने बताया कि उनका बेटा कुशल यादव एक प्राइवेट नर्सिंग कॉलेज में पढ़ाई कर रहा है। इंटर्नशिप के दौरान बिथरी सीएचसी में उसकी मुलाकात दूसरे नर्सिंग कॉलेज की छात्रा से हुई। दोनों के बीच मोबाइल पर बातचीत शुरू हुई और फिर छात्रा ने कुशल को अपने परिवार से मिलवाया। आरोप है कि छात्रा के परिवार ने फीस के नाम पर कुशल से दो लाख रुपये ले लिए। इसके बाद छात्रा ने कुशल को बहला-फुसलाकर बदायूं बुला लिया। जहां उसके मां-पिता और भाई ने उसे धमकाकर छात्रा के साथ जबरन निकाह करा दिया। निकाह के बाद युवक को बताया गया कि दो लाख रुपये पत्नी को दिए हैं। अब उसकी आगे की पढ़ाई का खर्च पांच लाख रुपये भी तुम्हें ही देना होगा। कुशल ने रुपये देने से इन्कार किया तो परिजनों ने उस पर दुष्कर्म का झूठा मुकदमा दर्ज कराने की धमकी दी।

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि फर्म मैसर्स गौरी राईस इंडस्ट्रीज पता सी/ 245, शहदाना कॉलोनी बरेली उत्तर प्रदेश 243005 जिसकी पंजीकरण सं0–BAR/0012316 मे दिनांक 20.10.2022 को अन्य साझेदारों की सहमति व स्वेच्छा से श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता पुत्र श्री सत्य प्रकाश को नया साझेदार बनाया गया व दिनांक 31.12.2024 को साझेदार श्री पुनीत सपरा पुत्र श्री केवल नयन सपरा स्वेच्छा से सेवानिवृत्त हो गये। सेवानिवृत्ति के पश्चात पुनीत सपरा का फर्म पर व फर्म का पुनीत सपरा पर कोई शेष बकाया नहीं है व दिनांक 31.12.2024 को ही अन्य साझेदारों की सहमती व अपनी इच्छा से श्री संजीव चांदना फर्म में नये साझेदार के रूप में सम्मलित हुए । वर्तमान में उपरोक्त फर्म में कुल चार साझेदार क्रमशः–राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता 2 संजीव चांदना 3– हर्ष वर्धन वैश्य 4– पुनीत चांदना हैं। एतदद्वारा सूचित किया जाता है कि उक्त के सम्बन्ध में मेरे द्वारा समस्त विधिक औपचारितायें पूर्ण कर ली गयी है।

हर्षवर्धन वैश्य (साझेदार)
मै0 गौरी राईस इंडस्ट्रीज पता- सी/245, शहदाना कॉलोनी बरेली उ.प्र. 243005
पंजीकरण सं. BAR/0012316

युवक को छत से फेंकने का आरोप हाथ-पैर टूटा

बरेली, अमृत विचार : बीएसए ऑफिस में एक युवक ने दबंगों पर जानलेवा हमला कर 20 फुट ऊंची छत से नीचे धक्का देने का आरोप लगाया है। नीचे गिरने से युवक का बायां पैर और दाहिना हाथ टूट गया। युवक की तहरीर पर थाना बारादरी पुलिस ने सात आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है। सुपर सिटी कालोनी निवासी छोटेलाल ने बताया कि 6 नवंबर को वह किसी काम से बीएसए कार्यालय गए थे। आरोप है कि इसी बीच बिथरी चैनपुर निवासी टिंकू और आकाश, शेरगढ़ निवासी महिपाल और उनके साथ चार अज्ञात लोग आए।

अमृत विचार
रविवार, 16 नवंबर 2025

मेरा सर्वधर्मान्परित्यज्य
मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो
मोक्षयिष्यामि मा शुच :॥

संपूर्ण धर्मों का आश्रय छोड़कर तू केवल मेरी शरण में आ जा। मैं तुझे संपूर्ण पापों से मुक्त कर दूंगा, चिंता मत कर।
-भगवान श्रीकृष्ण

सबका साथ सबका विकास और बिहार चुनाव के संदेश

कोई भी घटना अप्रत्याशित नहीं होती। सम्यक आंकलन नहीं होता। हमारी नासमझी और व्यापक अनुभवों का उचित मूल्यांकन नहीं होता। हम अनुमान करते हैं। प्रमाणों की सहायता लेते हैं, लेकिन नियति प्रमाणों की परवाह नहीं करती। प्रमाणों के आंकलन की छोटी सी गलती परिणाम बदल देती है। कभी-कभी परिणाम बदलने की जिजीविषा पूरी शक्ति के साथ चुनौती देती है आकाश को, तब सितारों व ग्रह दशा भी बदल जाती है।

बिहार चुनाव नतीजों ने सबको चौंकाया है। चुनाव में हार जीत होती ही है, लेकिन बिहार की जनता ने कमाल किया है और भारतीय चुनाव के इतिहास में नया अध्याय जोड़ दिया है। संविधान निर्माताओं की भी इच्छा थी कि भारत का लोकतंत्र फले-फूले और जनता अपने प्रतिनिधि चुनने के लिए स्वतंत्र हो। जनता अपने नेता चुनने के अलावा कोई हिंसक रास्ता न अपनाए। इसके लिए स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव आयोग बना। संविधान (अनुच्छेद 324) में मतदाता सूची बनाने से लेकर मतगणना तक की जिम्मेदारी निर्वाचन आयोग पर डाली गई। 1952 से लेकर विधानमंडल व संसद के चुनाव कराए जा रहे हैं।

निष्पक्ष चुनाव का प्रयास देश में पहले से चल रहा है, लेकिन जाति, धनबल, बाहुबल के प्रभाव ने संविधान निर्माताओं की अभिलाषा को पूरा नहीं होने दिया। इसका अर्थ यह नहीं है कि भारतीय राष्ट्र राज्य कमजोर है। भारतीय संविधान निर्माताओं ने संविधान की प्रस्तावना में भारतीय जनता को 'हम भारत के लोग' बनने और होने का आग्रह किया है। राजनीतिक जल्दबाजी में कभी-कभी भारत को हिंदू और मुसलमान का देश कहा जाता है। कोई सिख छोड़ देता है, कोई बुद्ध और महावीर। एक प्रधानमंत्री ने देश के संसाधनों पर मुसलमानों का पहला अधिकार बताया था, लेकिन संविधान निर्माताओं ने 'हम भारत के लोग' कहकर हम सबके सामने एक आदर्श रखा है। हम किसी भी वर्ग या संप्रदाय से संबंधित हो सकते हैं, लेकिन प्रथमतः और अंततः भारतीय हैं। संविधान निर्माताओं ने नागरिकों को जाति, संप्रदाय, मत, पंथ मजहब के द्वारा अभिज्ञात नहीं किया है। दुनिया 21 वीं सदी में अंतरिक्ष में घर बनाने के सपने देख रही है, लेकिन राजनीति जातियों की गिनती में व्यस्त है।

> लोकतंत्र एक जीवनशैली है। विचार आधारित राजनीति लोकतांत्रिक अधिकारों व अवसर का सदुपयोग करती है। समाज को उसका हक मिलता है। बिहार में वैसा नहीं हो रहा था। इतिहास के विद्यार्थी कौटिल्य को बिहार से जोड़ते हैं, तब मगध राज्य था। छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटे देश को राष्ट्र बनाने का काम कौटिल्य ने किया था। छोटे-छोटे दलों को मिलाकर एक सशक्त विकल्प देने का काम भाजपा, जदयू, लोजपा, हम आदि ने किया है। बिहार चुनाव को पूरे देश ने देखा है। चुनाव परिणामों ने किसी को भी निराश नहीं किया। चुनाव में इस बार कोई हिंसा नहीं हुई। बूथ नहीं लूटे गए। अपवाद छोड़कर व्यक्तिगत हमले नहीं हुए।

प्रसन्नता की बात है कि जिस बिहार को बम, पिस्तौल और हिंसा के लिए बदनाम किया गया था, उसी बिहार की जनता ने पुनर्जागरण का स्वप्न देखा है। इस देश के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद बिहार के थे, उन्होंने देश को नई दिशा दी थी। सोमनाथ मंदिर का नवनिर्माण हुआ था। कार्यक्रम संयोजक राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद से मिले थे, उन्हें सोमनाथ मंदिर कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए निमंत्रित किया गया था। प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू नहीं चाहते थे कि भारतीय गणराज्य का राष्ट्रपति किसी धार्मिक आयोजन में हिस्सा ले, लेकिन राजेन्द्र प्रसाद वहां गए। प्रधानमंत्री की इच्छा न होने के बावजूद गए।

हृदय नारायण दीक्षित
पूर्व विधानसभा अध्यक्ष उत्तर प्रदेश

बिहार चुनाव ने किसी भी विभाजक आवाज को अनसुना कर दिया। राजनेता और टिप्पणीकार चुनाव के पहले से ही जीत-हार का खाका बना रहे थे। जातियों के प्रतिशत निकाले जा रहे थे। कहा जाता था कि सरकार बनाने के लिए यादव और मुसलमान मिलकर पर्याप्त हैं, इसलिए चुनाव प्रचार की बहुत आवश्यकता नहीं है। इसी तरह सभी छोटी-बड़ी पार्टियों में जाति का गणित फिट करने की होड़ थी। नतीजा आ जाने पर भी यह विश्लेषण थमा नहीं। एक बड़े चैनल ने कहा कि महिलाओं ने भारी संख्या में वोट दिया। कहा जाता है कि ज्यादातर महिलाओं ने राजग को वोट किया। चुनाव का यह विश्लेषण अधूरा है। चुनाव के समय की राजनीति का समग्र विश्लेषण नहीं हुआ। साथ ही चुनाव के संदेश पर भी चर्चा नहीं हो रही। बिहार के चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हीरो थे, उन्होंने 14 सभाएं की। राजग की तरफ से गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आदि वक्ताओं को जनता ने सुना। नीतीश कुमार का अपना प्रभाव है। आज से नहीं है, पहले से है। वह अनुभवी राजनेता हैं। स्वाभाविक है, उनकी लोकप्रियता का लाभ गठबंधन को मिला है। चुनाव नतीजे राजग के पक्ष में एक तरफा हो गए। दल और उसके समर्थक स्वाभाविक ही खुश हैं। ढोल-बाजे बज रहे हैं। खास बात यह है कि चुनाव नतीजों से खास तरह की उम्मीदें हैं। विशेष प्रकार की प्रसन्नता है। इन नतीजों की उम्मीद नहीं थी। जन सुराज पार्टी के अभियान चलाए जा रहे थे, लेकिन उन्हें कोई सीट नहीं मिली। ऐसी उम्मीद उन्हें भी नहीं थी, जो भारी बहुमत से जीते और हारे हैं, सब मिलकर विकास करें। कुछ समय पहले बिहार में जंगलराज था। अधिकारी पीटे जा रहे थे। अपहरण थे। गुंडा टैक्स थे। राजनीति की प्रतिष्ठित कुर्सियों पर बाहुबली थे। लोग मारे जा रहे थे। हिंसा का जोर था। कोर्ट ने भी बिहार के जंगलराज पर टिप्पणी की थी। जंगलराज शब्द का उपयोग न्यायालय ने किया था। बाहुबलियों की भरमार थी। नीतीश की पिछली सरकार ने जंगलराज पर काबू पा लिया था, लेकिन मध्य वर्ग और टिप्पणीकार चुनाव नतीजों को जाति के आधार पर ही जांच रहे थे। एक समय बिहार में जातियों की सेनाएं थीं। परस्पर युद्ध करती थीं। वह राजनीतिक दलों के ऊपर सवार थीं। जातिवाद से बिहार झुलसता रहा। लोगों में निराशा थी। लोग सोचते थे कि अब जाति के इस प्रेत का सामना करना कठिन हो गया है। जनता के एक वर्ग ने इसे नियति मानकर स्वीकार कर लिया था।

लोकतंत्र एक जीवनशैली है। विचार आधारित राजनीति लोकतांत्रिक अधिकारों व अवसर का सदुपयोग करती है। समाज को उसका हक मिलता है। बिहार में वैसा नहीं हो रहा था। इतिहास के विद्यार्थी कौटिल्य को बिहार से जोड़ते हैं, तब मगध राज्य था। छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटे देश को राष्ट्र बनाने का काम कौटिल्य ने किया था। छोटे-छोटे दलों को मिलाकर एक सशक्त विकल्प देने का काम भाजपा, जदयू, लोजपा, हम आदि ने किया है। बिहार चुनाव को पूरे देश ने देखा है। चुनाव परिणामों ने किसी को भी निराश नहीं किया। चुनाव में इस बार कोई हिंसा नहीं हुई। बूथ नहीं लूटे गए। अपवाद छोड़कर व्यक्तिगत हमले नहीं हुए। वोट डालने की यह शैली पूरे देश द्वारा सराही गई है। जाति ने राष्ट्र को बड़ी क्षति पहुंचाई है। बिहार का संदेश सुस्पष्ट है। राजनीति में विचारधारा की महत्ता बढ़ सकती है, विकास की मांग बढ़ेगी। जाति की बातें नहीं चलेगी। सबका साथ-सबका विकास राजनीति का एजेंडा है ही। उम्मीद है कि इससे भारतीय राजनीति में जाति का महत्व घटेगा। पश्चिम बंगाल के अनुभवी राजनेताओं को भी इससे प्रेरणा मिलेगी। बिहार की आदरणीय जनता को बधाई।

नहीं चले पीके के करतब...

इस बार बिहार चुनाव में तो स्पष्ट हो गया कि चुनाव लड़वाना और चुनाव लड़ने में बहुत फर्क है। किसी दल के लिए रणनीति बनाकर उसे सत्ता तक पहुंचाना बिल्कुल अलग बात है और कोई रणनीतिकार, जो राजनीतिक नहीं है, वह पार्टी बनाकर खुद सत्ता के सपने देखे और साकार भी कर ले, तो आश्चर्य हो सकता है। यह तो कई बार हुआ है कि कोई ब्यूरोक्रेट या फिर कोई गैर-राजनीतिक व्यक्ति कोई दल जॉइनकर चुनाव लड़े और जीत जाए, लेकिन नई पार्टी बनाकर सत्ताधीश बनना आसान नहीं है। अरविंद केजरीवाल अन्ना आंदोलन से निकले थे, एनजीओ चलाते थे और भ्रष्टाचार के खिलाफ जनता की बुलंद आवाज बने थे। वह दौर था, जब जनता महंगाई और भ्रष्टाचार से त्रस्त थी। हिंदुत्व का ज्वार भी इस तरह उबाल नहीं मार रहा था। कुमार विश्वास, संजय सिंह और न जाने कितने प्रोफेशनल केजरीवाल के साथ आ खड़े हुए थे। एक बड़ी टीम समन्वय के साथ काम करते हुए आगे बढ़ रही थी। इसके बावजूद केजरीवाल दो चुनावों में आशातीत सफलता नहीं प्राप्त कर सके, लेकिन 2020 में दिल्ली विधानसभा में बहुमत के साथ जम गए, लेकिन खुद कई आरोपों से घिर गए और फिर जनता ने उन्हें वापस कर दिया, हां पंजाब में सत्ता विरोधी लहर के चलते वहां पूर्ण बहुमत से सरकार बनाने में सफल रहे। दूसरी तरफ प्रशांत की जनसुराज पार्टी अपनी ताकतवर टीम नहीं बना सकी। वह नीतीश पर निशाना साधते रहे और कहते रहे उन्हें मुख्यमंत्री नहीं बनने देंगे।

शैलेश अवस्थी
वरिष्ठ पत्रकार, कानपुर

> यहां यह भी उल्लेखनीय है चिराग पासवान बिहार की राजनीति में बड़े नेता होकर उभरे हैं। लोकसभा के बाद विधानसभा में भी उनका स्कोर शत-प्रतिशत रहा है।

यह सब उनका बड़बोलापन ही साबित हुआ। हां, पीके सोशल मीडिया के हीरो जरूर बने रहे। मीडिया की सुर्खियों में रहे और चर्चा में बने रहने में बाजी मारते रहे, उन्हें कभी बिहार चुनाव में वोट कटुआ तो कभी किंगमेकर बताया जाता रहा, लेकिन उनकी किस्मत से यह उपलब्धि भी बहुत दूर ही रही। याद कीजिए चाणक्य ने सत्ता बदलने की ठानी थी, न कि खुद गद्दी में विराजमान होने की और यह जिद सफल भी रही थी, जिसने इतिहास रच दिया था, लेकिन यहां तो बात खुद सत्ता हासिल करने की थी और अब तो पीके को कौन "चाणक्य" मानेगा। फिलहाल तो राजनीति के प्रशांत कुमार किनारे पर खड़े हैं, अब आगे क्या होगा, उनका भाग्य तय करेगा।

यहां यह भी उल्लेखनीय है चिराग पासवान बिहार की राजनीति में बड़े नेता होकर उभरे हैं। लोकसभा के बाद विधानसभा में भी उनका स्कोर शतप्रतिशत रहा है। अब उनकी साख केंद्र में और बढ़ेगी। वह राजनीतिक घराने से आते हैं, लेकिन उन्होंने अपने को साबित किया है कि राजनीति के आकाश में अलग चमक वाले सितारे बन गए हैं। मानना पड़ेगा कि नीतीश कुमार का भाग्य, नीति, समझ, सोच और भाजपा से समन्वय गजब है। वह बिहार के अब एकक्षत्र नेता हैं, उन्हें हर तबके का वोट मिला है। यह भी तथ्य है बीजेपी ने बिहार चुनाव में करिश्मा किया है। नतीजे बताते हैं कि नीतीश और भाजपा को एक-दूसरे की जरूरत है। अभी तो नीतीश का फिर 10 वीं बार मुख्यमंत्री पद की शपथ लेना तय लग रहा है, लेकिन उन्हें भाजपा की बात भी माननी पड़ेगी। यह भी सच है कि नरेंद्र मोदी का जादू कायम है और अमित शाह की चुनावी योजना शानदार है। इस चुनाव का लोब्बोलवाब यह है कि पीके पीछे चले गए, चिराग पासवान बड़े नेता होकर उभरे और नीतीश कुमार रिकार्डतोड़ मुख्यमंत्री साबित हुए। भाजपा फिर से अपना दबदबा कायम रखने में कामयाब रही। यह भी सच है कि योगी आदित्यनाथ की उपयोगिता पूरे देश में है। अब इसका असर पश्चिम बंगाल, असम और फिर उत्तर प्रदेश के चुनाव में पड़ सकता है। अब चुनाव आयोग और ईवीएम को कठघरे में खड़ा करने से कुछ नहीं होने वाला। जनता ही सर्वोपरि है।

जहां युद्ध होने वाला हो, वह धर्मभूमि ही है

सलिल पांडेय
मिर्जापुर

> ब्रह्मांड क्या नहीं है, इसका ज्ञान हजारों वर्ष पूर्व जिस कृष्ण ने दिया था, उसका कुछ अंश विज्ञान जगत अब दिखा भी रहा है।

जिस भूमि में युद्ध होने वाला हो, शत्रु को पराजित करने के लिए हर चाल चली जाने वाली हो तथा खून की नदियां बहने वाली हो, क्या उसे धर्मभूमि कहा जा सकता है? प्रथम दृष्ट्या तो यह स्वीकार न हो सकेगा कि ऐसी भूमि को धर्मभूमि कहा जाए, लेकिन श्रीमद्भगवतगीता के अनुसार ऐसी भूमि भी धर्मभूमि है। इस पर गहरे स्तर पर चिंतन करने से तो स्पष्ट होता है कि कुरुक्षेत्र की भूमि धर्मभूमि है।

महाभारत युद्ध शुरू होने पहले अर्जुन के कहने पर श्वेतघोड़ों से युक्त रथ को श्रीकृष्ण ने दोनों सेनाओं के मध्य खड़ा किया। श्रीमद्भगवतगीता का प्रारंभ ही अंधे धृतराष्ट्र के एक प्रश्न से शुरू होता है, लेकिन 18 अध्याय पूरा होते-होते भक्ति, कर्म, त्याग, संन्यास, आहार-विहार, दान आदि विषयों पर श्रीकृष्ण ने अर्जुन को पूरा ज्ञान ही नहीं दिया, बल्कि अपना विराट रूप भी दिखाया, जिसमें चर-अचर पूरा ब्रह्मांड दिखाई पड़ रहा है। एक तरह से अर्जुन के माध्यम से आम आदमी तक को कृष्ण के विराट रूप का दर्शन हो रहा है।

ब्रह्मांड क्या नहीं है, इसका ज्ञान हजारों वर्ष पूर्व जिस कृष्ण ने दिया था, उसका कुछ अंश विज्ञान जगत अब दिखा भी रहा है। गीता के प्रारंभ में धृतराष्ट्र ने 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे' शब्दों का प्रयोग किया है। इस दृष्टि से तो कुरुक्षेत्र जहां युद्ध के शंख और नगाड़े बज रहे हों, वह तो रणभूमि कही जाएगी न कि धर्मभूमि, लेकिन श्रीमद्भगवतगीता के अंतिम अध्याय के अंतिम श्लोक में सम्यक् दृष्टि से देखने वाले संजय ने 'यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुधरः, तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम' का जवाब धृतराष्ट्र को देकर युद्धभूमि को धर्मभूमि बना दिया।

वास्तव में जहां विवेक रूपी कृष्ण जैसा जीवन जीने का संविधान बताने वाले हों और उसका अनुपालन करने वाले धनुर्धर अर्जुन हों, वह भूमि धर्मभूमि इसलिए हो जाएगी कि क्योंकि, हर मनुष्य के हृदय में युद्ध चलता रहता है। सकारात्मकता एवं नकारात्मकता की भावनाएं मन में चलती रहती हैं। मन से ही मानव है। मानवोचित आचरण करने से मन धर्म के साथ खड़ा होता है, जबकि गैरमानवोचित कार्य करने से अधर्म के साथ खड़ा हो जाता है।

गोस्वामी तुलसीदास ने मानव शरीर को 'बड़े भाग मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सब ग्रंथहिं गावा' कहा है। जब मन में देवी गुण की प्रधानता होती है, तो यह शरीर धर्मभूमि हो जाता है, जबकि आसुरी शक्तियों के पक्ष में होती है, तो शरीर आसुरी क्षेत्र हो जाता है, लेकिन संजय ने स्पष्ट कर दिया है कि जहां कृष्ण होंगे और अर्जुन होंगे, वहां श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है, वह धर्मभूमि ही है। इसलिए बाहरी महाभारत हो या अंतर्जगत का महाभारत उसे धर्मभूमि ही माना जाएगा।

उत्तराखंडः चुनौतियां और हमारा फर्ज

उत्तराखंड के लिए चौतरफा चुनौतियां हैं। मौसमी आपदा पर तो किसी का नियंत्रण नहीं है, लेकिन उसके जान-माल के नुकसान के प्रभाव को कम करने की चुनौती बराबर बनी रहती है। दिल्ली ब्लास्ट के बाद अब एक और बड़ी चुनौती इस छोटे से पर्वतीय राज्य की आर्थिकी को बनाए रखने के साथ ही नए सिरे से सुरक्षा व्यवस्था चाक-चौबंद रखने की भी है।

> उत्तराखंड सरकार आंतरिक सुरक्षा के तहत कानून और सुरक्षा व्यवस्था को बनाए रखने के ठोस और बेहतर प्रयास कर रही है, तो हमें भी इन प्रयासों में भरपूर सहयोग देना चाहिए।

अपने स्थापना की रजत जयंती मना रहे उत्तराखंड राज्य की भौगोलिक स्थिति की बात करें, तो उत्तराखंड अंतर्राज्यीय और अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं से घिरा हुआ है। प्रदेश की सीमाएं जहां उत्तर में तिब्बत और पूर्व में नेपाल से लगी हैं, तो पश्चिम में हिमाचल प्रदेश और दक्षिण में उत्तर प्रदेश इसकी सीमा से लगे राज्य हैं। कुमाऊं मंडल में ऊधमसिंह नगर, चंपावत और पिथौरागढ़ जिले की अंतर्राष्ट्रीय सीमा से सटे इलाकों में 24 घंटे सातों दिन कड़ी चौकसी रहती है। इन जिलों के सीमांत के इलाके नेपाल और चीन की सीमा से सटे हैं। इसके अलावा ऊधमसिंह नगर जिले की सीमा उत्तर प्रदेश से सटी है, तो गढ़वाल मंडल में देहरादून जिले की सीमा हिमाचल प्रदेश और सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) के अलावा हरिद्वार जिले की सीमा उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले से सटी है। राज्य में साइबर फ्रॉड और ड्रग्स सिंडिकेट का जाल काफी फैल चुका है। पुलिस से लेकर उत्तराखंड एसटीएफ की स्पेशल टीमें रोजाना ही इस जाल को काटने में लगी रहती हैं। सीमावर्ती क्षेत्रों में घुसपैठ के प्रयासों के मामले भी सामने आते रहते हैं और पैरामिलिट्री फोर्स द्वारा ऐसे मामलों में लगातार कड़ी चौकसी से ऐसे प्रयासों को बखूबी विफल किया जा रहा है।

अमित शर्मा
हल्द्वानी

सबसे बड़ी चुनौती यह है कि इस राज्य में अब लोगों को नए चेहरे देखने की आदत पड़ चुकी है। पढ़ने में यह आपको अजीब लग सकता है, लेकिन हकीकत यही है। इसका कारण भी बड़ा दिलचस्प और उत्तराखंड की आर्थिकी से जुड़ा है। दरअसल, उत्तराखंड पर्यटन के साथ ही पवित्र तीर्थस्थलों का राज्य है। यहां मसूरी और नैनीताल की हसीन वादियां हैं, तो तन-मन को असीम शांति और ऊर्जा देने वाले देव स्थान हैं। देवभूमि उत्तराखंड के चार धाम (केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री) के साथ ही गुरुद्वारा हेमकुंड साहिब, आदि कैलाश, धर्मनगरी हरिद्वार और योग नगरी ऋषिकेश पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं और साल भर करोड़ों श्रद्धालु यहां आते हैं। इनके अलावा 100 से ज्यादा ऐसे धार्मिक स्थल भी हैं, जिनकी अपनी विशिष्ट पहचान है। यहां साल भर सैलानियों और श्रद्धालुओं का आना-जाना लगा रहता है और यही वजह है कि यहां के लोगों को रोजाना नए चेहरों को देखने की आदत पड़ चुकी है। देहरादून, हरिद्वार और ऊधमसिंह नगर जिले में औद्योगिक एरिया हैं, जहां अधिकांश बाहरी लोग काम करते हैं। इसके अलावा, हर किसी का सपना पहाड़ पर अपना घर बनाने का होता है इसलिए इस राज्य में रियल एस्टेट का दायरा काफी फैला है। यहां यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि राज्य से समय-समय पर देश और समाज विरोधी गतिविधियों में लिप्त लोगों की भी गिरफ्तारी हो चुकी है। बदले माहौल में अब पुलिस, एसटीएफ और खुफिया एजेंसियों के लिए इन चेहरों में संदिग्ध चेहरे खंगालना भी बड़ी चुनौती है। यह भी राहत भरी बात है कि सरकार ने बहुत पहले से ही राज्य में सत्यापन अभियान शुरू किया है, जिसके सार्थक परिणाम सामने आए हैं। पिछले दिनों राजधानी देहरादून और हरिद्वार से बांग्लादेशी नागरिकों की गिरफ्तारी तक हो चुकी हैं। 'ऑपरेशन कालनेमि' में धर्म के नाम पर लूटने वाले ढोंगी बाबा बेनकाब हो रहे हैं।

निष्कर्ष यही है कि उत्तराखंड सरकार आंतरिक सुरक्षा के तहत कानून और सुरक्षा व्यवस्था को बनाए रखने के ठोस और बेहतर प्रयास कर रही है, तो हमें भी इन प्रयासों में भरपूर सहयोग देना चाहिए। सरकार की भ्रष्टाचार को लेकर जीरो टॉलरेंस नीति की तरह ही राज्य और यहां के हर नागरिक की सुरक्षा उच्च प्राथमिकताओं में है। सरकार को इन प्रयासों को और बेहतर बनाते, बढ़ाते हुए सत्यापन अभियान और मजबूत करने, सीमावर्ती क्षेत्रों में निगरानी, महत्वपूर्ण संस्थानों और धार्मिक स्थलों की सुरक्षा को और मजबूत बनाने की जरूरत है। हर नागरिक की भावना 'राष्ट्र प्रथम' की होनी चाहिए और कर्तव्य यही कि किसी भी समाज व देश विरोधी को पनपने न दिया जाए।

जीवन में बायपास ही असली संस्कृति

जिंदगी हो या अपना देश, यहां सीधे रास्ते से जाने की परंपरा कभी बनी ही नहीं। बायपास ही असली संस्कृति है। दिल की नसें जाम हो जाएं, तो डॉक्टर नया रास्ता काट देता है और लोग खुश होकर कहते हैं आदमी चकाचक हो गया।

सड़क पर ट्रैफिक लगे, तो सरकार बगल से नई सड़क निकाल देती है, असल जाम वहीं पड़ा रहता है, पर लोग सोचते हैं बड़ा विकास हो गया। हेलमेट पहनना नहीं है, तो पुलिस को देखकर तुरंत गली में मुड़ जाना, यही बायपास। पढ़ाई में मेहनत नहीं करना, पर परीक्षा के पहले पूछना कि आउट ऑफ सिलेबस तो नहीं आएगा, यह भी बायपास। नौकरी में योग्यता कम, लेकिन सिफारिश मजबूत हो, तो यह भी बायपास। बिजली के बिल से बचने के लिए मीटर को छोड़कर सीधे तार जोड़ लेना, यह तो राष्ट्रीय कला है। शादी में कुंडली नहीं मिल रही, तो पंडित जी से उपाय करा लो, यह भी बायपास। माफी मांगने की हिम्मत नहीं, तो स्टेटस डाल दो कि गलतियां इंसान से होती हैं, यह भी बायपास।

प्रवीण त्रिवेदी
शिक्षक

यहां हर चीज में पीछे के दरवाजे की तलाश होती है। समस्या का हल ढूंढने से ज्यादा उससे बचकर निकलने के रास्ते पर जोर होता है। मानो पूरी दुनिया का शोध ही इस बात पर हो कि जिम्मेदारी से कैसे बचे। यही कारण है कि यहां सबसे बड़ा ग्रंथ महाभारत नहीं, महा-बायपास लिखा जाना चाहिए।

हर नीति, हर गली, हर दफ्तर, हर रिश्ता, सबमें एक छुपा दरवाजा होता है ताकि किसी को असलियत से सामना न करना पड़े और फिर गर्व से कहा जाता है कि भारतीय जुगाड़ हैं। असल में यह जुगाड़ नहीं, ईमान और जिम्मेदारी का बायपास है। दिल में ब्लॉकेज हो जाए तो चिकित्सा काम कर जाती है, पर देश में जिम्मेदारी बायपास हो जाए, तो तंत्र धीरे-धीरे पक्षाघात में चला जाता है और हम बस इतना कहते हैं कि चलो कोई नया रास्ता ढूंढ लेते हैं।

शुगर फ्री की तरह बी-टीम फ्री हुए औवेसी

बिहार में महागठबंधन (कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल) की करारी हार और भाजपा सहित संपूर्ण एनडीए की बंपर जीत को समझना मुश्किल नहीं है। भाजपा-जनता दल यूनाइटेड सत्तारूढ़ थी, इनकी डबल इंजन की सरकार थी, इनके पास दो-दो सरकारी खजाने हैं। महिलाओं के खाते में दस-दस हजार रुपए डालने का तीर चला, तो लालटेन बुझ गई और हाथ घायल हो गया। महागठबंधन के पास इसकी कोई काट नहीं थी। तेजस्वी यादव ने घर-घर सरकारी नौकरियों का वादा जरूर किया, पर दस हजार देने की हकीकत और नौकरी देने के वादे में अंतर है। मात्र दस हजार में नीतीश कुमार का दसवीं बार मुख्यमंत्री बनना तय हो गया। चुनावी रेवड़ियां पर एतराज किया जाता रहा है, पर ऐन चुनाव से पहले महिलाओं को दस हजार के प्रलोभन का आरोप महागठबंधन पर भारी पड़ सकता था, इसलिए इसकी काट में सरकारी नौकरी का प्रलोभन देना ही तेजस्वी ने मुनासिब समझा। ये तो सत्तारूढ़ एनडीए की कुशल रणनीति थी, जिसकी काट विपक्ष के पास नहीं थी, लेकिन राजद और कांग्रेस ने कुछ गलतियां ऐसी कर दीं, जिससे तेजस्वी यादव और राहुल गांधी की मेहनत पर पानी फिर गया और ये जोड़ी सुपर फ्लॉप हो गई।

कहा जा रहा है कि बहुत पहले यूपी में दो लड़कों (राहुल गांधी और अखिलेश यादव) की जोड़ी बुरी तरह हारी थी, इसके बाद बिहार में दो लड़कों (राहुल और तेजस्वी यादव) की जोड़ी को भी दो गुजरातियों (प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह) ने सुपर फ्लाप साबित कर दिया। विपक्ष के धर्मनिरपेक्ष दलों की हार के बाद कुछ कॉमन जुमले विपक्षियों के बयानों और सोशल मीडिया पर तैरते हैं, जिसमें एआईएमआईएम चीफ असदुद्दीन ओवैसी पर भाजपा की बी-टीम की तोहमत भी शामिल है। बिहार में महागठबंधन की करारी हार और बीजेपी की बड़ी जीत के बाद पहला ऐसा मौका है, जब ओवैसी पर भाजपा की बी टीम की तोहमतें नहीं लग रही हैं और न उनके सिर पर हार का ठीकरा फोड़ा जा रहा है। बिहार में पांच सीटें जीतने के बाद औवेसी को शुगर-फ्री की तर्ज पर भाजपा बी-टीम फ्री करने के कारण हैं। अपने जन्म से ही बी-टीम का इल्जाम सह रहे एआईएमआईएम ने इस आरोप से मुक्ति पानी की सुनियोजित रणनीति तैयार की थी। बिहार चुनाव में दो शक्तिशाली गठबंधन अलग-अलग जातियों को हिस्सेदारी देने के लिए अपने-अपने गठबंधनों को स्वरूप दे रहे थे। औवेसी की पार्टी पिछले विधानसभा चुनाव में पांच सीटें जीती थी और इस बार उसने बड़ी शिद्दत से कोशिश की कि महागठबंधन में उसे एंट्री मिल जाए और पांच सीट जीत चुकी पार्टी ने केवल छह सीटें मांगी। तेजस्वी यादव को खत भेजकर औवेसी ने मात्र छह सीटों का प्रस्ताव रखा था। जवाब नहीं मिला, तो एआईएमआईएम ने उनके दरवाजे पर ढोल-ताशे बजाकर बी-टीम का आरोप लगाने वालों को संदेश देने के लिए कहा कि हम नहीं चाहते कि हमारी वजह से विपक्ष हारे और भाजपा जीते। हम वोट कटवा नहीं बनना चाहते। हम बी-टीम के झूठे आरोपों से बरी होना चाहते हैं।

नवेद शिकोह
वरिष्ठ पत्रकार

महागठबंधन विभिन्न जातियों की हिस्सेदारी के हिसाब से उन्हें ज्यादा सीटें दे रहा हैं, जिनका वोट और जनाधार भी काफी कम है, पर हम पांच सीटें जीते थे और मुस्लिम बाहुल्य विधानसभा क्षेत्रों से केवल छह सीटें ही मांग रहे हैं। संदेशवाहक आग्रह करने के बाद भी तेजस्वी ने औवेसी को अछूत मानकर उनका आग्रह नहीं माना। सीट देना और महागठबंधन में प्रवेश देना, तो दूर तेजस्वी ने ओवैसी के बारे में सख्त शब्दों का प्रयोग किया। कांग्रेस ने भी ओवैसी की जायज मांग और दर्द को महसूस नहीं किया। अंततोगत्वा मुस्लिम समाज महागठबंधन से नाराज हुआ, ओवैसी का साथ दिया और कई सीटों पर मुस्लिम वोटों का बिखराव भी खूब हुआ। यही वजह है कि भाजपा की जीत और धर्मनिरपेक्ष दलों की हार पर पहली बार इस हार का जिम्मेदार ओवैसी को नहीं माना जा रहा है। बी-टीम के तंज नहीं कसे जा रहे हैं। एआईएमआईएम की पांच सीटों की जीत से न केवल मुस्लिम समाज के आंसू पुछ गए हैं, बल्कि मुसलमानों का एक वर्ग खुश हैं और बीजेपी वाले भी ओवैसी की जीत से नाखुश नहीं दिख रहे। शूगर फ्री मिठाई की तरह ओवैसी भाजपा की बी-टीम के ईल्जाम से फ्री दिख रहे हैं।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उ.प्र.), पिन कोड-243006 से मुद्रित एवं 932 कटरा चांद खां, भारत पेट्रोल पंप के सामने पीलीभीत बाईपास रोड बरेली (उ.प्र.) पिन कोड-243005 से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, स्थानीय संपादक- नवीन गुप्ता*** 0581-4000222 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2019/78502, *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र बरेली होगा)।

दशक भर बाद अमरेंद्र बाहुबली एक बार फिर दर्शकों का दिल जीतने लौट रहे हैं। 'बाहुबली: द इटरनल वॉर' का ट्रेलर रिलीज हो चुका है और एस.एस. राजामौली अब अपनी इस एपिक कहानी को नए अंदाज में, एनिमेशन के जरिए आगे बढ़ाने वाले हैं। 2015 की फिल्म बाहुबली में अमरेंद्र की मौत ने दर्शकों को झकझोर दिया था, लेकिन राजामौली की इस दुनिया में उनकी कहानी खत्म नहीं हुई, बल्कि अब एक नया सफर शुरू हो रहा है।

-फीचर डेस्क

एनिमेशन अवतार में होगी बाहुबली की वापसी

थिएटर्स में मिला सरप्राइज, अब आया ट्रेलर

बाहुबली के 10 साल पूरे होने पर राजामौली ने अपनी दोनों फिल्मों को जोड़कर 31 अक्टूबर को 'बाहुबली: द एपिक' नाम से रिलीज किया था। यही फिल्म जब दोबारा थिएटर्स में लगी, तो दर्शकों को बड़ा सरप्राइज मिला। फिल्म की स्क्रीनिंग के साथ 'बाहुबली: द इटरनल वॉर' का टीजर दिखाया गया। अब यह टीजर और ट्रेलर आधिकारिक तौर पर रिलीज हो चुके हैं और इंटरनेट पर खूब चर्चा बटोर रहे हैं।

मौत के बाद देवलोक की यात्रा

इस नई कहानी की शुरुआत वहीं से होती है, जहां अमरेंद्र की जिंदगी खत्म हुई थी। ट्रेलर दिखाता है कि अमरेंद्र की आत्मा देवलोक पहुंचती है और यहीं से देवासुर संग्राम में उसकी भूमिका शुरू होती है। विषासुर और इंद्र के बीच छिड़े इस युद्ध में जब विषासुर कमजोर पड़ता दिखाई देता है, तब अमरेंद्र बाहुबली की एंट्री होती है- भगवान शिव के आशीर्वाद के साथ। रथ पर उनका आगमन और विशाल शिवलिंग के सामने उनकी नटराज मुद्रा, टीजर का हर फ्रेम एनिमेशन प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर देता है।

गजब का एनिमेशन, इंटरनेशनल लेवल की क्वालिटी

'द इटरनल वॉर' की सबसे बड़ी ताकत इसका अनोखा एनिमेशन स्टाइल है। यह थ्री डी नहीं है, लेकिन इसकी विजुअल क्वॉलिटी की तुलना आर्केन और स्पाइडरमैनः इन्टू द स्पाइडरवर्स जैसे अंतर्राष्ट्रीय प्रोजेक्ट्स से की जा रही है। इंडियन माइथोलॉजी का एहसास और उसका आधुनिक प्रेजेंटेशन दोनों मिलकर इसे और भी दिलचस्प बनाते हैं। बैकग्राउंड स्कोर इसे एक ग्रैंड एक्सपीरियंस में बदल देता है।

रिलीज डेट और आगे की तैयारी

'बाहुबली: द इटरनल वॉर' दो पार्ट्स में बनेगी और इसका पहला पार्ट 2027 में रिलीज होगा। दर्शकों को अभी थोड़ा इंतजार करना पड़ेगा, लेकिन ट्रेलर यह वादा तो कर ही देता है कि बाहुबली की दुनिया पहले से कहीं ज्यादा भव्य रूप में वापसी कर रही है।

इंटरनेशनल कोलेबोरेशन और टैलेंटेड डायरेक्टर

राजमौली इस प्रोजेक्ट के प्रेजेंटर हैं और उन्होंने बताया है कि इसे बनाने के लिए कई प्रसिद्ध इंटरनेशनल स्टूडियोज के साथ हाथ मिलाया गया है। फिल्म के डायरेक्टर ईशान शुक्ला पहले ही इंटरनेशनल एनीमेशन कम्युनिटी में अपनी पहचान बना चुके हैं। उनकी डेब्यू शॉर्ट फिल्म अवॉर्ड विनिंग थी और वे स्टार वॉर्सः विजंस का एक एपिसोड भी डायरेक्ट कर चुके हैं। ट्रेलर देखकर साफ लगता है कि वे भारतीय दर्शकों के लिए एक रूटेड, विजुअली शानदार एनिमेशन दुनिया लेकर आ रहे हैं।

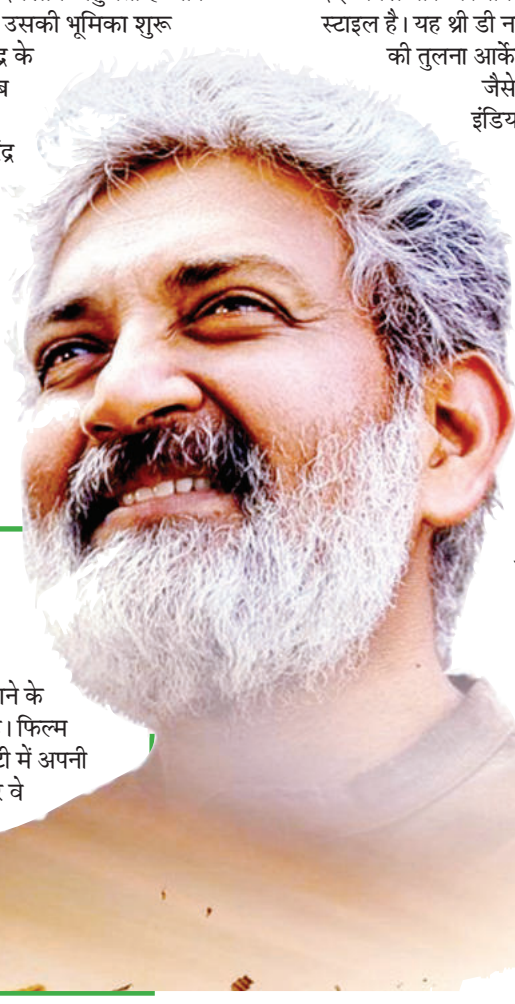

इमोशंस और प्यार तलाशता है

टिल का सिनेमा

जर्मन सिनेमा के सबसे प्रमुख और लोकप्रिय चेहरों में से एक टिल श्वाइगर (Til Schweiger) एक अभिनेता, निर्देशक, पटकथा, लेखक और निर्माता के रूप में अपनी बहुमुखी प्रतिभा के लिए जाने जाते हैं। 19 दिसंबर, 1963 को फ्रीबर्ग में जन्मे, श्वाइगर ने दशकों तक फैले अपने करियर में न केवल जर्मनी में, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी एक महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ा है।

श्वाइगर के करियर की शुरुआत 1990 के दशक में हुई, लेकिन 1997 की फिल्म "नॉकिन' ऑन हेवन 'स डोर" ने उन्हें बड़ी सफलता दिलाई। इस फिल्म ने, जिसे उन्होंने सह-लिखा और सह-निर्मित किया, उन्हें व्यापक पहचान दिलाई और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में पुरस्कार जीते। यह उनके करियर में एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने उन्हें सिर्फ एक अभिनेता से कहीं अधिक स्थापित किया। उनकी अभिनय शैली अक्सर एक निश्चित आकर्षण और कठोरता का मिश्रण होती है, जो उन्हें एक्शन भूमिकाओं से लेकर रोमांटिक कॉमेडी तक में विश्वसनीय बनाती है। उन्होंने हॉलीवुड फिल्मों में भी काम किया है, जिसमें "यू-571", "लारा क्रॉफ्ट : टॉम्ब रेडर- द क्रेडल ऑफ लाइफ" और विशेष रूप से क्वेंटिन टारेंटिनो की "इंग्लोरियस बास्टर्ड्स" शामिल है, जिसमें 'द बेयर यहूदी' की उनकी भूमिका को खूब सराहा गया। हालांकि जर्मनी में उनकी सबसे बड़ी लोकप्रियता उनकी निर्देशित फिल्मों से आती है। "हेड-ऑन" जैसी समीक्षकों द्वारा प्रशंसित फिल्मों के बाद, उन्होंने रोमांटिक कॉमेडी की ओर रुख किया और "फोर लव्ड वन्स", "रैबिट विदाउट ईयर्स" और इसकी अगली कड़ी जैसी जबरदस्त हिट फिल्में दीं। ये फिल्में अक्सर उनके व्यक्तिगत जीवन से प्रेरित होती थीं और इनमें उनके अपने बच्चे भी अभिनय करते थे। इन फिल्मों ने उन्हें जर्मनी के सबसे सफल निर्देशकों में से एक बना दिया, जिनकी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड तोड़ती थीं।

श्वाइगर का सिनेमा अक्सर मानवीय भावनाओं, पारिवारिक बंधनों और प्यार की खोज पर केंद्रित होता है। उनकी फिल्मों की अक्सर आलोचना की जाती है कि वे बहुत अधिक "मुख्यधारा" या भावुक होती हैं, लेकिन उनकी व्यावसायिक सफलता उनकी लोकप्रियता को दर्शाती है।

ऊपर आका, नीचे काका

जिंदगी का सफर

एक बार सलमान खान ने कहा था कि राजेश खन्ना जैसा स्टारडम कभी किसी का नहीं रहा। यकीनन राजेश खन्ना अपने जीवन में ही मिथ बन गए थे। भारतीय सिनेमा के इतिहास में अगर किसी अभिनेता को 'सुपरस्टार' की उपाधि सबसे पहले मिली, तो वह निस्संदेह राजेश खन्ना ही थे। उनका असली नाम जतिन खन्ना था। उनका जन्म 29 दिसंबर 1942 को अमृतसर, पंजाब में हुआ। उन्हें उनके रिश्तेदार चुन्नीलाल खन्ना और लीलावती खन्ना ने गोद लिया और उनका बचपन मुंबई में बीता। मुंबई के गिरगांव में पले-बढ़े जतिन ने सेंट सेबेस्टियन स्कूल में पढ़ाई की, जहां जीतेंद्र उनके सहपाठी थे।

अभिनय के जुनून ने राजेश खन्ना को 1965 के ऑल इंडिया टैलेंट कॉन्टेस्ट में जीत दिलाई, जिसने उनके लिए बॉलीवुड के दरवाजे खोल दिए। उन्होंने 1966 में फिल्म 'आखिरी खत' से अपने करियर की शुरुआत की। हालांकि उन्हें 1969 की फिल्म 'आराधना' से मिली जबरदस्त सफलता ने रातों-रात स्टार बना दिया। इस फिल्म में शर्मिला टैगोर के साथ उनकी जोड़ी और एसडी बर्मन का संगीत, विशेष रूप से 'मेरे सपनों की रानी' गीत, चार्टबस्टर बन गए। आराधना की सफलता ने एक ऐसे दौर की शुरुआत की, जिसे 'राजेश खन्ना युग' कहा जाता है। 1969 से 1972 के बीच उन्होंने लगातार 15 सोलो सुपरहिट फिल्में देने का एक अभूतपूर्व रिकॉर्ड बनाया, जो आज तक कोई नहीं तोड़ पाया। इस सुनहरे दौर ने उन्हें 'काका' का लोकप्रिय नाम दिया। उनकी अभूतपूर्व सफलता की वजह से उन दिनों एक मुहावरा चल निकला था, 'ऊपर आका, नीचे काका'। उनकी लोकप्रियता पागलपन की हद तक थी। महिला प्रशंसक उन्हें खून से खत लिखती थीं, उनकी कार को लिपस्टिक से चूमकर लाल कर देती थीं।

राजेश खन्ना अपनी सहज अभिनय शैली और संवाद अदायगी के लिए जाने जाते थे। उन्होंने विभिन्न शैलियों की फिल्मों में काम किया। उनकी कुछ सबसे यादगार फिल्मों में 'आनंद' (जिसके लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का फिल्मफेयर पुरस्कार मिला), 'कटी पतंग', 'अमर प्रेम', 'सफर', 'बावर्ची', 'खामोशी', 'सौतन' और 'नमक हराम' शामिल हैं। उनकी फिल्मों का संगीत हमेशा हिट रहा, जिसमें किशोर कुमार की आवाज ने चार चांद लगा दिए।

1973 में राजेश खन्ना ने अपने से बहुत छोटी नवोदित अभिनेत्री डिंपल कपाड़िया से शादी कर ली। उनकी दो बेटियां हुईं, ट्विंकल खन्ना और रिंकी खन्ना। हालांकि

1982 में उनके रिश्ते में दरार आ गई और वे अलग रहने लगे। अभिनय के अलावा, राजेश खन्ना ने राजनीति में भी हाथ आजमाया। वह कांग्रेस पार्टी के सदस्य बने और 1991 से 1996 तक नई दिल्ली से लोकसभा सांसद के रूप में कार्य किया। अपने जीवन के अंतिम वर्षों में राजेश खन्ना कैंसर से जूझ रहे थे। 18 जुलाई 2012 को 69 वर्ष की आयु में अंतिम सांस ली। भले ही बाद में अमिताभ बच्चन और अन्य सितारों ने लोकप्रियता के नए कीर्तिमान स्थापित किए, लेकिन राजेश खन्ना का 'पहला सुपरस्टार' का दर्जा हमेशा अमर रहेगा। 2013 में उन्हें मरणोपरांत पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। भारतीय सिनेमा में उनका योगदान और उनका स्टारडम हमेशा याद किया जाएगा।

मॉडल आफ द वीक

नाम: श्रेया मेहरोत्रा

टाउन: कानपुर

एजूकेशन: स्नातक (एनआईएफटी)

अचीवमेंट: मिस इंडिया 2020 एंड एआई डॉयेक्टर - गूगल पार्टनर

ड्रीम: बॉलीवुड एक्टर शाहरुख खान और अमेरिकी सिंगर कैटी पैरी के साथ काम करना।

आंध्र को 5.2 लाख करोड़ के निवेश का मिला भरोसा

विशाखापत्तनम। आंध्र प्रदेश के ऊर्जा मंत्री जी रवि कुमार ने कहा कि राज्य को दो दिनों में ऊर्जा क्षेत्र में 5 .2 लाख करोड़ के निवेश का भरोसा मिला। इससे 2 .6 लाख से अधिक रोजगार के अवसर तैयार होने की उम्मीद है। ये आश्वासन 13 और 14 नवंबर को 30वें सीआईआई साझेदारी शिखर सम्मेलन के दौरान मिले। इनमें नवीकरणीय ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन, पंप भंडारण, जैव ईंधन, विनिर्माण और हाइब्रिड नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएं शामिल हैं।

अमृत विचार

बरेली, रविवार, 16 नवंबर 2025

www.amritvichar.com

बिजनेस ब्रीफ

सीएचआरओ में रिलायंस की एचआर बिंद्रा शामिल

नई दिल्ली। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड की मानव संसाधन (एचआर) प्रमुख इरा बिंद्रा को दुनिया की शीर्ष सीएचआरओ में शामिल किया गया है। रिलायंस इस सूची में शामिल होने वाली एकमात्र भारतीय कंपनी है। कार्यकारी खोज और नेतृत्व सलाहकार क्षेत्र की अग्रणी कंपनी एन2ग्रोथ ने 2025 लीडर्स40 शीर्ष मुख्य मानव संसाधन अधिकारी (सीएचआरओ) पुरस्कार की घोषणा की। इस साल की सूची में दुनिया की कुछ सबसे बड़ी और प्रभावशाली कंपनियों के प्रमुख सीएचआरओ शामिल हैं। इनमें लिसा बकिंघम (वायल्टो पार्टनर्स), मैथ्यू ब्रेइटफेल्डर (अपोलो ग्लोबल मैनेजमेंट), रॉबिन लियोपोल्ड (जेपी मॉर्गनचेज), क्रिस्टी पाम्बियांची (कैटरपिलर इंक.), त्रिशा कॉनली (ल्योंडेलबेसेल), मारल कजानजियान (मूडीज) और डोना मॉरिस (वॉलमार्ट) प्रमुख नाम हैं।

आईआरबी को मिली उप्र की टीओटी परियोजना

नई दिल्ली। आईआरबी इंफ्रास्ट्रक्चर ट्रस्ट को उत्तर प्रदेश में एनएचएआई से 9,270 करोड़ की अग्रिम लागत पर एक टोल परिचालन एवं हस्तांतरण (टीओटी) परियोजना मिली है। यह परियोजना पहले घोषित भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) के परिसंपत्ति मौद्रिकरण कार्यक्रम का हिस्सा है। परियोजना के प्रबंधक आईआरबी इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपर्स ने बताया कि आईआरबी इंफ्रास्ट्रक्चर ट्रस्ट को एनएच-27 पर लखनऊ-अयोध्या-गोरखपुर गलियारे और एनएच-731 पर लखनऊ-वाराणसी गलियारे के लिए 20 साल की आय पर आधारित अवधि वाला अनुबंध-पत्र एनएचएआई से मिला है।

हिंदुस्तान जिंक को मिला खनन का लाइसेंस

नई दिल्ली। हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड (एचजेडएल) को आंध्र प्रदेश सरकार से टंगस्टन ब्लॉक की खोज और खनन का लाइसेंस मिल गया है। यह वेदांता समूह की कंपनी के लिए महत्वपूर्ण कदम है, क्योंकि एचजेडएल जिंक, सीसा और चांदी के कारोबार से आगे बढ़कर उच्च मूल्य वाले और उन्नत विनिर्माण में महत्वपूर्ण खनिजों में विस्तार की दिशा में काम कर रही है। हिंदुस्तान जिंक को सरकार से लाइसेंस प्राप्त होने के बाद टंगस्टन और संबद्ध खनिज ब्लॉक को बोलीदाता के रूप में घोषित किया गया है।

कनाडा से फिर वार्ता के सभी विकल्प खुले : पीयूष

केंद्रीय उद्योग मंत्री ने की कनाडा के आर्थिक विकास मंत्री सिद्धू के साथ दो दौर की चर्चा

विशाखापत्तनम, एजेंसी

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि कनाडा के साथ मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर वार्ता फिर से शुरू करने के संबंध में सभी संभावनाओं पर विचार किया जा रहा है। वाणिज्य मंत्री ने बताया कि उन्होंने कनाडा के निर्यात संवर्धन, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और आर्थिक विकास मंत्री मनिंदर सिद्धू के साथ दो दौर की चर्चा की है और दोनों ही द्विपक्षीय सहयोग तथा रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने के तरीकों पर विचार कर रहे हैं।

गोयल ने कहा हि सभी संभावनाएं खुली हैं। हमने अब तक दो दौर की चर्चा की है। हम दिल्ली में एक उच्च स्तरीय मंत्रिस्तरीय बैठक के लिए मिले थे। हमने द्विपक्षीय सहयोग और रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने पर चर्चा की। कनाडा के मंत्री सिद्धू विशाखापत्तनम में आयोजित 30वें भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) साझेदारी शिखर सम्मेलन में भाग लेने आए थे।

● दोनों देश द्विपक्षीय सहयोग तथा रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने पर कर रहे विचार

गोयल ने कहा कि भारत विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) सुधारों को आगे बढ़ाने में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने को तैयार है, लेकिन उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इन सुधारों का स्वरूप विकासशील और अल्पविकसित देशों के परामर्श से तैयार होना चाहिए। यह सुनिश्चित होना चाहिए कि पूरी कवायद कुछ उन्नत देशों के एजेंडे के बजाय वैश्विक कल्याण के लिए हों। गोयल ने कहा कि दुनिया भारत की ताकत और नेतृत्व को पहचानती है और देश एक जिम्मेदार वैश्विक राष्ट्र है तथा यह ग्लोबल साउथ की आवाज बना रहेगा। उन्होंने कहा कि हम (विश्व व्यापार संगठन में) सुधारों का नेतृत्व करना चाहेंगे। लेकिन ये सुधार अन्य विकासशील और कम विकसित देशों के परामर्श से किए जाएंगे, ताकि हम वास्तव केवल कुछ विकसित देशों के एजेंडे के लिए काम ना करके विश्व के कल्याण के लिए काम कर सकें।

वेनेजुएला महत्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्र में भारत के साथ सहयोग, निवेश को उत्सुक

विशाखापत्तनम। दक्षिण अमेरिकी देश वेनेजुएला ने दुर्लभ खनिज क्षेत्र में भारत के साथ सहयोग स्थापित करने और इस क्षेत्र में भारत से निवेश आकर्षित करने की इच्छा प्रकट की है। भारत ने वेनेजुएला से भारतीय औषधियों के लिए बाजार व्यवस्था को आसान बनाने का सुझाव दिया है और वाहन क्षेत्र में भी द्विपक्षीय सहयोग की संभावनाओं का लाभ उठाने पर बल दिया है। वेनेजुएला के खनन विकास मंत्री हेक्टर सिल्वा ने केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल के साथ मुलाकात में द्विपक्षीय आर्थिक एवं व्यापारिक संबंधों पर बातचीत की। सिल्वा यहां चल रहे दो दिवसीय 30वें सीआईआई साझेदारी शिखर सम्मेलन के सिलसिले में आये हैं। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की ओर से शनिवार को जारी विज्ञप्ति के अनुसार दोनों मंत्रियों की बैठक के दौरान, वेनेजुएला से आए प्रतिनिधिमंडल ने खनिज तेल क्षेत्र के अलावा भारत के साथ आर्थिक सहयोग बढ़ाने में रुचि व्यक्त की, जिसमें महत्वपूर्ण खनिजों में के क्षेत्र में सहयोग और भारतीय निवेश आकर्षित करना शामिल है। विज्ञप्ति के मुताबिक गोयल ने द्विपक्षीय संयुक्त समिति की बैठकें फिर शुरू करने की आवश्यकता पर बल दिया। पिछले एक दशक से इसकी बैठक नहीं हुई है। उन्होंने कहा कि वेनेजुएला में ओएनजीसी के खनन और अन्वेषण कार्य से दोनों पक्षों के बीच सहयोग की मजबूत संभावनाएं उत्पन्न हो सकती हैं। गोयल ने वेनेजुएला को भारत से औषधियों का आयात सुगम बनाने के लिए भारतीय फार्माकोपिया को स्वीकार करने पर विचार करने का सुझाव दिया। उन्होंने ऑटोमोबाइल क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के अवसरों का उल्लेख भी किया। उन्होंने कहा कि भारत वेनेजुएला में निवेश की संभावनाओं की तलाश कर रहे व्यवसायों के साथ जुड़ेगा। लैटिन अमेरिकी देश वेनेजुएला खनिज तेल एवं प्राकृतिक गैस का एक प्रमुख उत्पादक एवं निर्यातक देश है। भारत वहां से मुख्यतः खनिज तेल-गैस का आयात करता है। भारत से वहां के लिए किए जाने वाले निर्यात में दवाएं, रसायन, वस्त्र, मशीनरी, इंजीनियरिंग सामान का बड़ा योगदान है।

अमेरिकी शुल्क के बाद जेम्स और आभूषणों का निर्यात 31% घटा

नयी दिल्ली, एजेंसी

अमेरिका में भारतीय उत्पादों पर 50% आयात शुल्क लगाने के बाद अक्टूबर में भारत से जेम्स और आभूषणों के निर्यात में 31% की भारी गिरावट देखी गयी। जेम्स एंड ज्वेलरी एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल (जीजेईपीसी) के अनुसार, अक्टूबर 2025 में देश का जेम्स और आभूषण निर्यात 216.81 करोड़ डॉलर (19,172.89 करोड़ रुपये) रहा, जो गत वर्ष 312.25 करोड़ डॉलर के मुकाबले 30.57% कम है। आयात 19.2% घटकर 127.68 करोड़ डालर रहा।

जीजेईपीसी ने बताया कि अमेरिका, यूरोप और चीन जैसे प्रमुख बाजारों में सुस्त आर्थिक वृद्धि, उच्च ब्याज दर, सतर्क उपभोक्ता खर्च और वैश्विक अस्थिरता के कारण यह गिरावट आई है। सोने और हीरे की कीमतों में उतार-चढ़ाव, सीमित वित्तपोषण और प्रयोगशालाओं में बने हीरों के कारोबार में समायोजन भी निर्यात-आयात को प्रभावित कर रहे हैं।

● जीजेईपीसी के अनुसार वैश्विक अस्थिरता गिरावट के कारक

काउंसिल के अनुसार, कट और पॉलिश हीरे का निर्यात अक्टूबर में 27% घटकर 102.60 करोड़ डॉलर रह गया। आयात में भी 35.76% की गिरावट रही और यह 13.30 करोड़ डॉलर रहा। रफ डायमंड्स का आयात 6.57% घटकर 645.16 करोड़ डॉलर हो गया।

एशिया प्रशांत क्षेत्र को 20 वर्षों में 19,560 नए विमानों की होगी जरूरत : एयरबस

● भारत दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते नागर विमानन बाजारों में शामिल

बैंकॉक, एजेंसी

विमान विनिर्माता कंपनी एयरबस ने शनिवार को कहा कि 20 वर्षों में एशिया प्रशांत क्षेत्र को 19,560 नए विमानों की जरूरत होगी, जो मुख्य रूप से भारत और चीन की मांग से प्रेरित है। एयरबस ने कहा कि यह मांग 20 वर्षों में 42,520 नए विमानों की वैश्विक आवश्यकता का 46% है।

एयरबस एशिया प्रशांत के अध्यक्ष आनंद स्टेनली ने कहा कि इस वृद्धि का बड़ा हिस्सा भारत और चीन से आएगा। विमान यात्रियों की बढ़ती संख्या के साथ एशिया-प्रशांत क्षेत्र में 4.4% की वार्षिक यात्री वृद्धि की उम्मीद है, जो वैश्विक औसत 3.6% से अधिक होगा। भारत दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते नागर विमानन बाजारों में शामिल है, और मांग को पूरा करने के लिए एयरलाइनों ने बेड़े का विस्तार करते हुए काफी बड़े ऑर्डर दिए हैं।

बैंकॉक में एसोसिएशन ऑफ एशिया-पैसिफिक एयरलाइंस (एएपीए) के अध्यक्षों की वार्षिक सभा के दौरान एयरबस ने कहा कि 20 वर्षों में इस क्षेत्र में 3,500 बड़े आकार के विमानों की जरूरत होगी। यह बड़े आकार के विमान श्रेणियों में वैश्विक मांग का 43 प्रतिशत है।

इंडिगो नवी मुंबई हवाई अड्डे से शुरू करेगी उड़ानें

मुंबई। इंडिगो ने शनिवार को कहा कि वह 25 दिसंबर से नवनिर्मित नवी मुंबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से उड़ान संचालन शुरू करेगी। घरेलू हवाई सेवाओं के जरिये 10 शहरों को जोड़ा जाएगा। इंडिगो ने यह भी कहा कि वह मुंबई महानगर क्षेत्र के दूसरे हवाई अड्डे से अपने परिचालन का विस्तार करने की योजना बना रही है। इसमें समय के साथ और अधिक गंतव्यों को जोड़ा जाएगा। नवी मुंबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा (एनएमआईए) 1,160 हेक्टेयर में फैला है और इसके पहले चरण में एक टर्मिनल और एक रनवे होगा। इसकी वार्षिक यात्री क्षमता दो करोड़ होगी। हवाई अड्डे का पहला चरण 19,650 करोड़ रुपये की लागत से बनाया गया है।

चावल, गेहूं, चीनी व दालें सस्ती, खाद्य तेलों में घट-बढ़

नई दिल्ली। घरेलू थोक जिंस बाजारों में शनिवार को चावल की औसत कीमत घट गयी। चावल के साथ गेहूं, चीनी और दालें भी सस्ती हुईं। वहीं, खाद्य तेलों की कीमतों में उतार-चढ़ाव देखा गया। चावल की औसत कीमत 37 रुपये घटकर 3,818.29 रुपये प्रति क्विंटल पर रह गयी। गेहूं भी 14 रुपये गिरकर 2,857.13 रुपये प्रति क्विंटल के भाव बिका। आटे की कीमत में दो रुपये की नरमी रही और यह 3,312.86 रुपये प्रति क्विंटल बिका। खाद्य तेलों में आज घट-बढ़ देखी गयी। मूंगफली तेल की औसत कीमत 212 रुपये और वनस्पति की 74 रुपये प्रति क्विंटल टूट गयी। वहीं, सरसों तेल 34 रुपये और सोया तेल 38 रुपये प्रति क्विंटल की बढ़त में रहा।

कर्ज के भुगतान का दबाव होगा कम

नई दिल्ली, एजेंसी

आरबीआई के नये उपायों का निर्यातकों ने किया स्वागत

निर्यात संघों के शीर्ष संगठन फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइजेशन (फियो) ने वैश्विक बाजार के बदलावों से प्रभावित विभिन्न क्षेत्रों के निर्यातकों पर कर्ज और उधार के भुगतान का दबाव कम करने के भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के कदमों को बड़ी राहत बताते हुए इसका स्वागत किया है।

केंद्रीय बैंक ने निर्यात आय देश में लाने के लिए तय अधिकतम समय को नौ महीने से बढ़ाकर पंद्रह महीने कर दिया है। साथ ही उसने निर्यात के लिए अग्रिम भुगतान प्राप्त होने पर माल को भेजने की अवधि एक वर्ष से बढ़ाकर तीन वर्ष कर दी है। फियो के एक बयान में कहा गया है कि इससे इस समय वैश्वक बाजार की कठिनाइयों से प्रभावित क्षेत्रों के निर्यातकों पर ऋण चुकाने का दबाव हल्का होगा और वे रोजमर्रा के काम काज की ऋण सुविधाओं से धन निकासी को नये ढंग से पुनर्व्यवस्थित करने का मौका मिलेगा।

केंद्रीय बैंक ने बाजार की बाहरी परिस्थितियों से प्रभावित कुछ निर्यात क्षेत्रों को द्वारा लिए गये ऐसे कुछ मियादी कर्ज के भुगतान और कामकाजी पूंजी के लिए लिए गये कर्जों पर ब्याज की वसूली को रोक दिया है अथवा टाल दिया है जिनका भुगतान इस साल एक सितंबर से 31 दिसंबर के बीच किया जाना था।

कारोबारियों को मिलेगी राहत

फियो के अध्यक्ष ए सी रल्हन ने कहा कि आरबीआई के इन फैसलों से निर्यात कारोबार को बड़ी राहत मिलेगी। इससे निर्यातक अपने विदेशी खरीदारों को उधार चुकाने के लिए और ज्यादा समय देने का प्रस्ताव कर सकते हैं। व्यापार संबंधी अनुपालन बेहतर होगा। फियो अध्यक्ष ने कहा कि इस ढील से ये नियम कई अन्य अर्थव्यवस्थाओं के समान हो कसते हैं। इससे भारतीय निर्यातकों के लिए समान अवसर सुनिश्चित होंगे।

राष्ट्रीय

कई सीट पर जीत-हार का अंतर 500 से भी कम, संदेश में मात्र 27 वोट का अंतर

महिला मतदाताओं का मतदान प्रतिशत पुरुषों की तुलना में 10 प्रतिशत अधिक

पटना, एजेंसी

बिहार विधानसभा चुनाव के अधिकांश नतीजे घोषित हो चुके हैं और तस्वीर लगभग साफ है, लेकिन कई सीट पर मुकाबला इतना करीबी रहा कि जीत-हार का अंतर 500 वोट से भी कम है। कुछ निर्वाचन क्षेत्रों में यह अंतर 100 वोट से भी कम है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को प्रचंड बहुमत मिला है।

निर्वाचन आयोग के आंकड़ों के अनुसार राज्य की अगिआंव, बलरामपुर, ढाका, फारबिसगंज, नबीनगर, रामगढ़ और संदेश सीट पर जीत-हार का अंतर 500 से कम रहा। बलरामपुर में 389, ढाका में 178, फारबिसगंज में 221, नबीनगर में 112 और रामगढ़ में 175 वोट का अंतर दर्ज किया गया। दो सीट—अगिआंव और संदेश के लिए चुनाव में जीत-हार का अंतर 100 वोट से भी कम रहा। अगिआंव में 95 वोट और संदेश में महज 27 वोट से फैसला हुआ। संदेश सीट राज्य में सबसे कम अंतर से जीती जाने वाली सीट साबित हुई।

इसके अलावा बख्तियारपुर, बोध गया, चनपटिया और जहानाबाद उन विधानसभा क्षेत्रों में शामिल हैं जहां जीत-हार का अंतर 1000 से 500 के बीच रहा। बख्तियारपुर में 981, बोध गया में 881, चनपटिया में 602 और जहानाबाद में 793 वोट के अंतर से जीत दर्ज की गई। चुनाव के दौरान महिलाओं की भागीदारी उल्लेखनीय रही। महिला मतदाताओं का मतदान प्रतिशत पुरुषों की तुलना में लगभग 10 प्रतिशत अधिक दर्ज किया गया।

जीते हुए 243 विधायकों में से 130 पर आपराधिक मामले, 90% करोड़पति, एडीआर के अनुसार मात्र 12% महिलाएं चुनाव जीतीं

पटना। बिहार चुनाव में जीते 243 विधायकों में से 53% यानी 130 पर आपराधिक मामले हैं। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) और बिहार इलेक्शन वॉच ने 243 विजेता उम्मीदवारों के शपथ-पत्रों का विश्लेषण किया है। एडीआर के अनुसार, 2020 के चुनाव में 241 में से 163 यानी 68% विधायकों ने आपराधिक मामले घोषित किए थे। इस बार 102 (42%) विधायकों ने आपराधिक मामले घोषित किए हैं, जबकि 2020 में यह संख्या 123 (51%) थी। छह के खिलाफ हत्या, जबकि 19 पर हत्या के प्रयास के मामले हैं। महिलाओं पर अत्याचार के नौ मामले भी विजेताओं ने हलफनामों में हैं। भाजपा के 89 विजेताओं में 43 (48%), जदयू के 85 में 23 (27%), राजद के 25 में 14 (56%), लोजपा (रामविलास) के 19 में 10 (53%), कांग्रेस के छह में तीन (50%), ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के पांच में चार (80%), रालोमो के चार में एक (25%), भाकपा (माक्र्सवादी-लेनिनवादी) लिबरेशन के दो में एक (50%), माकपा के एकमात्र विजेता, इंडियन इन्क्लूसिव पार्टी के एक विजेता और बसपा के एक विजेता ने गंभीर आपराधिक मामले घोषित किए हैं। रिपोर्ट अनुसार 90% विधायक करोड़पति हैं और उनकी औसत घोषित संपत्ति 9 .02 करोड़ है। शिक्षा के स्तर पर 35% ने अपनी योग्यता पांचवीं से 12वीं तक बताई, जबकि 60% स्नातक या इससे अधिक शिक्षित हैं। पांच विजेताओं ने डिप्लोमा और सात ने स्वयं को साक्षर बताया है। राज्य की 243 सदस्यीय विधानसभा में इस बार केवल 29 (12%) महिला उम्मीदवार विजयी हुई हैं, जबकि पिछले विस में यह संख्या 11% थी।

निलंबन के बाद पूर्व केंद्रीय मंत्री आरके सिंह ने भाजपा से दिया इस्तीफा

भाजपा से निलंबित पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं पूर्व सांसद राजकुमार सिंह ने शनिवार को पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। सिंह ने भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा को भेजे पत्र को सार्वजनिक करते हुए पार्टी नेतृत्व पर कई गंभीर आरोप लगाए। भाजपा की ओर से शनिवार को निलंबन किए जाने के कुछ घंटों बाद सिंह ने इस्तीफा दिया है। उन्होंने दावा किया कि उन्हें निलंबन नोटिस की जानकारी केवल अग्रसारित संदेशों से मिली। उन्होंने कहा कि नोटिस में यह स्पष्ट नहीं किया गया कि उनकी कौन-सी गतिविधि पार्टी विरोधी मानी गई। उनके अनुसार बिना किसी आरोप का उल्लेख किए जवाब मांगना न्यायोचित नहीं है। पूर्व मंत्री ने संकेत दिया कि संभवतः भाजपा को आपराधिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों को टिकट न देने की उनकी टिप्पणी को ही विवाद का आधार बनाया गया। उनका यह रुख पार्टी विरोधी नहीं, बल्कि राजनीति में बढ़ते अपराधीकरण और भ्रष्टाचार के खिलाफ था। सिंह के मुताबिक यह टिप्पणी राष्ट्रहित और जनहित में थी, लेकिन पार्टी के कुछ लोग इससे असहज हो गए।

● राष्ट्रीय अध्यक्ष को लिखे पत्र में लगाए कई आरोप

कांग्रेस ने नतीजों को अविश्वसनीय बताया, ईसी पर सवाल खड़े किए

नई दिल्ली। कांग्रेस के शीर्ष नेताओं ने बिहार चुनाव में पार्टी और महागठबंधन की करारी हार के बाद शनिवार को लंबी मंत्रणा की तथा निर्वाचन आयोग (ईसी) की भूमिका को लेकर फिर सवाल खड़े किए। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने चुनाव परिणाम आने की एक दिन बाद इसको लेकर मंथन किया और इस दौरान कांग्रेस के संगठन महासचिव के सी वेणुगोपाल, पार्टी कोषाध्यक्ष अजय माकन और पार्टी के बिहार प्रभारी कृष्णा अल्लावरू भी मौजूद थे।

महिलाओं के खातों में नगद भेजना राजग की जीत का बना कारण

पटना। चुनावी रणनीतिकार से नेता बने प्रशांत किशोर की पार्टी जनसुराज बिहार में अपनी हार पर शनिवार को निराशा व्यक्त करते हुए कहा कि महिलाओं के खातों में नगद भेजना राजग की जीत का मुख्य कारण बना। प्रशांत किशोर की पार्टी चुनाव में एक भी सीट नहीं जीत सकी। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष उदय सिंह ने कहा, हम चुनाव परिणाम से निराश हैं, लेकिन दुखी नहीं। हम एक भी सीट नहीं जीत सके, लेकिन हम सत्तारूढ़ राजग का विरोध जारी रखेंगे। पार्टी बिहार में मुस्लिमों को पक्ष में करने में सफल नहीं हो सकी।

लालू की बेटी रोहिणी ने की राजनीति व परिवार से नाता तोड़ने की घोषणा

पटना। बिहार चुनाव में राष्ट्रीय जनता दल (राजद) को मिली हार के एक दिन बाद पार्टी अध्यक्ष लालू की बेटी रोहिणी आचार्य ने राजनीति छोड़ने और परिवार से नाता तोड़ने की शनिवार को घोषणा की। एमबीबीएस कर चुकीं रोहिणी लंबे समय से सिंगापुर में अपने पति के साथ रह रही हैं। इसकी घोषणा एक्स पर पोस्ट करके की है।

उन्होंने कहा कि मैं राजनीति छोड़ रही हूं और अपने परिवार से नाता तोड़ रही हूं... संजय यादव और रमीज ने मुझसे यही करने को कहा था... और मैं पूरा दोष अपने ऊपर ले रही हूं। संजय यादव, राजद के राज्यसभा सदस्य हैं और तेजस्वी यादव के सबसे भरोसेमंद सहयोगियों में से एक माने जाते हैं। रमीज को तेजस्वी का पुराना मित्र बताया जाता है, जो उत्तर प्रदेश के राजनीतिक परिवार से संबंधित हैं। रोहिणी की पोस्ट से यह स्पष्ट नहीं हो सका कि संजय यादव और रमीज ने उनसे किस बारे में ऐसा कहा था। लालू को गुर्दा देने से चर्चा में आई रोहिणी ने सारण लोकसभा सीट से चुनाव लड़ा था, जिसमें उन्हें हार का सामना करना पड़ा था।

विस्फोट से हिल गया था लाल किला मेट्रो स्टेशन, सीसीटीवी फुटेज में आया नजर

दिल्ली कार विस्फोट

नई दिल्ली, एजेंसी

लाल किला मेट्रो स्टेशन के अंदर से प्राप्त सीसीटीवी फुटेज में पता चला है कि कार विस्फोट के समय स्टेशन बुरी तरह हिल गया था। एक अधिकारी ने शनिवार को बताया कि स्टेशन के अंदर लगे निगरानी कैमरों की फुटेज में यात्री सामान्य रूप से आते-जाते नजर आ रहे हैं, तभी ठीक उसी समय अचानक तीव्र कंपन ने परिसर को हिला दिया जब पास के यातायात सिग्नल पर कार में विस्फोट हुआ था।

वीडियो में नजर आ रहा है कि कंपन से स्टेशन के अंदर की चीजें हिलने लगीं एवं लोगों को झटके लगे। फुटेज में विस्फोट का असर स्पष्ट होते ही कुछ यात्री स्टेशन के अंदर की ओर भागते दिखाई दे रहे हैं। अधिकारियों ने बताया कि जांचकर्ता विस्फोट की तीव्रता और लाल किले के आसपास की संरचनाओं पर तत्काल प्रभाव को बेहतर ढंग से समझने के लिए फुटेज की समीक्षा कर रहे हैं। घटना के दिन से ही मेट्रो स्टेशन बंद है। दिल्ली मेट्रो रेल निगम दैनिक आधार पर अद्यतन जानकारी जारी कर रहा है। उसने गुरुवार को घोषणा की कि सुरक्षा समीक्षा और जांच से स्टेशन बंद रहेगा। सुरक्षा एजेंसी विस्फोट स्थल और मेट्रो स्टेशन से प्राप्त सीसीटीवी फुटेज का विश्लेषण कर रही हैं।

चार दिन बाद खोले गए मेट्रो स्टेशन के दो प्रवेश द्वार

दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (डीएमआरसी) ने लाल किला मेट्रो स्टेशन के दो प्रवेश द्वार शनिवार को फिर से खोल दिए। लाल किले के पास हुए विस्फोट से चार दिन पहले यह द्वार बंद कर दिए गए थे। डीएमआरसी ने 'एक्स' पर कहा, लाल किला मेट्रो स्टेशन के गेट नंबर-2 और 3 अब यात्रियों के लिए खुल गए हैं, जिससे आंशिक रूप से प्रवेश बहाल हो गया है। इन्हें घटना के बाद सुरक्षा उपायों के तहत बंद कर दिया गया था। लाल किले के पास सोमवार शाम हुए विस्फोट के बाद आसपास के इलाके को तुरंत बंद कर दिया गया था और सुरक्षा एजेंसियों द्वारा जांच के दौरान कई दिनों तक आवाजाही पर प्रतिबंध लागू रहे।

पूछताछ के लिए पंजाब के पठानकोट से चिकित्सक को पुलिस ने हिरासत में लिया

चंडीगढ़। दिल्ली विस्फोट के सिलसिले में पूछताछ के लिए पंजाब के पठानकोट से एक चिकित्सक को पुलिस ने हिरासत में लिया है। 45 वर्षीय चिकित्सक पठानकोट के निजी मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में दो साल से कार्यरत था। वह पहले हरियाणा के फरीदाबाद जिले में स्थित अल फलाह विवि में काम कर चुका है, जिससे सफेदपोश आतंकी मॉड्यूल के प्रमुख संदिग्ध भी जुड़े थे। एजेंसियों ने 10 नवंबर को जम्मू-कश्मीर, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में फैले आतंकवादी मॉड्यूल का भंडाफोड़ कर 2,900 किलोग्राम विस्फोटक बरामद किया था और तीन चिकित्सकों समेत आठ लोगों को गिरफ्तार किया था। इसके बाद ही दिल्ली में विस्फोट हुआ था।

एक ही परिवार के 5 लोगों की जिंदा जलने से मौत

मुजफ्फरपुर (बिहार)। मुजफ्फरपुर जिले में एक मकान में आग लगने से एक ही परिवार के पांच लोगों की जिंदा जलने से मौत हो गई और पांच झुलस गए। मृतकों में ललन शाह, उनकी मां, पत्नी और दो बच्चे हैं। पांच घायलों को सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

पुलिस उपाधीक्षक सुचित्रा कुमारी ने शनिवार को बताया कि यह घटना मोतीपुर इलाके के वार्ड संख्या 13 में मध्यरात्रि के आसपास हुई। आग शॉर्ट सर्किट के कारण लगी जिसने इमारत की तीसरी मंजिल को अपनी चपेट में ले लिया। घटना के वक्त लोग सो रहे थे। दमकल की गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और आग पर काबू पाया। पांच लोगों की मौके पर ही मौत हो गई और पांच गंभीर रूप से झुलस गए। शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। शुरुआत में स्थानीय लोग आग की लपटें उठते देखकर और तेज चीख-पुकार सुनकर मौके पर पहुंचे। उन्होंने अग्निशमन नियंत्रण कक्ष और स्थानीय पुलिस को घटना की सूचना दी।

मेडिकल कॉलेज में पीजी सीट रिक्त नहीं रखने पर होगी शीर्ष सुनवाई

नई दिल्ली, एजेंसी

सुप्रीम कोर्ट सोमवार को उस याचिका पर सुनवाई करेगा, जिसमें राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग को ऐसी व्यवस्था बनाने का निर्देश देने का अनुरोध है जिससे भारत के मेडिकल कॉलेज में प्री-क्लिनिकल और पैरा-क्लिनिकल शाखाओं में कोई भी स्नातकोत्तर सीट खाली न रहे।

याचिका में आयोग को ये निर्देश देने का भी अनुरोध है कि वह यह आंकड़ा प्रस्तुत करे कि पांच साल में स्नातकोत्तर प्री-क्लिनिकल और पैरा-क्लिनिकल शाखाओं में कितनी सीट रिक्त रहीं। इस याचिका पर प्रधान न्यायाधीश बीआर गवई, न्यायमूर्ति के विनोद चंद्रन और एनवी अंजारिया की पीठ सुनवाई करेगी। शीर्ष अदालत ने इस साल जनवरी में एक अन्य याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा था कि मेडिकल पाठ्यक्रमों में सीट खाली नहीं रखी जा सकतीं। इसने केंद्र से इस मुद्दे पर राज्यों सहित संबंधित हितधारकों के साथ बैठक करने को कहा था। शीर्ष अदालत ने 2023 में मेडिकल पाठ्यक्रमों में सुपर स्पेशलिटी सीट रिक्त रहने के मुद्दे का संज्ञान लिया था। केंद्र ने स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक की अध्यक्षता में राज्यों और निजी मेडिकल कॉलेज सहित सभी हितधारकों की समिति बनाने का प्रस्ताव रखा था।

वर्ल्ड ब्रीफ

उड़िया गायक ह्यूमेन सागर अस्पताल में भर्ती

भुवनेश्वर। लोकप्रिय उड़िया गायक ह्यूमेन सागर को लिवर काम न करने के कारण एम्स, भुवनेश्वर में भर्ती कराया गया है और उनकी हालत गंभीर है। यह जानकारी चिकित्सा संस्थान द्वारा जारी एक आधिकारिक बयान में दी गई। 36 वर्षीय गायक शुक्रवार को अस्पताल आए थे और जांच में पाया गया कि उनके कई अंगों ने काम करना बंद कर दिया और लिवर न काम करने के बाद, निमोनिया समेत अन्य समस्याएं पाई गईं। वह वर्तमान में गंभीर रूप से बीमार हैं और वेंटिलेटर पर हैं। बीजू दल दल (बीजेडी) के प्रमुख और पूर्व मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने सागर के अस्पताल में भर्ती होने पर चिंता व्यक्त की।

रूस में सड़क हादसे में 7 की मौत, 15 घायल

मास्को। रूस के पर्म क्षेत्र में एक छोटी यात्री बस और ट्रक में टक्कर होने से सात लोगों की मौत हो गई और 15 अन्य घायल हो गए। रूस की तास न्यूज एजेंसी ने ने शुक्रवार को क्षेत्रीय आपातकालीन सेवाओं के हवाले से अपनी रिपोर्ट में यह जानकारी दी। दुर्घटना आर-243 कोस्त्रोमा-शार्या-किरोव-पर्म सड़क के 55 किलोमीटर दूर पर हुई। घायलों को स्थानीय अस्पताल ले जाया गया। प्रारंभिक जांच से संकेत मिलता है कि मिनी बस विपरित दिशा में चली गई और ट्रक से टकरा गई। मृतकों में एक नाबालिग भी शामिल है।

ब्राज़ील में गोलीबारी छह लोगों की मौत

रियो डी जेनेरियो। ब्राज़ील के रियो डी जेनेरियो स्थिति एक पार्टी हॉल में कथित प्रतिद्वंद्वी आपराधिक गिरोहों के बीच शुक्रवार को हुई गोलीबारी में कम से कम छह लोग मारे गए और एक अन्य घायल हो गया। पुलिस ने बताया कि गोलीबारी उत्तरी होनोरियो गुरगेल इलाके में हुई, जहां कथित तौर पर आपराधिक गिरोह कोमांडो वर्मेलो के सदस्य एक पार्टी कर रहे थे। प्रतिद्वंद्वी गिरोह टेरसीरो कोमांडो पुरो ने आयोजन स्थल पर धावा बोला, जिसके बाद दोनों पक्षों में भीषण गोलीबारी हुई।

गुर साझा करेंगी भारत व फ्रांस की वायुसेना

नई दिल्ली। भारतीय वायु सेना करीब दो सप्ताह तक फ्रांस के मोंट-डे-मार्सन में फ्रांसीसी वायु सेना के साथ द्विपक्षीय वायु अभ्यास 'गरुड़ 25' में रणकौशल के गुर और अनुभव साझा करेगी। वायु सेना ने कहा कि वायु सेनाकर्मियों का दल 16 से 27 नवम्बर तक चलने वाले इस अभ्यास के आठवें संस्करण में हिस्सा लेने के लिए गत 10 नवम्बर को फ्रांस पहुंच गया था। अभ्यास में वायु सेना के सुखोई-30 लड़ाकू विमान हिस्सा लेंगे।

वापस नहीं लौटी भारतीय सिख महिला, मुस्लिम से किया निकाह

लाहौर/चंडीगढ़, एजेंसी

- तीर्थयात्रियों के जत्थे के साथ गई थी पाकिस्तान

पाकिस्तान में तीर्थयात्रियों के एक दल के साथ इस माह की शुरुआत में प्रवेश करने वाली एक भारतीय सिख महिला ने इस्लाम धर्म अपना लिया है और एक स्थानीय मुस्लिम युवक से शादी कर ली है, जिससे उसकी मुलाकात सोशल मीडिया के जरिए हुई थी। लाहौर पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। पंजाब के कपूरथला जिले की पुलिस ने कहा कि उसकी गुमशुदगी की जांच की जा रही है।

सरबजीत कौर दो हजार भारतीय सिख तीर्थयात्रियों में शामिल थी, जो गुरु नानक देव की जयंती से जुड़े आयोजनों में शामिल होने के लिए वाघा बॉर्डर के रास्ते पाकिस्तान गई थी। तीर्थयात्री 13 नवंबर को भारत लौट आए, लेकिन कौर वापस नहीं लौटी। लाहौर के एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि कौर ने 4 नवंबर को लाहौर से करीब 50 किलोमीटर दूर स्थित शेखुपुरा जिले के निवासी नासिर हुसैन से निकाह किया और यह घोषणा की कि उसने अपनी मर्जी से इस्लाम धर्म अपनाया है तथा शादी की है। पुलिस दंपती की तलाश कर रही है।

सोशल मीडिया पर प्रसारित एक वीडियो में कौर ने कहा कि वह नासिर हुसैन से प्यार करती है और उसे नौ वर्षों से सोशल मीडिया के जरिए जानती है। वह तलाकशुदा है और उसी से विवाह करना चाहती थी।

आतंकियों के लिए बना संचार का माध्यम

लाल किला कार ब्लास्ट मामले में जांचकर्ताओं ने पाया कि आतंकियों ने आपसी संपर्क के लिए श्रीमा एप का इस्तेमाल किया था। यह एप स्विस कंपनी ने विकसित किया है। इसकी विशेषता ये है कि यह एन्क्रिप्टेड है, जिससे उपयोगकर्ताओं की पहचान और संदेशों को ट्रैक करना मुश्किल हो जाता है। श्रीमा एप की विशेषताएं इसे आतंकियों के लिए एक पसंदीदा संचार माध्यम बनाती हैं। हालांकि, जांच एजेंसियां भी लगातार इस एप की निगरानी कर रही हैं और कार्रवाई हेतु नए तरीकों की तलाश में हैं।

श्रीमा एप : पहचान और ट्रैक करना मुश्किल

प्रतिबंध लगाना एक जटिल मुद्दा

श्रीमा जैसे एप्स एन्क्रिप्टेड संचार प्रदान करते हैं, जिससे उपयोगकर्ताओं की पहचान और संदेशों को ट्रैक करना मुश्किल हो जाता है। इन एप्स का उपयोग करने वाले लोग अक्सर अपनी गोपनीयता को महत्व देते हैं और अपने संचार को सुरक्षित रखने के लिए इन एप्स का उपयोग करते हैं। लोगों को इन एप्स के खतरों और उनके दुरुपयोग के बारे में जागरूक करना एक बड़ी चुनौती है।

एप में है क्या खास

- **एन्क्रिप्शन :** श्रीमा एप पूरी तरह से एन्क्रिप्टेड है, जिससे संदेशों और कॉल्स को सुरक्षित रखा जा सकता है। अनामता : उपयोगकर्ता बिना फोन नंबर या ईमेल आईडी के भी एप का इस्तेमाल कर सकते हैं।
- **प्राइवेट सर्वर :** श्रीमा एप उपयोगकर्ताओं को अपना प्राइवेट सर्वर सेटअप करने की अनुमति देता है, जिससे संचार को और भी सुरक्षित बनाया जा सकता है।
- **संदेश हटाना :** उपयोगकर्ता संदेशों को दोनों तरफ से हटाने का विकल्प चुन सकते हैं, जिससे संदेशों का कोई रिकॉर्ड नहीं रहता है। मेटाडेटा संग्रहण नहीं : श्रीमा एप उपयोगकर्ताओं के बारे में कोई मेटाडेटा संग्रहण नहीं करता है, जिससे उनकी पहचान को ट्रैक करना मुश्किल हो जाता है।

भारत में कई कानून और उपाय

इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एक्ट 2000 में साइबर अपराधों को परिभाषित करने के साथ दंड का प्रावधान है। इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी (अमेन्डमेंट) एक्ट 2008 में साइबर अपराधों के लिए और अधिक कठोर दंड का प्रावधान किया गया है। नेशनल साइबर सिक्योरिटी नीति 2013 साइबर सुरक्षा को मजबूत करने और साइबर अपराध रोकने के लिए व्यापक रणनीति प्रदान करती है।

आतंकियों पसंदीदा कुछ अन्य एप्स

- **टेलीग्राम :** इस एप का इस्तेमाल आतंकी समूहों द्वारा प्रचार, भर्ती और संचार के लिए किया जाता है। इसकी विशेषता है कि यह एन्क्रिप्टेड संदेशों और चैट्स को सपोर्ट करता है, जिससे उपयोगकर्ताओं की पहचान को ट्रैक करना मुश्किल हो जाता है।
- **सिग्नल :** यह एक सुरक्षित और एन्क्रिप्टेड मेसेजिंग एप है जिसका इस्तेमाल आतंकी समूहों द्वारा संचार के लिए किया जाता है। इसकी विशेषता है कि यह उपयोगकर्ताओं की पहचान को गुप्त रखता है और संदेशों को एन्क्रिप्ट करता है।
- **सेसन :** यह एक डीसेंट्रलाइज्ड मेसेजिंग एप है जो उपयोगकर्ताओं को पूरी तरह से एन्क्रिप्टेड और अनट्रैकेबल संचार प्रदान करता है। इसकी विशेषता है कि यह उपयोगकर्ताओं की पहचान को गुप्त रखता है और संदेशों को एन्क्रिप्ट करता है।

पारदर्शी हो सुरक्षा परिषद के सहायक संगठनों का काम

भारत ने किया कार्य प्रणाली में बदलाव किए जाने का आह्वान

संयुक्त राष्ट्र, एजेंसी

भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सहायक संगठनों के कामकाज में अधिक पारदर्शिता का आह्वान किया है तथा बिना कोई उचित स्पष्टीकरण दिए संगठनों और व्यक्तियों को आतंकवादी संगठन या आतंकवादी घोषित करने के अनुरोधों को खारिज करने का हवाला दिया है। हाल ही में अमेरिका ने चार यूरोपीय वामपंथी संगठनों को आतंकवादी संगठन घोषित किया है जबकि ये संगठन अमेरिका में सक्रिय भी नहीं हैं।

संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि, राजदूत पर्वतनेनी हरीश ने शुक्रवार (स्थानीय समयानुसार) को कार्यप्रणाली पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की खुली बहस को संबोधित करते हुए कहा कि सुरक्षा परिषद संयुक्त राष्ट्र की संरचना में केंद्रीय है और एक प्रमुख अंग है जिसकी मुख्य रूप से अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने की जिम्मेदारी है।

हरीश ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र के एक अंग के रूप में सुरक्षा परिषद की कार्यप्रणाली इसकी विश्वसनीयता, प्रभावकारिता, दक्षता और पारदर्शिता के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इसके कार्यक्षेत्र में कई क्षेत्र शामिल हैं लेकिन सदस्यों की संख्या केवल 15 सदस्यों तक सीमित है। सुरक्षा परिषद कई संकटों से घिरे और कई चुनौतियों का सामना कर रहे विश्व में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। उन्होंने सहायक अंगों के कामकाज में अधिक पारदर्शिता की आवश्यकता पर बल दिया।

उन्होंने कहा कि इसका एक उदाहरण वह (अस्पष्ट) तरीका है जिसके आधार पर (संगठनों और व्यक्तियों को) सूचीबद्ध किए जाने के अनुरोधों को खारिज किया जाता है। सूची से हटाने के फैसलों के विपरीत इस तरह के अनुरोधों पर फैसले अपेक्षाकृत अस्पष्ट तरीके से किए जाते हैं और परिषद के बाहर के सदस्य देशों को इसकी जानकारी नहीं होती। हरीश ने यह भी बताया कि परिषद की समितियों और सहायक संगठनों के अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों को विशेषाधिकार प्राप्त होता है, जिनका बहुत जिम्मेदारी भरा कार्य होता है। उन्होंने कहा कि हितों के स्पष्ट टकराव के लिए परिषद में कोई जगह नहीं होनी चाहिए।

बढ़ाई जाए अस्थायी-स्थायी सदस्यता

हरीश ने 15 देशों की सदस्यता वाले शक्तिशाली संयुक्त राष्ट्र संगठन में सुधार का आह्वान करते हुए कहा कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को उद्देश्यपूर्ण बनाने, मौजूदा और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने और अपने कार्यों का उद्देश्यपूर्ण ढंग से निर्वहन करने के वास्ते सक्षम बनाने के लिए आठ दशक पुरानी संरचना को नया स्वरूप देने पर समग्र प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने समयबद्ध तरीके से संदेशों के लिखित आदान-प्रदान के माध्यम से कम प्रतिनिधित्व वाले और गैर-प्रतिनिधित्व वाले भौगोलिक क्षेत्रों के लिए पर्याप्त प्रतिनिधित्व के साथ परिषद की सदस्यता की स्थायी और अस्थायी, दोनों श्रेणियों में विस्तार पर जोर दिया।

अमेरिका से साझेदारी को भारतीय दूतावास प्रतिबद्ध

न्यूयॉर्क, एजेंसी

- भारतीय दूतों के सम्मेलन में जयशंकर ने की द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अमेरिका में भारत के महावाणिज्य दूतों के सम्मेलन में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों और प्रवासी भारतीयों से संबंधी गतिविधियों को दिए जाने वाले समर्थन की समीक्षा की। जयशंकर ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा कि हमारे द्विपक्षीय संबंधों और प्रवासी भारतीयों से संबंधी गतिविधियों के लिए समर्थन की समीक्षा की। भारत-अमेरिका साझेदारी को मजबूत करने के लिए हमारे दूतावास और वाणिज्य दूतावासों की प्रतिबद्धता एवं प्रयासों की सराहना करता हूं। जयशंकर ने शुक्रवार को न्यूयॉर्क स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास में आयोजित महावाणिज्य दूत सम्मेलन की अध्यक्षता की जिसमें अमेरिका में भारतीय राजदूत विनय क्वात्रा, वाशिंगटन डीसी स्थित भारतीय दूतावास में मिशन उप प्रमुख नामग्या खम्पा के साथ-साथ अटलांटा, बोस्टन, शिकागो, ह्यूस्टन, लॉस एंजिलिस, न्यूयॉर्क, सैन फ्रांसिस्को और सिएटल स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावासों के सभी दूतों ने हिस्सा लिया।

जयशंकर ने एक दिन पहले संयुक्त राष्ट्र महासचिव गुतारेस से की थी मुलाकात

महावाणिज्य दूत विनय प्रधान के नेतृत्व में न्यूयॉर्क स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि वाणिज्य दूतावास परिसर में जयशंकर का स्वागत करना सम्मान की बात थी। वाणिज्य दूतावास ने कहा कि उनका नजरिया, मार्गदर्शन और नेतृत्व भारत-अमेरिका साझेदारी के लिए काम करने की हमारी प्रतिबद्धता को मजबूत करता है। जयशंकर ने एक दिन पहले संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस से मुलाकात की थी। जयशंकर के साथ संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि पी. हरीश, संयुक्त राष्ट्र में उप-स्थायी प्रतिनिधि राजदूत योजना पटेल और संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन के अधिकारी भी मौजूद थे। जयशंकर ने गुरुवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा कि आज न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस से मिलकर अच्छा लगा। वर्तमान वैश्विक व्यवस्था और बहुपक्षवाद पर इसके प्रभावों के उनके आकलन की सराहना करता हूं। विभिन्न क्षेत्रीय मुद्दों पर उनके दृष्टिकोण की भी सराहना करता हूं। जयशंकर ने कहा कि उन्होंने भारत के विकास और उन्नति के लिए गुतारेस के स्पष्ट एवं निरंतर समर्थन के लिए उनका आभार व्यक्त किया और उम्मीद जताई कि वह जल्द ही भारत यात्रा पर आएंगे। जयशंकर जी-7 समूह के विदेश मंत्रियों की बैठक के लिए कनाडा में थे जहां उन्होंने अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो से मुलाकात की और अन्य वैश्विक समकक्षों के साथ द्विपक्षीय बैठकें कीं।

कीव पर रूसी हमले में 6 की मौत, 35 घायल

कीव, एजेंसी

- मिसाइलों और ड्रोन से आबादी क्षेत्र को बनाया निशाना

रूस द्वारा शुक्रवार तड़के यूक्रेन पर किए गए मिसाइल और ड्रोन हमलों में छह लोगों की मौत हो गई और एक गर्भवती महिला समेत कम से कम 35 लोग घायल हो गए। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने टेलीग्राम पर एक पोस्ट में कहा कि ड्रोन और मिसाइलों से किया गया यह सुनियोजित हमला लोगों और आम नागरिकों को यथासंभव अधिक नुकसान पहुंचाने के लिए किया गया था। उन्होंने बताया कि हमला इतना जोरदार था कि मिसाइल के टुकड़ों से अजरबैजान दूतावास क्षतिग्रस्त हो गया। अधिकारियों ने बताया कि हमलों में छह लोगों की मौत हो गई और एक गर्भवती महिला समेत कम से कम 35 लोग घायल हो गए। मॉस्को ने असैन्य क्षेत्रों को निशाना बनाए जाने से इनकार किया है।

जालंधर में अंतर्राज्यीय ड्रग सिंडिकेट का किया भंडाफोड़

जालंधर, एजेंसी

- भारी मात्रा में कोकीन, चरस, आइस और हथियार बरामद

पंजाब में जालंधर कमिश्नरेट पुलिस ने शनिवार को एक अंतर्राज्यीय ड्रग नेटवर्क में शामिल दो आरोपियों को गिरफ्तार करके और उनके पास से 205 ग्राम कोकीन, दो किग्रा चरस, 20 ग्राम आइस, 22 ग्राम एलएसडी टैबलेट, दो अवैध हथियार, पांच कारतूस और व्यावसायिक मात्रा में मादक पदार्थ बरामद किया है। पुलिस आयुक्त धनप्रीत कौर ने बताया कि पंजाब सरकार द्वारा शुरू किए गए विशेष नशा विरोधी अभियान के तहत शुक्रवार को सीआईए-स्टाफ टीम फगवाड़ा-जालंधर उच्च मार्ग पर स्थित मंदाकनी फार्म में ड्रग तस्करों से संबंधित तलाशी ले रही थी, तभी एक वयस्क को संदेह के आधार पर पकड़ा गया।

उसने अपनी पहचान सागर बब्बर, निवासी दशमेश नगर, मॉडल हाउस, जालंधर के रूप में बताई। आरोपी के पास से कुल 200 ग्राम कोकीन, दो किलोग्राम चरस, 20 ग्राम आइस ड्रग, 22 ग्राम एलएसडी टैबलेट और एक .32 बोर पिस्तौल बरामद की गई। उन्होंने बताया कि आगे की कार्रवाई के दौरान, उसके सहयोगी धर्मांशु उर्फ लव, पुत्र मनोज कुमार, निवासी बस्ती शेख, जालंधर को भी गिरफ्तार किया गया, जिसके पास से पांच ग्राम कोकीन और एक .32 बोर रिवॉल्वर और पांच कारतूस बरामद किए गए। आरोपी के खिलाफ थाना रामा मंडी में धारा 21, 61, 85 एनडीपीएस अधिनियम और 20, 22, 29 एनडीपीएस अधिनियम के अतिरिक्त अपराधों तथा आर्म्स एक्ट के तहत एफआईआर दर्ज की गई है।

सैकड़ों किलो मादक पदार्थ जब्त

नई दिल्ली। नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) और राजस्थान पुलिस ने सरकार के मादक पदार्थों के प्रति 'ज़ीरो टॉलरेंस' के दृष्टिकोण की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए राजस्थान के सिरोही जिले के दूर दराज के एक गांव में गुप्त प्रयोगशाला का भंडाफोड़ कर सैकड़ों किलोग्राम रसायन ज़ब्त किए हैं जिनसे करीब 100 किलोग्राम मेफेड्रोन बनाई जा सकती है। जब्त किए गए पदार्थों की बाजार में अनुमानित कीमत 40 करोड़ रुपये है। प्रयोगशाला के सूत्रधार और 4 अन्य लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया है। राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में मेफेड्रोन का इस्तेमाल साइकोट्रोपिक ड्रग्स के तौर पर तेजी से बढ़ रहा है। सरकार नशामुक्त भारत के निर्माण के लिए 'ड्रग कार्टेल' के खिलाफ लगातार कड़ी कार्रवाई कर रही है।

आंध्र प्रदेश में प्राणी वैज्ञानिकों ने खोजी छिपकली की नई प्रजाति

कोलकाता, एजेंसी

- हेमीफिलोडैक्टाइलस वेंकटाद्रि स्पेसीज नोव आधिकारिक नाम

भारतीय प्राणी सर्वेक्षण (जेडएसआई) के वैज्ञानिकों ने आंध्र प्रदेश में पतली छिपकली (गेको) की एक नई प्रजाति का पता लगाया है। एक आधिकारिक बयान के मुताबिक हेमीफिलोडैक्टाइलस वंश से संबंधित नई प्रजाति की यह छिपकली आंध्र प्रदेश के शेषाचलम बायोस्फीयर रिजर्व के भीतर तिरुमाला पर्वत श्रृंखला में पाई गई है। जेडएसआई ने कहा कि इसका आधिकारिक नाम 'हेमीफिलोडैक्टाइलस वेंकटाद्रि स्पेसीज नोव' रखा गया है, जो तिरुमाला में पवित्र वेंकटाद्रि पहाड़ियों के प्रति सम्मान दर्शाता है। वेंकटाद्रि नाम संस्कृत शब्दों वेंकट (जिसका अर्थ है पापों को दूर करने वाला, भगवान विष्णु का एक नाम) और अद्रि (जिसका अर्थ है पर्वत) का मिश्रण है।

अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका हरपेटोजोआ (खंड 38, 2025) में प्रकाशित यह खोज, जेडएसआई के 'फ्रेशवाटर बायोलॉजी रीजनल सेंटर' (हैदराबाद), रेप्टिलिया अनुभाग (कोलकाता) और फकीर मोहन विश्वविद्यालय (ओडिशा) की एक टीम का संयुक्त प्रयास था।

लाहौर हाईकोर्ट के न्यायाधीश ने इस्तीफा दिया

लाहौर। पाकिस्तान में न्यायिक संकट शनिवार को और गहरा गया, जब लाहौर उच्च न्यायालय के एक वरिष्ठ न्यायाधीश ने उच्चतम न्यायालय के दो न्यायाधीशों के इस्तीफे के बाद पद छोड़ दिया।

उच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने एक नया संवैधानिक संशोधन लागू करने के माध्यम से संविधान और न्यायपालिका पर हमले का विरोध करते हुए इस्तीफा दे दिया। संविधान से संबंधित मामलों से निपटने के लिए संघीय संवैधानिक न्यायालय की स्थापना की गई, जबकि उच्चतम न्यायालय पारंपरिक मामलों का ही निस्तारण करेगा।

बीबीसी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करेंगे ट्रंप

लंदन, एजेंसी

- राष्ट्रपति के भाषण को संपादित कर प्रसारित करने का मामला

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने घोषणा की कि वह बीबीसी पर कानूनी कार्रवाई का इरादा रखते हैं, जबकि ब्रिटेन के सार्वजनिक प्रसारणकर्ता (बीबीसी) ने पिछले साल प्रसारित समाचार वृत्तचित्र के लिए उनके भाषण को संपादित करने के तरीके को लेकर उनसे माफी मांगी थी।

ट्रंप ने शनिवार को एयरफोर्स वन में कहा कि हम उन पर मुकदमा करेंगे। हम उन पर एक से पांच अरब डॉलर तक का मुकदमा करेंगे, हमें यह करना ही होगा, उन्होंने यह स्वीकार किया है कि बीबीसी ने धोखाधड़ी की है। उन्होंने मेरे मुंह से निकले शब्द बदल दिए। यह विवाद 'ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन (बीबीसी) के लिए एक तनावपूर्ण दौर के बाद आया है, जिसके परिणामस्वरूप बीबीसी के शीर्ष अधिकारियों ने इस्तीफा दे दिया और इसके भारतीय मूल के प्रमुख समीर शाह ने निर्णय की त्रुटि के लिए माफी मांगी। गुरुवार को बीबीसी ने कहा था कि ट्रंप के छह जनवरी 2021 के भाषण के संपादन से अनजाने में यह गलत धारणा बन गई कि ट्रंप ने सीधे तौर पर हिंसक कार्रवाई का आह्वान किया था और कहा कि इसे दोबारा प्रसारित नहीं किया जाएगा।

कंबोडिया-थाईलैंड के संघर्ष को रोका

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शुक्रवार को दावा किया कि वह अमेरिका की मध्यस्थता से कंबोडिया और थाईलैंड के बीच हुए उस संघर्षविराम समझौते को बनाए रखने में सफल रहे हैं जो टूटने के कगार पर था। ट्रंप ने एयरफोर्स वन में कहा कि मैंने आज ही एक युद्ध रोका है। कहा कि उनके ये कदम दुनिया भर के देशों पर भारी शुल्क लगाने की उनकी इच्छाशक्ति से संभव हुए हैं।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 16 नवंबर, रविवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास- मार्गशीर्ष, पक्ष-कृष्ण पक्ष, द्वादशी 17 नवंबर 04.47 तक तत्पश्चात त्रयोदशी।

आज का पंचांग

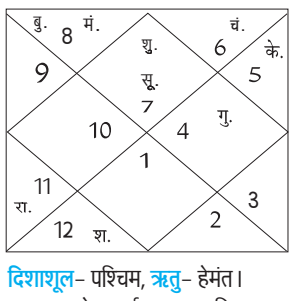

दिशाशूल- पश्चिम, **ऋतु**- हेमंत।
चन्द्रबल- मेष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, धनु, मीन।
ताराबल- अश्विनी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुष्य, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तराभाद्रपद।
नक्षत्र- हस्त 17 नवंबर 02.11 तक तत्पश्चात चित्रा।

मेष — आज आपके प्रति लोग नकारात्मक भाव अपना सकते हैं। अपने काम को लेकर दूसरों से अधिक राय न लें। कार्यक्षेत्र में उच्च अधिकारियों के प्रति विश्वास कम हो सकता है। पुराने मित्रों से मिलना होगा। अपने व्यवहार को संतुलित रखें।

वृष — आज आर्थिक स्थिति बहुत ही उन्नत रहेगी। काफी दिनों से चली आ रही परेशानी दूर होगी। आप अपना काम काफी अच्छी तरह से पूरा करेंगे। नौकरीपेशा लोगों को अचानक नई नौकरी के प्रस्ताव मिल सकते हैं। ललित कलाओं के प्रति अत्यंत आकर्षित रहेंगे।

मिथुन — आज आपका मन घर में नहीं लगेगा। अड़ियल रवैये के कारण लोग आपसे दूरी बना सकते हैं। वैवाहिक जीवन अत्यंत तनावयुक्त हो सकता है। नशीले पदार्थों का सेवन करने से बचें। धन के लेन-देन में सावधानी रखें।

कर्क — आज सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर रहेंगे। विरोधियों के बीच आपका वर्चस्व बढ़ेगा। छोटी दूरी की यात्राओं के योग बन रहे हैं। कार्यक्षेत्र और परिवार दोनों ही जगह आपकी प्रशंसा होगी। शुभ समाचारों के मिलने से आपका मन प्रसन्न रहेगा।

सिंह — आज शेयर मार्केट में बड़ा निवेश न करें वरना आर्थिक हानि होने की संभावना भी बन रही है। घर में बिजली के उपकरण खराब हो सकते हैं। घर के काम में आप अत्यंत व्यस्त रहेंगे। बुद्धिमान लोगों के बीच आपका सम्मान बढ़ेगा।

कन्या — आज यात्राओं से लाभ प्राप्त होगा। व्यवसाय में पुराने नुकसान की भरपाई करने में सफलता मिलेगी। कार्यक्षेत्र में काम का दबाव कम होगा। अपने उद्देश्यों को लेकर सतर्क रहें। समाज में सक्रिय लोगों को सम्मानित किया जा सकता है।

तुला — आज आपको लंबी दूरी की यात्रा करने से बचना चाहिए। आत्मसम्मान को लेकर थोड़े चिंतित रहेंगे। पति-पत्नी के बीच झगड़े होने की संभावना बन रही है। पुरानी कड़वी यादें अचानक आपके सामने आ सकती हैं।

वृश्चिक — आज दिन की शुरुआत आपके लिए बहुत अच्छी रहेगी। आपकी सेहत काफी अच्छी रहने वाली है। व्यापार में तकनीक का काफी अच्छा प्रयोग करेंगे। जीवनसाथी की सलाह आपके काम आएगी। बच्चों के साथ बहुत अच्छा समय बिताएंगे।

धनु — आज प्रत्येक कार्य आप काफी समझदारी से करेंगे। नई नौकरी ढूंढ रहे हैं, तो समय बहुत ही अच्छा है। प्रियजनों की सलाह आपको महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय अत्यंत सहायक सिद्ध होगी। एक साथ अनेक कार्य करने से बचें।

मकर — आज व्यर्थ बातों पर अधिक ध्यान न दें। माइग्रेन के रोगियों को धूप और धूल से बचना चाहिए। बच्चों के ऊपर आप गुस्सा निकाल सकते हैं। आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में हानि हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों का मन काम में नहीं लगेगा।

कुंभ — आज कुछ लोग पीठ पीछे आपकी आलोचना कर सकते हैं। मित्रों को लेकर कुछ परेशान रहेंगे। आपको आकस्मिक धन लाभ हो सकता है। परिवार में सामंजस्य में कमी महसूस होगी। एलर्जी और कफ के रोग परेशान कर सकते हैं।

मीन — आज उच्च पदस्थ लोगों से आपके संपर्क विकसित हो सकते हैं। व्यवसाय में विस्तार करने के लिए समय बहुत ही शुभ है। प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तम सफलता मिलने के योग बन रहे हैं। दांपत्य जीवन मधुरता से भरपूर रहेगा।

सुडोकू-162

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

					5		6	
7								
5						7		
		2						
				3				
								4
	9		2				7	

सुडोकू - 161 का हल

1	2	5	6	7	8	4	9	3
3	9	7	4	2	5	8	1	6
8	4	6	3	9	1	2	7	5
5	7	1	9	3	2	6	4	8
4	6	8	1	5	7	9	3	2
9	3	2	8	6	4	7	5	1
7	5	4	2	1	6	3	8	9
6	1	3	7	8	9	5	2	4
2	8	9	5	4	3	1	6	7

मैंने महाराष्ट्र के लिए आयु-वर्ग क्रिकेट खेलकर अपनी क्रिकेट यात्रा शुरू की और अपने राज्य का प्रतिनिधित्व करना मेरे लिए बेहद गर्व की बात है। हमारी विश्व कप जीत टीम के प्रत्येक खिलाड़ी के सामूहिक प्रयास, अनुशासन और टीम वर्क का परिणाम था।

-स्मृति मंधाना

स्टेडियम

बरेली, रविवार 16 नवंबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

एमसीए ने मंधाना को 50 लाख रुपये से पुरस्कृत किया

मुंबई। महाराष्ट्र क्रिकेट संघ (एमसीए) ने शनिवार को भारतीय टीम की उप-कप्तान और कलात्मक सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना को भारतीय महिला टीम को विश्व चैंपियन बनाने के दौरान उनके शानदार प्रदर्शन के लिए 50 लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया। मंधाना ने विश्व कप में 54.25 की प्रभावशाली औसत से 434 रन बनाए थे। वह सबसे टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा रन बनाने वालों की सूची में दूसरे स्थान पर थी। भारतीय उपकप्तान ने कहा एमसीए महिला क्रिकेटरों के लिए असाधारण काम कर रहा है और हाल ही में शुरू हुई महाराष्ट्र महिला प्रीमियर लीग और उसके बाद सीनियर महिला टी 20 ट्रॉफी में राज्य टीम की जीत इस प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

अर्जुन विश्व कप के क्वार्टर फाइनल में

पणजी। ग्रैंडमास्टर अर्जुन एरिगेसी दो बार के चैम्पियन अमेरिका के लेवोन आरोनियन को अंतिम 16 के दूसरे गेम में हराकर फिडे शतरंज विश्व कप के क्वार्टर फाइनल में पहुंच गए। अर्जुन ने काले मोहरों से खेलते हुए जीत दर्ज की। उन्होंने क्लासिकल टाइम कंट्रोल में पहला मुकाबला ड्रॉ खेला था लेकिन दूसरे मुकाबले में आरोनियन जैसे दिग्गज को कोई मौका नहीं दिया। भारत के ग्रैंडमास्टर पी हरिकृष्णा ने मैक्सिको के जोस एडुआर्डो मार्तिनेज से लगातार दूसरा मुकाबला ड्रॉ खेला। उजबेकिस्तान के नोदिरबेक याकूबोएव ने आर्मेनिया के गैब्रियल सर्जिसियान को हराकर अंतिम आठ में जगह बनाई। हरिकृष्णा को रविवार को टाइब्रेकर खेलना होगा। इस टूर्नामेंट से शीर्ष तीन खिलाड़ी अगले कैंडिडेट्स टूर्नामेंट में खेलेंगे।

पाक के खिलाफ वैभव पर रहेगी निगाह

दोहा। युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी रविवार को यहां राइजिंग स्टार्स एशिया कप टी-20 मैच में पाकिस्तान शाहीन्स के आक्रमण को स्तब्ध रखने के इरादे से मैदान पर उतरेंगे जबकि जितेश शर्मा की अगुवाई वाली भारत ए टीम भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) की हाथ नहीं मिलाने की नीति का पालन करेगी। सितंबर में एशिया कप के दौरान भारत के टी-20 कप्तान सूर्यकुमार यादव ने पहलगाम आतंकी हमले के पीड़ितों के प्रति एकजुटता दिखाने के लिए पाकिस्तान के कप्तान सलमान अली आगा से हाथ नहीं मिलाया था।

दमदार प्रदर्शन करना चाहेंगे मुक्केबाज

ग्रेटर नोएडा। भारतीय मुक्केबाज जब रविवार से यहां शुरू हो रहे विश्व मुक्केबाजी कप फाइनल्स में उतरेंगे तो उनका लक्ष्य सत्र का शानदार अंत करने के साथ ही महत्वपूर्ण रैंकिंग अंक हासिल करना भी होगा। मुक्केबाजी के संचालन का कार्य जब से वर्ल्ड बॉक्सिंग ने संभाला है तब से इस साल के शुरू में विश्व कप की शुरुआत की गई और अब उसका फाइनल्स होगा। मुक्केबाज सभी प्रमुख टूर्नामेंटों में रैंकिंग अंक अर्जित करते हैं, जो वरीयता निर्धारण में भूमिका निभाते हैं। अगले वर्ष एशियाई खेल और राष्ट्रमंडल खेल होने वाले हैं, इसलिए ये अंक महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

कोलकाता टेस्ट : दूसरे दिन 16 विकेट गिरे, जडेजा ने चार बल्लेबाजों को आउट किया, दूसरी पारी में दक्षिण अफ्रीका संघर्षरत

ईडन गार्डंस में विकेटों के पतझड़ के बीच भारत का पलड़ा भारी

कोलकाता, एजेंसी

ईडन गार्डंस का विकेट लगातार दूसरे दिन बल्लेबाजों के लिए कब्रगाह साबित हुआ। दिन भर में 16 विकेट गिरे जिसमें भारत ने दक्षिण अफ्रीका पर अपना पलड़ा भारी रखकर पहला टेस्ट मैच तीन दिन के अंदर जीतने की संभावना बढ़ा दी। लेकिन भारत को किसी मुगालते में नहीं रहना चाहिए, क्योंकि विकेट से स्पिनरों को मदद मिल रही है और इस पर 150 रनों का लक्ष्य चुनौती पूर्ण हो सकता है।

यह नहीं भूलना चाहिए कि भारतीय टीम पहली पारी में केवल 189 रन पर आउट हो गई और इस दौरान उसके बल्लेबाजों को साइमन हार्मर और केशव महाराज की स्पिन जोड़ी के सामने संघर्ष करना पड़ा। भारत ने पहली पारी में 30 रन की मामूली बढ़त हासिल की, लेकिन परिस्थितियों को देखकर यह महत्वपूर्ण साबित हो सकती है। भारत के लिए कप्तान शुभमन गिल का चोटिल होना चिंता का विषय है, क्योंकि पहली पारी में रिटायर्ड हर्ट होने के बाद वह दोबारा बल्लेबाजी करने के लिए नहीं उतरे। पहली पारी में 159 रन पर आउट होने वाले दक्षिण अफ्रीका ने शनिवार को दूसरे दिन का खेल समाप्त होने तक सात विकेट पर 93 रन बनाए हैं और वह भारत से 63 रन आगे है।

कप्तान तेम्बा बावुमा 78 गेंद पर 29 रन बनाकर एक छोर संभाले हुए हैं। उनके साथ दूसरे छोर पर खड़े कोर्बिन बॉश एक रन बनाया है। यहां दक्षिण अफ्रीका की दूसरी पारी की शुरुआत अच्छी नहीं रही और भारत के बाएं हाथ के कलाई के स्पिनर कुलदीप यादव ने चाय के विश्राम के समय अपनी चौथी गेंद पर रेयान रिकेल्टन (11) को आउट कर दिया।

चाय के विश्राम के बाद रवींद्र जडेजा की बलखाती गेंदों का जादू चला और उन्होंने लगातार चार विकेट लेकर दक्षिण अफ्रीका की बल्लेबाजी की कमर तोड़ दी। उन्होंने सलामी बल्लेबाज एडेन मार्करम (04) का विकेट लेने के बाद वियान मुल्डर (11), टोनी डि जार्जी (02) और ट्रिस्टन स्टब्स (05) को आउट करके दक्षिण अफ्रीका की वापसी की संभावनाओं को करारा झटका दिया।

जडेजा ने अब तक 29 रन देकर चार, कुलदीप यादव ने 12 रन देकर दो और अक्षर पटेल ने 30 रन देकर एक विकेट लिया है। भारत की पारी एक तरह से नौ विकेट पर समाप्त हुई क्योंकि कप्तान शुभमन गिल स्लॉग स्वीप के दौरान गर्दन में ऐंठन के कारण चोटिल हो गए और बल्लेबाजी के लिए वापस नहीं लौटे। हार्मर ने क्लब हाउस छोर से लगातार 14.2 ओवर गेंदबाजी करते हुए 30 रन देकर चार विकेट चटकाए, जिससे धीमी और खुरदरी पिचों पर रविचंद्रन अश्विन के प्रभाव की यादें ताजा हो गईं। उन्होंने भारत के बाएं हाथ के छह बल्लेबाजों को लगातार निशाना बनाया और उनमें से तीन बल्लेबाजों वाशिंगटन सुंदर (29), रवींद्र जडेजा (27) और अक्षर पटेल (16) को आउट किया। बल्लेबाज के रूप में उपयोगी योगदान देने के लिए मशहूर इन तीनों खिलाड़ियों ने अपना जज्बा दिखाया। वाशिंगटन ने 82 गेंदों का सामना किया, जबकि जडेजा और अक्षर ने 45-45 गेंदें खेलीं। इसके बावजूद हार्मर की गेंद को अंदर की ओर टर्न कराने की क्षमता निर्णायक साबित हुई। तेज गेंदबाज मार्को यानसन तीन विकेट लिए।

दक्षिण अफ्रीका के एडेन मार्करम का विकेट लेने के बाद साथियों के साथ जश्न मनाते रवींद्र जडेजा। एजेंसी

स्कोर बोर्ड

दक्षिण अफ्रीका (पहली पारी) 159 रन

भारत

189/10 (पहली पारी) (62.2 ओवर)

यशस्वी जयसवाल बो यानसन	12
राहुल का मारक्रम बो महाराज	39
वॉशिंगटन का मारक्रम बो हार्मर	29
शुभमन गिल रिटायर हार्ट	04
ऋषभ पंत का वेरेने बो बॉश	27
रविंद्र जड़ेजा पगबाधा हार्मर	27
ध्रुव जुरेल का एवं बो हार्मर	14
अक्षर पटेल का यानसन बो हार्मर	16
कुलदीप का वेरेने बो यानसन	01
मोहम्मद सिराज बो यानसन	01
जसप्रीत बुमराह नाबाद	01

गेंदबाजी : यानसन 15-4-35-3, मुल्डर 5-1-15-0, महाराज 16-1-66-1, बॉश 11-4-32-1, हार्मर 15.2-4-30-4

दक्षिण अफ्रीका

93/7 (दूसरी पारी) (35 ओवर)

रियान रिकेलटन पगबाधा कुलदीप	11
एडेन मारक्रम का जुरेल बो जडेजा	04
वियान मुल्डर का पंत बो जडेजा	11
तेम्बा बावुमा खेल रहे हैं	29
टोनी डि जोर्जी का जुरेल बो जडेजा	02
ट्रिस्टन स्टब्स बो जडेजा	05
काइल वेरेने बो अक्षर	09
मार्को यानसन का राहुल बो कुलदीप	13
कोर्बिन बॉश खेल रहे हैं	01

गेंदबाजी : बुमराह 6-1-14-0, अक्षर 11-0-30-1, कुलदीप 5-1-12-1, जडेजा 13-3-29-4

भारतीय गेंदबाजी कोच मोर्नी मोर्कल भी हैरान

कोलकाता। भारतीय गेंदबाजी कोच मोर्नी मोर्कल ने स्वीकार किया कि उनकी टीम इस बात से हैरान थी कि दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले टेस्ट मैच के दूसरे दिन पिच जरूरत से ज्यादा खुरदरी हो गयी। मैच के दूसरे दिन 16 विकेट गिर गए।

गर्दन में खिंचाव के बाद पैवेलियन लौटते कप्तान शुभमन गिल। एजेंसी

शुभमन गिल गर्दन में ऐंठन के कारण बाहर

कोलकाता, एजेंसी

- **स्वीप शॉट खेलते समय उभरी तकलीफ, सिर्फ तीन गेंदें खेल सके**

शुभमन गिल की गर्दन में ऐंठन है और बीसीसीआई की मेडिकल टीम उनकी निगरानी कर रही है। आज उनकी प्रगति को देखकर उनके आगे खेलने के बारे में फैसला किया जाएगा।

-बीसीसीआई

भारतीय कप्तान शुभमन गिल का दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले टेस्ट मैच में आगे खेल पाना अनिश्चित है क्योंकि दूसरे दिन शनिवार को यहां साइमन हार्मर की गेंद पर स्लॉग स्वीप करने के प्रयास में गर्दन में ऐंठन आने के बाद रिटायर्ड हर्ट हो गए।

गिल ने सिर्फ तीन गेंदें खेलीं, जिसके बाद चोट के कारण उन्हें मैदान से बाहर जाना पड़ा। उन्होंने चार रन बनाए। उन्होंने हार्मर को बैकवर्ड स्क्वायर लेग के ऊपर से चौका मारा, लेकिन इस दौरान उनकी गर्दन में ऐंठन हो गई। फिजियो तुरंत ही मैदान पर पहुंचे लेकिन इस स्टार बल्लेबाज को रिटायर्ड हर्ट होकर पवेलियन लौटना पड़ा। यह घटना ड्रिंक्स ब्रेक के बाद 35वें ओवर में घटी। लेकिन स्थिति और चिंताजनक हो गई जब उन्हें गर्दन में कॉलर बांधकर ले जाते हुए देखा गया, जिससे चोट की गंभीरता के बारे में और अधिक चिंता पैदा हो गई।

भारत के सहायक कोच मोर्नी मोर्कल ने कहा हमें पता करना होगा कि उसकी गर्दन में ऐंठन कैसे आई। शायद रात को ठीक से सो नहीं पाया। इसका कार्यभार से कोई लेना देना नहीं है।

गिल इस साल की शुरुआत में इंग्लैंड में टेस्ट सीरीज में कप्तानी के बाद से लगातार हर प्रारूप में खेल रहे हैं। शनिवार को आस्ट्रेलिया में सफेद गेंद की सीरीज खत्म होते ही वह यहां टीम से जुड़ गए और मंगलवार को पहले अभ्यास सत्र में भाग लिया। मोर्कल ने टाइमिंग को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए कहा गिल काफी फिट है और अपना बहुत ध्यान रखता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि सुबह उसकी गर्दन में ऐंठन आ गई। हमे उस समय उससे एक अच्छी साझेदारी की जरूरत थी। टाइमिंग खराब रही।

आईपीएल मिनी नीलामी में केकेआर और सीएसके के बीच मचेगी होड़

मुंबई, एजेंसी

कोलकाता नाइट राइडर्स और चेन्नई सुपर किंग्स के बीच 16 दिसंबर को अबु धाबी में होने वाली आईपीएल की मिनी नीलामी में खिलाड़ियों को लेकर होड़ लगने की उम्मीद है क्योंकि दस टीमों में से सबसे ज्यादा पैसा इन्हीं दोनों के पास बचा है।

केकेआर ने वेंकटेश अय्यर (23.75 करोड़ रूपये) और आंद्रे रसेल (12 करोड़) जैसे महंगे खिलाड़ियों को रिलीज कर दिया है जबकि चेन्नई सुपर किंग्स ने संजू सैमसन को खरीदने के बावजूद कई खिलाड़ियों को रिलीज करके 40 करोड़ रूपये बचा लिए हैं। केकेआर को नये सिरे से टीम बनानी होगी जबकि चेन्नई अपने गेंदबाजी आक्रमण को बेहतर करने की जुगत में होगी।

उसकी नजरें मथीषा पथिराना को वापिस लेने या बेन स्टोक्स को खरीदने पर भी लगी होगी बशर्ते वह एशेज के बाद उपलब्ध रहे। केकेआर ने क्विंटोन डिकॉक, मोईन अली और एनरिक नॉर्किया को भी रिलीज कर दिया है जबकि अजिंक्य रहाणे, मनीष पांडे, सुनील नारायण, वरूण चक्रवर्ती, रिंकू सिंह, हर्षित राणा और अंगकृष रघुवंशी को बरकरार रखा है।

केकेआर के पास 13 जगह खाली है जिनमें छह विदेशी खिलाड़ियों के लिये है। इससे पहले हरफनमौला रविंद्र जडेजा सीएसके से राजस्थान रॉयल्स में और विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन रॉयल्स से सीएसके में आ गए हैं। खिलाड़ियों को बरकरार रखने की मियाद रविवार तक की ही है।

आईपीएल की मीडिया विज्ञप्ति के अनुसार जडेजा 18 करोड़ से कम 14 करोड़ में रॉयल्स के पास गए हैं जबकि सैमसन मौजूदा फीस 18 करोड़ में ही सीएसके में आये हैं। इंग्लैंड के हरफनमौला सैम कुरेन भी दो करोड़ 40 लाख रुपये में सीएसके से रॉयल्स में चले गए हैं।

मिनी नीलामी आज

मिनी नीलामी से पहले टीमों के पास पर्स

सीएसके (43.40 करोड़ रुपये)
मुंबई इंडियंस (2.75 करोड़)
आरसीबी (16.40 करोड़)
केकेआ (64.30 करोड़)
हैदराबाद (25.50 करोड़)
गुजरात टाइटंस (12.90 करोड़)
राजस्थान (16.05 करोड़)
दिल्ली कैपिटल्स (21.80 करोड़)
एलएसजी (22.95 करोड़)
पंजाब किंग्स (11.50 करोड़)

लक्ष्य जापान मास्टर्स से बाहर

कुमामोतो (जापान)। स्टार भारतीय शटलर लक्ष्य सेन का 475,000 डॉलर इनामी कुमामोतो मास्टर्स जापान ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट में विजय अभियान शनिवार को यहां सेमीफाइनल में जापान के केंटा निशिमोतो से तीन गेम में हार के साथ खत्म हो गया।

सातवीं वरीयता प्राप्त सेन छठी वरीयता प्राप्त निशिमोतो से 77 मिनट तक चले मुकाबले में 19-21, 21-14, 12-21 से हार गए। सेन का अपने इस प्रतिद्वंदी के खिलाफ रिकॉर्ड अच्छा था लेकिन अंतिम गेम में गलतियों के कारण वह इसको बेहतर करने में नाकाम रहे। राष्ट्रमंडल खेलों के चैंपियन सेन ने शुरुआती गेम में मिली हार से उबरते हुए निर्णायक गेम तक का सफर तय किया, पर तीसरे गेम में वह पूरी तरह से लय में नहीं दिखे। यह मुकाबला दो बराबरी के खिलाड़ियों के बीच था पर जापानी खिलाड़ी ने दर्शकों के समर्थन के बीच धैर्य बनाए रखा और आखिर में फाइनल में जगह बनाने में सफल रहे।

क्रोएशिया ने आइलैंड्स को हराकर विश्व कप के लिए क्वालीफाई किया

लंदन, एजेंसी

क्रोएशिया ने शुक्रवार को फरो आइलैंड्स को 3-1 से हराकर अगले साल होने वाले फुटबॉल विश्व कप में जगह पक्की कर ली, जबकि नीदरलैंड पोलैंड के साथ ड्रॉ खेलकर क्वालीफिकेशन के करीब पहुंच गया। क्रोएशिया को विश्व कप में जगह बनाने के लिए इस मैच में जीत की दरकार थी, लेकिन उसकी शुरुआत अच्छी नहीं रही। फरो आइलैंड्स की तरफ से डेविड टूरी ने गोल किया।

क्रोएशिया ने हालांकि जल्द ही वापसी की। उसके लिए 23वें मिनट में जोस्को ग्वार्डिओल ने बराबरी का गोल दागा। दो साल बाद राष्ट्रीय टीम में वापसी करते हुए पेटार मूसा ने जोसिप स्टानिसिक की मदद से हाफटाइम के बाद क्रोएशिया को 2-1 से आगे कर दिया। उसकी तरफ से तीसरा गोल निकोला व्लासिक ने किया। नीदरलैंड ने वारसॉ में पिछड़ने के बाद वापसी की।

गोल करने का प्रयास करते क्रोएशिया और फरो आइलैंड्स के खिलाड़ी। एजेंसी

ऑस्ट्रेलिया में जन्मे विलियम्स को एएफसी क्वालीफायर के लिए भारतीय टीम में मिली जगह

नई दिल्ली : ऑस्ट्रेलिया में जन्मे फॉरवर्ड रयान विलियम्स को 18 नवंबर को ढाका में बांग्लादेश के खिलाफ होने वाले एएफसी एशियन कप सऊदी अरब 2027 क्वालीफायर के अंतिम दौर के ग्रुप सी मैच के लिए 23 सदस्यीय भारतीय फुटबॉल टीम में शामिल किया गया है। विलियम्स ने हाल ही में भारतीय नागरिकता हासिल की है। भारतीय टीम छह नवंबर से बेंगलुरु में अभ्यास कर रही थी। टीम शनिवार को ढाका के लिए रवाना हो गयी। फॉरवर्ड विलियम्स टीम के साथ बांग्लादेश गये है लेकिन मैच के दिन टीम में उनका शामिल होना फुटबॉल ऑस्ट्रेलिया से अनापत्ति प्रमाण पत्र और उसके बाद फीफा और एएफसी से अनुमोदन प्राप्त करने पर निर्भर है।

सेमीफाइनल में नाकामी के बाद उड़ गई थी रातों की नींद : शेफाली

मुंबई, एजेंसी

साक्षात्कार

आक्रामक सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा ने स्वीकार किया कि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सेमीफाइनल में प्रभाव छोड़ने में नाकाम रहने के बाद दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ आईसीसी महिला विश्व कप फाइनल से पहले उनकी रातें नींद के बिना और चिंता के साथ गुजरी थी। मुंबई में अंतिम चार के मैच से पहले चोटिल प्रतीका रावल की जगह लेने वाली शेफाली हाल ही में संपन्न महिला विश्व कप के सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया खिलाफ पांच गेंदों में 10 रन बनाकर आउट हो गईं।

उन्होंने हालांकि फाइनल में शानदार प्रदर्शन कर भारत को चैंपियन बनाने में अहम योगदान दिया। जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स द्वारा समर्थित शेफाली ने 'पीटीआई' से कहा जैसा कि मैंने पहले कहा, ऐसा नहीं है कि मैं विश्व कप में पहली बार सेमीफाइनल खेल रही थी। मैं पहले भी खेल चुकी हूं और मुझे दबाव को संभालने का अनुभव है। लेकिन मैं सेमीफाइनल (ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ) में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकी और केवल मैं ही जानती हूं कि फाइनल तक मैंने रातें कैसे बिताईं। शेफाली ने हालांकि फाइनल में 78 गेंदों में 87 रनों की पारी खेलने के बाद दो विकेट लेकर मैच का रुख पलट दिया। भारत ने दक्षिण अफ्रीका को 52 रनों से हराकर अपना पहला वनडे विश्व कप जीता। शेफाली ने कहा कि उनकी रणनीति अपने तरीके से बल्लेबाजी करने की थी। शेफाली ने कहा मुझे पता था कि टीम मुझसे क्या चाहती है। इसलिए फाइनल में मैंने चीजों को सरल रखा और अपनी रणनीति पर अमल करने के बारे में सोचा। यह अच्छा रहा और मैं टीम के लिए अच्छा प्रदर्शन करने में सफल रही। उन्होंने कहा मेरा ध्यान मैदानी शॉट खेलने पर था क्योंकि वह पिच हवाई शॉट खेलने की मुफीद नहीं थी।उन्होंने कहा ऐसा नहीं है कि मुझ पर कोई बोझ नहीं था क्योंकि मैं सेमीफाइनल के लिए टीम में शामिल हुई थी लेकिन मैं दबाव महसूस कर पा रही थी।

गौरव के पल विश्व कप फाइनल में नादिन डी क्लार्क का कैच लेते ही भारत ने जीत लिया था खिताब

आखिरी गेंद कम से कम 1000 बार देखी है : हरमनप्रीत

नई दिल्ली, एजेंसी

यह एक ऐसा पल है जिसने उनकी जिंदगी और भारतीय महिला क्रिकेट की दिशा को बदल दिया और इसलिए इसमें हैरानी की कोई बात नहीं है कि हरमनप्रीत कौर ने विश्व कप फाइनल में नादिन डी क्लार्क का यादगार कैच अब तक कम से कम 1000 बार देखा है।

कप्तान के इस कैच ने भारत को दक्षिण अफ्रीकी महिला टीम पर 52 रन से जीत दिलाकर ऐतिहासिक पहली विश्व कप ट्रॉफी दिलाई। इस 36 वर्षीय खिलाड़ी ने यहां पीटीआई मुख्यालय के दौरे के दौरान विशेष साक्षात्कार में कहा मेरी जिंदगी पूरी तरह बदल गई है। मैंने वह आखिरी गेंद कम से कम एक हजार बार देखी है। सिर्फ मैं ही नहीं, हमारी टीम भी कई वर्षों से इस पल का इंतजार कर रही थी। मुझे लगता है कि मैं उस पल को बार-बार जीना चाहती हूं।

उन्होंने कहा मुझे सच में नहीं पता कि आखिरी कैच लेते समय मैं क्या सोच रही थी। इसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है, यह मेरे लिए बहुत मायने रखता है क्योंकि मैं हमेशा से विश्व कप जीतने का सपना देखती थी और आखिरकार हमने वह कर दिखाया। अब दो सप्ताह हो गए हैं और यह बहुत ही खास एहसास है और इसे बयां करना मुश्किल है। भारतीय टीम ने वर्षों की कड़ी मेहनत के बाद विश्व कप जीता। इसके बाद हरमनप्रीत एक लंबे ब्रेक की हक़दार थीं। फ़ाइनल के बाद उन्हें घर वापस जाने का भी समय नहीं मिला है।

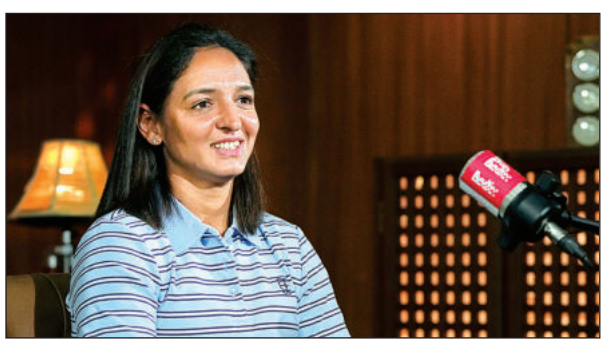

एक साक्षात्कार के दौरान हरमनप्रीत कौर। एजेंसी

पहली कमाई पर मुझे लगा जैसे मैं दुनिया की सबसे अमीर इंसान बन गई हूं

नई दिल्ली : विश्व कप विजेता भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर की आंखे उस समय खुशी से भर आईं जब उन्होंने 90,000 रुपये की अपनी पहली कमाई को याद किया। अपनी असाधारण यात्रा के बारे में बात करने के लिए पीटीआई मुख्यालय पहुंची हरमनप्रीत ने कहा कि पहली कमाई ने उन्हें दुनिया की 'सबसे अमीर इंसान' जैसा महसूस कराया था। उनके उतार-चढ़ाव भरे करियर का सबसे यादगार पल बेशक दो नवंबर को जीता गया विश्व कप है, लेकिन उस पल तक पहुंचने से पहले कई ऐसे पड़ाव आए जिन्होंने उनके आत्मविश्वास को और मजबूत किया, खासकर उनके पदार्पण मैच की तनख्वाह उस समय उनके लिए बहुत बड़ी राशि थी।

हरमनप्रीत से जब इस बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा उन दिनों हमारी टूर फीस एक लाख रुपये हुआ करती थी। हम चाहे जितने भी मैच खेलें, हमें उतनी ही रकम मिलती थी। टीडीएस के बाद यह लगभग 90,000 रुपये हो जाता था। हरमनप्रीत ने क्रिकेट खेलना शुरू करने के बाद भारतीय टीम की जर्सी पहनने का सपना संजोना शुरू कर दिया था और अपनी पहली कमाई को याद कर उनकी आंखों में खुशी के आंसू आ गये। उन्होंने कहा उस समय मुझे ऐसा लगा जैसे मैं दुनिया की सबसे अमीर इंसान हूं, क्योंकि यह मेरी पहली कमाई थी। इस 36 वर्षीय खिलाड़ी ने 2009 में वनडे और टी-20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण किया था, लेकिन टेस्ट टीम का हिस्सा 2014 में इंग्लैंड दौरे पर बनीं।